ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2020

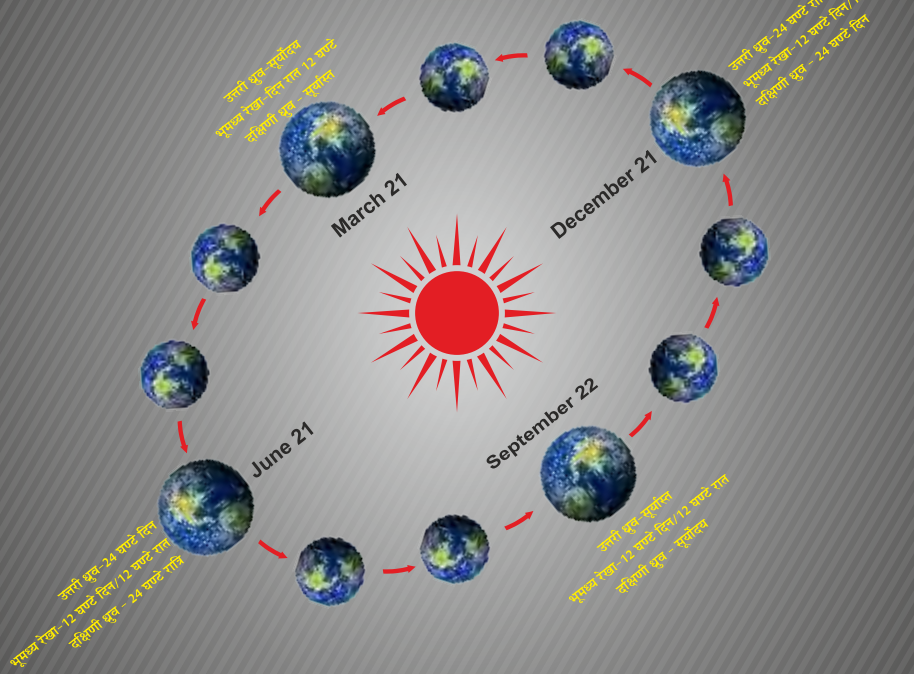

सूर्य के सापेक्ष पृथ्वी के गति से ऋतु परिवर्तन एवं भारत में प्रचलित कलेण्डर

शक सम्वत्, विक्रम सम्वत्, फसली सम्वत्, हिजरी, नानक शाही, बुद्ध, महावीर सम्वत् और ग्रेगेरियन कलेण्डर

2019 की कुछ झलकियाँ

मुख्य अतिथि डॉ. एस.पी. दीक्षित

कान्यकुब्ज रत्न डॉ. अमिता दुबे

कान्यकुब्ज रत्न ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्रा

जस्टिस डी.के. त्रिवेदी अध्यक्ष जी

डॉ. शुक्ला की रामकथा पुस्तक का विमोचन करते मा. राज्यपाल महोदय

कोषाध्यक्ष श्री ए.के. त्रिपाठी का सम्मान

हे अनाथ नाथ विश्वनाथ एक साथ आज,
सकुटुंब प्रेम से हमारे घर आइये।
संग सिंह,वृषभ,मयूर और मूषक के,
चंद्रमा की कोर, लटके भुजंग लाइए।।
जाइए सभी के मन–मानस में रम ऐसे,
राम संग काम सब जग के चलाइए।
कैसे शत्रु–मित्र सभी एक संग रहते हैं?
तालमेल का ये ढंग हमें भी सिखाइए।।

– डॉ. अमित अवस्थी
ला मार्टीनियर कॉलेज, लखनऊ

विषय सूची

1.	स्तुति	डा अमित अवस्थी	1
2.	अध्यक्षीय संदेश		3
3.	सम्पादकीय		5
4.	आवरण कथा–प्रचलित कलेंडर		6
5.	सामान्य से श्लोक का गूढ अर्थ	साभार व्हाट्स एप से	11
6.	दुनियादारी	विनीता मिश्रा	13
7.	योगेश्वर अदालत में	डा डी एस शुक्ला	14
8.	महायज्ञ	डा अमिता दुबे	21
9.	सलीबें	डा मंजु शुक्ला	25
10.	प्रबुद्ध वर्ग	डी एन दुबे	26
11.	गो माता	योगेन्द्र शर्मा	28
12.	हेड ट्रांसप्लांट	डा दुर्गा शंकर शुक्ला	32
13.	होली गीत		36
14.	कर्म और फल		37
15.	एक दूजे के लिए	डा कीर्ति अवस्थी	38
14.	Supreme Court Vindicates	सम्पादक 'वाणी'	44
15.	कीर्ति सदैव कुवाँरी ही रहती है...	रामजी मिश्रा	45
16.	कोरोना वाइरस		46
17.	साइकिल पाने वाली छात्राएं		47
18.	सहयोग जिसके लिए हम आभारी हैं		48
19.	मंच पर पारितोषिक पाने वाली छात्राएं		49
20.	कार्यकारिणी		51
21.	आभा मंडल		52
22.	साहित्य में समकालीनता और शाश्वतता	डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित	56
23.	मिशन मंगल	इ. कालीशंकर शुक्ला	62
24.	क्षय रोग : लक्षण और बचाव		68
25.	बापू के बन्दर	डा एस के अवस्थी	75
26.	बजरंगी डरेबर	डा एस के अवस्थी	76
27.	भरोसेमंद दोस्त एंटी आक्सीडेंट		77
28.	गीत	डॉ. ए.के. बाजपेयी	79
28.	श्रद्धांजलि		80
29.	मैं! आपका कान		82

सन्देश

अखिल भारतीय कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी के पुनर्गठन के कारण 'अखिल भारतीय कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा' इस वर्ष संक्रमण काल से गुजर रही है। नई कार्यकारिणी को इस वर्ष 'होली मिलन' आयोजन के लिए तमाम प्रारम्भिक कठिनाइयों गुजरना पड़ा। फिर भी मैं आशा करता हूँ कि यह आयोजन हमेशा की भाँति रोचक होगा और सदस्यों को आपस में जोड़ने में सहायक होगा।

'कान्यकुब्ज वाणी' का नवीतम अंक मनोरंजक और सम–सामयिक विषयों पर लेख के साथ प्रकाशित होने जा रहा है। हर्ष का विषय है कि 'जुडने और जोड़ने' के उद्देश्य से प्रकाशित होने वाली 'कान्यकुब्ज–वाणी' पत्रिका की सदस्यता संख्या 100 के आंकड़े तक पहुँच गई। यह संख्या सिद्ध करती है कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रही और सदस्यों के बीच लोकप्रिय है।

इस प्रयास के लिए पत्रिका का संपादक मण्डल साधुवाद का पात्र है।

होली व नव–संवत्सर की शुभ–कामनाओ के साथ।

मो. 9415152086

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी

6/168, विनीत खंड, गोमती नगर

लखनऊ-226016

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322, 0522–6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

सम्पादकीय

पिछला वर्ष ब्राह्मण समुदाय समाज के लिए विशेष रूप से क्षतिकारक रहा। कान्यकुब्ज सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पं. जितेंद्र कुमार त्रिपाठी जी, पं. वी एन तिवारी (पूर्व आई ए एस अधिकारी) तथा श्रीमती पी.के. मिश्र विख्यात बाल रोग विशेषज्ञ, पूर्व प्रधानाचार्य किंगजार्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ का अचानक निधन हो गया।

जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी जी जिला स्तर के वरिष्ठ अधिकारी रहे हैं। यह जीवन भर संस्कृत भाषा के लिए कार्य करते रहे। उनके अथक प्रयासों से लखनऊ में अखिल भारतीय संस्कृत परिसर की स्थापना हुई। यह संस्थान संस्कृत भाषा प्रेमियों, छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए विशिष्ट है। त्रिपाठी जी अंतिम समय तक हमारी सभा का मार्गदर्शन करते रहे।

वहीं ब्राह्मण समाज के सबसे द्युतिमान सितारों में से एक, भारत सरकार के रक्षा और वित्त–मंत्री रहे अरुण जेटली जी का भी लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। वाणी संपादक मण्डल और समस्त कान्यकुब्ज सभा इन महापुरुषों की स्मृति को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि के साथ नमन करती है।

हर्ष का विषय है कि कान्यकुब्ज–वाणी आभामंडल के सदस्यों की संख्या ने शतक के अंक को प्राप्त कर लिया है। इन सदस्यों से प्राप्त सदस्यता–शुल्क राशि एफ० डी० के रूप में, इस प्रयोजन से बैंक जमा में है, कि भविष्य में इस राशि के ब्याज से ही वाणी का प्रकाशन किया जा सके। और यदि भविष्य में अर्थाभाव अथवा किसी अन्य कारण से कान्यकुब्ज–वाणी का प्रकाशन संभव नहीं हो सका, तब यह राशि सदस्यों को वापस कर दी जाएगी। अतः अनुरोध है कि सदस्य गण अपना मोबाइल नंबर और पता अपडेट कराते रहें।

इस अंक में श्री आर सी त्रिपाठी द्वारा भारत में प्रचलित कलेंडरों व उनके वैज्ञानिक आधार पर पांडित्यपूर्ण लेख को आवरण कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अन्तरिक्ष विज्ञान से 'आर्बिटल मिशन' और चिकित्सा क्षेत्र से संबंधित ज्ञानेंद्रिय 'कान' तथा, कहानी के माध्यम से 'हेड–ट्रांसप्लांट' के बारे में जानकारी दी गई है। इन श्रंखलाओं को आगे भी चालू रखने का प्रयास रहेगा।

कान्यकुब्ज, सभा के उपाध्यक्ष श्री पी एन मिश्रा और महासचिव श्री उपेंद्र मिश्रा ने कार्यकारिणी में दूसरी पंक्ति के कार्यकर्ताओं तैयार करने के उद्देश्य से पद छोड़ने का निश्चय किया है। हम आशा करते हैं करते हैं कि नवगठित कार्यकारिणी इन बड़ों के पग–चिह्नों का अनुसरण कर सभा के दायित्वों का भली–भाँति निर्वहन करेगी।

ऐसी सदिच्छा के साथ वाणी का 2020 का अंक पाठकों को समर्पित।

सम्पादक
(डॉ0 डी0एस0 शुक्ला)
18/378 इन्दिरा नगर, लखनऊ–226016
ईमेल–dsumeshdp@rediffmail.com
मो0 : 9415469561, 7007429802

आवरण कथा
भारत में प्रचलित कैलेंडर

– रमेश चंद्र त्रिपाठी, आई ए एस (रिटा)

मनुष्य आदिकाल से सूर्य, चंद्रमा, तारामंडल और आकाश के नक्षत्रों और उल्कापिंडों के प्रति उत्सुक रहा है। वह समय के जानने का प्रयास करता रहा है। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार पाषाणकालीन गुफाओं में सीधी–वक्र रेखाएँ कदाचित समय की गणना को प्रकट करती हैं। विभिन्न समय पर विभिन्न संस्कृतियों में कई प्रकार की समय की गणना होती रही है और काल की धारा का भी विचार कभी सीधी रेखा में, और कभी चक्र–वत कभी दसों दिशाओं में होता रहा है। काल की गति का भी अनुमान घटनाओं के अनुसार वैज्ञानिक सापेक्ष मानते हैं। वैज्ञानिक आइंस्टीन के अनुसार कभी कुछ क्षण भारी और बहुत लगते हैं और कभी पता नहीं लगता कि समय कैसे बीत गया।

सूर्य, चंद्र और तारामंडल की गतियाँ मनुष्य को प्रभावित करती रहीं। मानव जाति ने जाना कि सूर्य, चंद्रमा और तारामंडल की गतिविधियाँ उसके जीवन पर प्रभाव डालती हैं। वनस्पतियों, फल–फूल का चक्र सूर्य की गति और प्रकाश से संबन्धित रहा है। मनुष्य ने पहचाना होगा कि चन्द्रमा एक अवधि में घटता–बढ़ता है और धीमे–धीमे उसने चांद्रमास को पहचाना होगा। और सूर्य से फसलों का यह काल चक्र का निर्धारण हुआ। इनकी गति पहचानने के मनुष्य ने गणना के तरीके अपनी मेधा से निकाले और लगभग 360 दिन के एक वर्ष का अनुमान लगाया। वास्तव में सूर्य गणना में यह समय 365.2421955 दिवस है। इस अवधि को माह, सप्ताह और दिन की अवधि में करना एक बड़ा प्रश्न है। दिन भी घटते–बढ़ते हैं। चंद्रमा के आधार पर माह भी 30 दिन से कम का है। इसलिए सामान्य मास (जिसे सावन मास भी कहते है) 30 दिन का माना जाता है और सूर्य–पथ की बारह राशियों के आधार पर द्वादश आदित्य या मास माने जाते हैं। लेकिन यह सब गणना आसान नहीं है और खगोल शास्त्र आधारित होने के कारण आकर्षक भी।

कलेंडर का उद्‌गम स्थान अधिकांश विद्वान बेबीलोन और मिस्र की सभ्यताओं को मानते हैं। इनके वर्ष सूर्य की गति पर आधारित रहे हैं। सरस्वती–सिंधु घाटी सभ्यता का संबंध बेबीलोन सभ्यता से रहा है और यह सभ्यताएं समकालीन प्रतीत होती हैं। पाश्चात्य विद्वान भारतीय संवत्सर का विकास, बाद का मानते हैं। भारतीय पंचांगों में अनेक संवत्सर मिलते हैं। जैसे सृष्टि संवत्सर, सप्तर्षि संवत्सर, विक्रमी संवत्सर, बुद्ध संवत्सर, श्री महावीर

संवत्सर, फसली, खालसा, नानकशाही संवत्सर। हिजरी और ईसाई संवत भी भारत में प्रचलित हैं। भारतीय वार्षिक गणना के संवत्सर, सृष्टि संवत्सर के अंतर्गत आते हैं। जैसे वर्तमान विक्रम संवत्सर 2076 सृष्टि–संवत 195,58,85,120के अंतर्गत है और शक (शालिवाहन)1941–42 भी। नानकशाही संवत भी इसी इसी का भाग रहा है और अब कुछ लोग सूर्याधारित गणना के अनुसार इसे ईसाई कलेंडर के अनुसार भी मानने लगे हैं।

भारतीय संवत्सर चांद्रमास और सौर मास दोनों की गति और गणना पर आधारित है। कुछ विद्वानों ने कहा है कि भारतीयों ने खगोल गणना ग्रीस आदि से सीखी। इसमे सत्य भी है। भारतीय ग्रंथ पाश्चात्य विद्वानों का ऋण मानते हैं। डाक्टर मेघनाथ साहा जो भारतीय कलेंडर निर्धारण समिति के अध्यक्ष थे, ने, कहा है कि सिकंदर के काल में ग्रीस के पास भारत को सिखाने के लिए कुछ भी नहीं था। सेल्यूकस 312 बी सी में बेबीलोन पर सिकंदर की विजय के साथ निरंतर गणना के लिए सिकंदर के काल की स्थापना की घोषणा की थी। बाद में ऐसी गणनाएँ भारतीय इतिहास में शक और अशोक के शिलालेखों में मिलती है, जब राज्यारोहण के वर्ष से गणना की गई है। मिस्र और मेसोपोटामिया के कलेंडर अधिक प्राचीन है।

भारतीय संवत्सर की शुरुआत सृष्टि–संवत और बसंत–विषुव (Vernal Equinox) से की गई है। यह 20 या 21 मार्च को पड़ती है, जब सूर्य ब्रह्मांड के मध्य रेखा को उत्तरीय गोलार्ध को काटता है और 22/23 सितंबर को शरत्काल विषुव को दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। सूर्य की गति को चित्रा पक्षीय नक्षत्र की निरयन गणना से संवत्सर का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है और इसी संवत्सर में श्री राम, श्री कृष्ण, श्री बुद्ध, श्री महावीर, गुरु नानक आदि के समय काल की गणना की है। भारत के अधिकांश भाग में यह संवत्सर सौर–चंद्र मास का सम्मिश्रण रहता है और इसकी समयाविधि हर तीसरे वर्ष एक अधिक मास (पुरुषोत्तम मास/मलमास) से सुसंस्कृत कर ली जाती है। विक्रम संवत 2077 में अधिक मास आश्विन माह में आयेगा जो सितंबर 18 से अक्तूबर 16 2020 तक होगा।

भारत में हिजरी सन् भी प्रयुक्त होता है। हिजरी की गणना 622 ई में मुहर्रम यकम (पहली) तारीख से होती है। यह इस्लाम का कलेंडर है और चांद्र मास पर आधारित है। इसमे सूर्य से संस्कृत करने का विधान नहीं है। यह हिजरी सन् लगभग 10 दिन प्रतिवर्ष पिछड़ता जाता है। इस कारण इस्लामी पर्व कालांतर में किसी भी ऋतु में या फसल पर होते रहते हैं।

ईसाई सन् की कथा आकर्षक है। यह हजरत ईसा मसीह के काल से प्रारम्भ माना जाता है। यथार्थ में इसका कोई संबन्ध प्रारम्भ में ईसा मसीह से नहीं था। लगभग 500 ई० के आस–पास इटली और अन्य देशों में AD (Anno Domini अर्थात in the year of Lord Jesus) प्रारम्भ हुआ, और इस कलेंडर का जन्म से माना जाने लगा। अब शायद ईसा के जन्म की तिथि कुछ लोग 4 ईसा पूर्व की मानते हैं।

ईसवी सन् के प्रयोग के पहले यूरोप में रोमन साम्राज्य के अंतर्गत दस माह का वर्ष माना जाता था जो बसंत से 1 मार्च की तिथि से शुरू होता था। यह गणना शीत कालीन अयनांत शुरू होता था। यह गणना शीत कालीन अयनांत 25 दिसंबर से 1 मार्च तक की अवधि (61 दिन) मुक्ति या उत्सव के दिन माने जाते थे, और इनकी कोई गणना न होने से रोमन वर्ष 304 दिन का होता था। जूलियस सीजर ने मिस्र को जीता और उसके संज्ञान में मिस्र का सन् संवत आया। जूलियस सीजर ने रोम के कलेंडर में संशोधन किए। चूंकि रोम सन् में काफी दिनों की विसंगति चल रही थी, अतः जूलियस सीजर ने एक वर्ष (46 बीसी) में 67 दिन जोड़ दिये और वह भ्रांति का वर्ष रहा। सितंबर, अक्तूबर, नवंबर, दिसंबर पूर्ववत सातवें आठवें, नवें और दसवें माह रहे। पहले का पाँचवाँ माह जूलियस सीजर के नाम पर जुलाई और उसके उत्तराधिकारी अगस्त आक्तेवीयस के नाम पर अगस्त रखा। दोनों महीनों में 31/31 दिन रखे गए। इस कलेंडर का का नाम जूलियस सीजर के नाम पर 'जूलियन कलेंडर' हुआ। जूलियस सीजर वर्ष का प्रारम्भ 25 दिसंबर (Winter Solstice) से रखना चाह रहा था। लेकिन रोमन जनता 6 दिन बाद होने वाले शुक्ल पक्ष के नए चाँद से करना चाहती थी जो 01 जनवरी हुई। जूलियस सीजर के समय न ईसा मसीह का जन्म हुआ था न ईस्वी सन् का प्रारम्भ। बाद में एडी 500 में निर्णय हुआ कि ईसा मसीह का जन्म 25 दिसंबर को हुआ था और यह दिन क्रिसमस कहलाया।

वर्ष 1582 में पोप ग्रेगरी xiii ने देखा कि जूलियन सन् winter solstice से लगभग 10 दिन पीछे हो गया था। जूलियन सन् में 365.25 दिन होते थे जबकि वास्तविकता संख्या 365.2422 की थी। अतः पोप ने 1582 के आदेश से शुक्रवार, 5, अक्तूबर 1582 को शुक्रवार 15, अक्तूबर घोषित कर दिया। शताब्दी वर्ष जो 400 से विभाज्य हैं उन्हें लीप ईयर (leap year) वर्ष बता दिया। ब्रिटेन ने इसे 1752 में स्वीकार किया, तब तक 11 दिन हो चुके थे। रूस और तुर्की ने इसे क्रमशः 1918 और 1924 में स्वीकार किया। अब यह ग्रेगेरियन कलेंडर कहलाता है।

भारतीय संवत सृष्टि का प्रारम्भ माना जाता है। भारत में इसी में विक्रम संवत, जो ईसा पूर्व 58 से माना जाता है, आता है। हम उल्लेख कर चुके हैं कि भारतीय विक्रम संवत् सूर्य और चंद्रमा दोनों पर निर्भर है। पर्व, त्योहार, अधिकांशतः चांद्रमास के अनुसार होते हैं, लेकिन संक्रांति प्रतिमाह सौर मास के अनुसार सूर्य की गति के आधार पर विभिन्न राशियों के संक्रमण से प्रारम्भ होती है। मेघनाथ साहा ने कहा "'सूर्य–सिद्धान्त' ग्रंथ पूर्णतः सूर्याधारित गणना पर बनाया गया है। इसमे चांद्रमास दरवाजे के कब्जे की तरह हैं"।

वैदिक युग से संवत्सर का प्रयोग हो रहा है। इसमे उपयुक्त ऋतुओं में पर्व और त्योहार हों और मनाए जाएँ और इनका निर्धारण सूर्य और ऋतु और दिन चंद्रमा के अनुसार हों। हिंदुओं के पंचांग में पाँच अंग होते हैं और प्रतिदिन के लिए पाँच खगोलीय सिद्धान्त दिये जाते हैंरू–

1– वार– दिन का नाम– जैसे रविवार, सोमवार आदि

2– तिथि– चंद्रमा की औसत 12 डिग्री दूरी पर–प्रतिपदा, द्वितीय आदि

3– करण– तिथि का अर्धांश– बव, बालव, आदि

4– नक्षत्र– जिसमे चंद्रमा स्थित है– अश्विनी, भरणी आदि

5– योग– समय जिसमे सूर्य और चंद्रमा 13 डिग्री 20 मिनट की दूरी तय करते हैं– विशकुंभ, प्रीति आयुष्मान आदि।

भारतीय संवत्सर में प्रत्येक स्थान से गणना का विधान है। ग्रीनविच मीन टाइम (GMT) की तरह प्राचीन काल में उज्जैन का उपयोग हुआ क्योंकि इस स्थान पर कर्क रेखा और 75 अक्षांश एक दूसरे को समकोण पर काटते हैं और उज्जैयिनी "महाकाल की नगरी" बनी। चूंकि ब्रह्मांड में सभी गतिमान हैं, प्रत्येक स्थान के लिए गणना (इष्ट काल)का विचार और सुझाव रहा है। इसलिए एक स्थान की तिथि कदाचित किसी समय दूसरे स्थान से भिन्न हो सकती हैं। अतः गणनाएँ निरंतर हैं और अंतिम कहना उचित नहीं होगा। जैसे मकर संक्रांति 72 वर्षो के अंतराल में एक दिन आगे हो जाती है। 2008 से 2080 तक यह 15 जनवरी को होगी और फिर 16 जनवरी को। यह अयन चलन के कारण होता है। नक्षत्रों के आधार पर निरयण वर्ष की गणना करते हैं लेकिन प्रत्युयक्ष गतिमान होने के कारण वसंत विषुव प्रति वर्ष चलित य इसे सायन कहते हैं। यह पृथ्वी की अपनी धुरी पर अग्रगमन (precession) के कारण होता है। अभी यह धुरी पोलारिस (polaris) नक्षत्र की ओर है। लगभग 13000 वर्षों में यह नक्षत्र वेगा की ओर होगी।

भारत में विक्रम संवत्सर उपयोग में है। इसके साथ साथ भारतवर्ष में शक शालिवाहन वर्ष भी उपयोग में है। यह सौर सिद्धान्त और सूर्य आधारित है। भारत के अतिरिक्त यह संवत नेपाल, जावा, बाली आदि में भी उपयोग किया जाता है। वर्ष 1952 में डा मेघनाथ साहा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कलेंडर समिति बनाई गई थी। समिति ने सौर सिद्धान्त के आधार पर शक–शालिवाहन संवत की गणना संस्तुत की, जो स्वीकार की गई और 1 चैत्र, 1879 शक संवत तदनुसार 22 मार्च 1957 से उपयोग में लाई गई। इसमे प्रत्येक माह में दिनों की संख्या निर्धारित है। माह के नाम चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, आदि विक्रम संवत की भांति ही हैं। चैत्र में 30 या 31 दिन होते हैं। बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रवण भाद्रपद, प्रत्येक में 31 दिन होते हैं। और आश्विन, कार्तिक, अग्रहायण, पौष, माघ, और फाल्गुन में 30 दिन होते हैं। चैत्र में समान्यतया 30 दिन ही होते हैं। लीप ईयर वर्ष में चैत्र में 31 दिन होंगे। यदि शक संवत 4 से विभाजित हो किया जाय और 2 शेष रहे, तो भारतीय राष्ट्रीय (शक) संवत में चैत्र 31 का होगा, जैसा कि लीप ईयर में प्रावधान है, और वर्ष 21 मार्च से प्रारम्भ होगा।

फारस (ईरान) में सौर वर्ष का उपयोग डेरियस प्रथम के समय से 6 शताब्दी ईसा पूर्व से होता था। इस्लाम कि विजय के बाद ईरान में हिजरी (चंद्र मास) प्रारम्भ हुआ। भारत में हिजरी के साथ मुगल सम्राट अकबर ने 963 हिजरी में फसली सन् शुरू किया था। इसमे बारह माह होते हैं। पर यह 1556 AD या 1612 संवत के अनुरूप हुआ। यह जुलाई से जून तक चलता है। हिजरी सन् की भाँति इसमे हर तीसरे वर्ष एक अधिक माह के वेतन का प्रश्न नही आता। माल (रेविन्यू) के मामले में यह फसली वर्ष भारतवर्ष के कई प्रांतो में प्रयोग किया जाता है। यह उत्तर प्रदेश रेवेन्यू विभाग में भी लागू है। औरंगजेब ने हिजरी का उपयोग अपने शासन में किया और हर तीसरे वर्ष एक अधिक माह के वेतन का व्ययभार सामने आया।

वर्ष की गणना सतत कार्यक्रम है। कोई भी कलेंडर अपने में पूर्ण रूप से पर्याप्त नहीं है। भारतीय संवत्सर सौर–चंद्र गणना के आधार पर, पर्व और त्योहार और शुभ कार्यों के लिए सतत उपयोगी है। आज भारत सरकार मुख्य रूप से ग्रेगेरियन कलेंडर तदनुसार शक संवत प्रयोग कर रही है। गणितज्ञ और खगोल–शास्त्री इस पर समय समय पर ध्यान देते रहते हैं।

लेखक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और महा सचिव राज्य सभा रहे हैं। यह दक्ष पुरातत्वविद और ज्योतिषाचार्य हैं।

सामान्य से श्लोक का गूढ़तम भावार्थ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देवदेव।।

सरल–सा अर्थ है, ''हे भगवान! तुम ही माता हो, तुम ही पिता, तुम ही बंधु, तुम ही सखा हो। तुम ही विद्या हो, तुम ही द्रव्य, तुम ही सब कुछ हो। मेरे देवता हो।''

यह रचना बचपन से प्रायः सबने पढ़ी है। छोटी और सरल है इसलिए रटा दी गई है। बस त्वमेव माता भर बोल दो, सामने वाला तोते की तरह पूरा श्लोक सुना देता है।

मैंने 'अपने रटे हुए' कम से कम 50 मित्रों से पूछा होगा, 'द्रविणम्' का क्या अर्थ है?' संयोग देखिए एक भी न बता पाया। अच्छे खासे पढ़े–लिखे भी। एक ही शब्द 'द्रविणम्' पर सोच में पड़ गए।

द्रविणं पर चकराते हैं और अर्थ जानकर चौंक पड़ते हैं। 'द्रविणम्'– जिसका अर्थ है द्रव्य, धन–संपत्ति।' द्रव्य जो तरल है, निरंतर प्रवाहमान। यानी वह जो कभी स्थिर नहीं रहता। आखिर 'लक्ष्मी' भी कहीं टिकती है क्या!

कितनी सुंदर प्रार्थना है और उतना ही प्रेरक उसका 'वरीयता क्रम'। जरा देखिए तो! समझिए तो!

सबसे पहले माता क्योंकि वह है तो फिर संसार में किसी की जरूरत ही नहीं। इसलिए हे प्रभु! तुम माता हो!

फिर पिता, अतः हे ईश्वर! तुम पिता हो! दोनों नहीं हैं तो फिर भाई ही काम आएंगे। इसलिए तीसरे क्रम पर भगवान से भाई का रिश्ता जोड़ा है।

जिसकी न माता रही, न पिता, न भाई तब सखा काम आ सकते हैं, अतः सखा त्वमेव!

वे भी नहीं तो आपकी विद्या ही काम आना है। यदि जीवन के संघर्ष में नियति ने आपको निपट अकेला छोड़ दिया है तब आपका ज्ञान ही आपका भगवान बन सकेगा। यही इसका संकेत है।

और सबसे अंत में 'द्रविणम्' अर्थात धन। जब कोई पास न हो तब हे देवता तुम्हीं धन हो।

रह–रहकर सोचता हूँ कि प्रार्थनाकार के वरीयता क्रम में जो धन–द्रविणम् सबसे पीछे है, हमारे आचरण में सबसे ऊपर क्यों आ जाता है? इतना कि उसे ऊपर लाने के लिए माता से पिता तक, बंधु से सखा तक सब नीचे चले जाते हैं, पीछे छूट जाते हैं।

वह कीमती है, पर उससे ज्यादा कीमती और भी हैं। उससे बहुत ऊँचे आपके अपने।

अनगिनत प्यारी से प्यारी प्रार्थनाओं में न जाने क्यों अनजाने ही एक अद्‌भुत वरीयता क्रम दर्शाती यह प्रार्थना मुझे जीवन के सूत्र और रिश्तों के मर्म सिखाती रहती है।

'बार–बार ख्याल आता है, द्रविणं सबसे पीछे बाकी रिश्ते ऊपर। बाकी लगातार ऊपर से ऊपर, धन क्रमशः नीचे से नीचे!'

जब गुरुजनों से जाना इस 'अनूठी प्रार्थना' का यह पारिवारिक 'पक्ष' और 'द्रविणम्' की औकात पर मित्रों से सत्संग होता है, एक बात कहना नहीं भूलता!

'याद रखिये दुनिया में झगड़ा रोटी का नहीं थाली का है! वरना वह रोटी तो सबको देता ही है!'

'चाँदी की थाली यदि कभी आपके वरीयता क्रम को पलटने लगे, तो इस प्रार्थना को जरूर याद कर लीजिये।'

हमेशा ख्याल रहे कि क्रम माता च पिता, बंधु च सखा है।

क्लास में टीचर ने पूछा : दुनिया में प्रेम की निशानी किस जगह को कहा जाता है?

पूरी क्लास एक आवाज में चिल्लाई : 'ताजमहल'

सिर्फ एक स्टूडेंट बोला : 'रामसेतु'

टीचर ने उसे खड़ा किया, पूछा, 'कहना क्या चाहते हो?'

वो स्टूडेंट खड़ा होकर बोला, रामसेतु प्रभु श्रीराम ने अपने पत्नी को वापिस लाने के लिए बनाया, किसी दूसरे की जमीन को हथिया कर नहीं।

और सेतु का निर्माण करने वालों को प्रभु श्रीराम ने पूरा सम्मान दिया न कि उनके हाथ काटे।

टीचर और स्टूडेंट स्तब्ध हो गए।

हमें हमारे इतिहास और पुराण कथाओं की ओर नये दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है।

दुनियादारी

जउने आवे जारि के जाए
हमका ठ्वाकर मारि के जाए।
हमका लाग कि ध्वाखा होई गा
यह तो दुनियादारी आए।।

ऐसा रोगु लाग है जिउ का
कोनो वैद्य समझि न पाए।
नीमी पेपरी सबै हैं घोटी
पीर जिया के निकसि न पाए।।

बैद साँवरिया दूर बसा है
कईसे उन तक पाती जाए
डकियो का तो गवा जमाना
दई के घूस दैत पठवाय।।

एकु मंत्र वह हम का दयि के
आपन हाथ लिहिस छुड़वाए।
रामु बताके रामै हुई गा
हमका भरत दिहिस करवाए।।

चौदह का बनवास जो होत्यो
कोनो बिधि हम काटित जाए
चौदह भुवन मा कईसे ढूँढी
कोऊ कोठारिया देव बताए।।

मन का राम मने मा मिली है
यह तो हमहू जानीति आए।
दरस को अखियाँ तरस गई अब
गति करमन के आगे आए।।

छाँडि चलेन है जग का अब तो
काँधे चार चढ़ेन हैं जाए।
जारि फूंक के सब घर जैहई
कोउ पलटि न पाछे आए।।

फोरि खोपरिया किरिया करेंहैं
एहका मुक्ति दिहै बताएँ ।
मूड़ मुड़ाय के छुट्टी पइहै
करिहैं तेरही पूरी खाए।।

विनीता मिश्रा, रायबरेली

योगेश्वर अदालत में

आज अदालत दर्शकों और श्रोताओं से खचाखच भरी थी। क्यों न हो आज योगेश्वर कृष्ण पर धोखाधड़ी से भोली भाली जनता को फुसला कर अपनी पूजा करवाने का आरोप था। कुछ कृष्ण के दर्शन हेतु पधारे, तो कुछ श्रद्धालु तो चंदन अक्षत लेकर विधिवत् पूजा अर्चना के मूड में आए थे। परंतु अदालत तो अदालत है। वहाँ यह सब कैसे चल सकता है। अतः अदालत में घुसने के पहले ही सारी पूजा सामग्री जमा करा ली गई थी। अदालत नास्तिकों, आस्तिकों, तमाशाइयों और वकीलों से खचाखच भरी थी। योगेश्वर के पेशी के आने पर जबरदस्त भीड़ का अनुमान लगने पर प्रशासन ने सुदृढ़ सुरक्षा का प्रबंध कर रखा था। पेशी के एक दिन पहले ही अदालत का परिसर छावनी में बदल गया था। जिन सुरक्षाकर्मियों की तैनाती अदालत में हुई, वह अपने को भाग्यवान् मान रहे थे। जिनकी ड्यूटी नहीं लगी थी वह सुरक्षाकर्मी भी अपने विभाग से कैजुअल, अर्न, मर्सी अथवा फ्रेंच लीव लेकर अदालत में कृष्ण के दर्शन के लिए जम गए थे। सच है—पाप धोने की सबसे ज्यादा आवश्यकता पुलिस वालों को ही होती है।

सरकारी वकील के परिवारी जन, यहाँ तक कि जज साहब की माँ, बुआ और दूर की नानी भी कन्हैया के दर्शन करने की जिद कर रही थीं। नानी ने कहा "भईया हम तुमई कुर्सी के पीछे ते हे झाँक के दर्शन कई लेब। सच्ची कोऊ जानै न पाई"।

मगर जज साहब की चश्मे से घूरती निगाहों ने नानी को चुप करा दिया। नानी बेचारी पोपले मुँह से राम राम करने लगीं।

वैसे कृष्ण दर्शन का मन तो जज्जाइन का भी था, पर क्या करें? जज साहब के शक्की मिजाज का डर था। न जाने क्या बोल बैठें। जज साहब तो जज्जाइन को किसी भले शरीफ आदमी से घुल मिल कर बतलाते देख आग बबूला हो जाते। दो तीन दिन तक मुँह फुलाने के अलावा बात बात पर डाँटते रहते। फिर...कृष्ण की तो रंगीनमिजाजी और रसियापन के किस्सों से अनगिनत शास्त्र और पोथियाँ भरीं थीं। ऐसे में जज्जाइन जानती थी कि उनका कृष्ण को देखने की चाहत उजागर करना ज्वालामुखी भड़काने के समान होगा। क्या पता जज्जाइन का कृष्ण में इण्ट्रेस्ट देख जज साहब ईर्ष्या में कृष्ण को रकीब मानते हुए, लंबी सजा न दे डालें। ऐसे में जज्जाइन का मसट्टी मार कर बैठने का फैसला विवेकपूर्ण ही कहा जाएगा। रोमांटिक मसलों में शादीशुदा महिलायें बहुत ही डिस्क्रीट होती हैं—

खैर इन प्रपंचों को छोड़ मूल कथा पर आते हैं—

अदालत में जज साहब ठीक समय से आकर पीठासीन हो गए। आरोपित को प्रस्तुत करने का आदेश हुआ। थोड़ी ही देर में एक कृष्ण वर्ण के,

अधेड़ और वृद्धावस्था के बीच दिखने वाले विशाल आकृति के भव्य पुरुष का आगमन होता है।

आगंतुक की लंबाई लगभग सात फुट से तो ऊपर ही होगी। इसके साथ ही उसके सुदृढ़ मांसपेशियाँ उसके अतीव बलशाली होने की गवाही दे रहे थे। वह पीले रंग की धोती पहने था और पीले रंग का ही उत्तरीय कंधे पर ओढ़ रखा था। उसका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि अदालत में सभी लोग उठकर खड़े हो गए। सब लोग एक साथ एक दूसरे से बतियाने लगे। अदालत में अशांति फैल गई। जज साहब ने मेज पर हथौड़ा पटक कर 'आर्डर' हेतु आदेशित किया। शांति स्थापित होने के बाद जज साहब ने अभियोजन के वकील को मुकदमा शुरू करने को बोला।

अभियोजन का वकील "मी लार्ड! आज का यह आरोपित व्यक्ति एक बहुत बड़ा जादूगर और छलिया है। इसने अपने सैकड़ो नाम जैसे गोपाल गोविंद, मुरारी, मोहन, केशव, माधव, यशोदानंदन और देवकीनन्दन आदि अनेकों नाम प्रचारित कर रखे हैं। इसने अपने बारे में सदियों से अनेकों भ्रांतियाँ फैला रखी हैं। जिनसे मिस्गाइड हो कर भोले–भाले लोग इसे भगवान मानने लगे। इसे शास्त्रों में 'चोर जार शिखामणि' भी कहा जाता है। इसके ऊपर मैं धोखाधड़ी और व्यभिचार में दफा 420 और 497 का केस चलाना चाहता हूँ।

जज साहब "प्रोसीड"

वकील "सबसे पहला आरोप है कि बचपन से ही इसे चोरी का व्यसन है। अपनी मित्र मंडली के साथ दूसरों के घर घुस यह उनका दही और माखन चुराने की बुरी आदत है।"

योगेश्वर विनम्रता से "जज साहब! मैं नंदगाँव के मुखिया का बेटा था। मेरे स्वयं के यहाँ ही दही और मक्खन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। फिर मुझे चोरी करने की क्या जरूरत?" कहकर मुसकाए।

"यह सही है किन्तु फिर भी तुम दूसरों के यहाँ ही नहीं स्वयं अपने घर में भी टोली के साथ हुड़दंग मचा कर मक्खन खाते थे"।

"हाँ मीलार्ड यह बात तो सत्य है। किन्तु यह भी सत्य उतना ही सत्य है कि मेरे अलावा किसी भी बालक को गरीबी की वजह से मक्खन आदि पौष्टिक पदार्थ उपलब्ध नहीं थे। सोचिए यदि बचपन ही भूखा हो तो उसका यौवन कितना दुर्बल होगा। इस नाते मैं स्वयं अपने यहाँ और दूसरों के यहाँ भी अपने मित्रों को दही और मक्खन खिलाता था। और यह भी उतना ही सत्य है की मेरे इस अभियान से सभी गाँव वाले परिचित थे, अतः वह भी बुरा नहीं मानते थे। जिनके पास मक्खन प्रचुर मात्र में था, वह गृहस्वामिनियाँ हमारे लिए घर के दरवाजे जानबूझ कर खुले छोड़ कर चली जातीं थीं। वह

भी केवल इसलिए कि हम बालक मंडली मक्खन आदि आसानी से खा सकें। जज साहब जो कार्य परहित में किया जाय और गृहस्वामिनी की सहमति हो तो उसे चोरी नहीं कहते।

जज साहब "वकील साहब आपका यह आरोप तो न्यायिक रूप से गलत है। इतने नन्हें बालक बच्चे पर कोई भी अपराध नाजिल नहीं होता"।

वकील अपनी रौ मे "पर हत्या का अपराध तो चल ही सकता है मी लार्ड। इस व्यक्ति ने इसे स्तन पान कराने आई एक पूतना नाम की महिला के प्राण ही ले लिए"।

जज साहब ने प्रतिउत्तर के लिए चश्मे से आरोपित को घूरा।

"महोदय वह स्त्री मेरे पड़ोस की ही रहने वाली थी। ग्राम्य क्षेत्र में महिलाएं एक दूसरे के बच्चे को स्तन पान कराती रहती हैं। यह बड़ी पुरातन परंपरा है। उस महिला की संतान जन्म लेते ही मर गई थी। सद्यप्रसूता महिला के स्तन में जमे दूध में जम गया था। इसका एकमात्र इलाज है वह जमा हुआ दूध महिला स्वयं अपने हाथों से निकाल दे अथवा वह किसी अन्य शिशु को स्तन पान करा कर जमे दूध को निकाल दे। इससे महिला स्वस्थ हो सकती है। पहला तरीका अत्यंत पीडाकारक होता है। अतः महिला ने दूसरा तरीका अपनाया। वह मुझे स्तनपान करने आई थी। किन्तु स्तन में जमे हुए दूध के कारण उसमे मवाद पड़ चुका था। मेरे स्तनपान करने के पहले ही वह फोड़ा फूट गया।

वकील साहब की सूचना हेतु मैं बताना चाहूँगा कि उस महिला का नाम पूतना नहीं था। जमे हुए दूध की वजह से स्तन में बने फोड़े को आयुर्वेद में 'पूतना' नाम से जाना जाता है। पूतना रोग का नाम है जिससे वह महिला ग्रसित थी। रक्त विषाक्तता और रक्त स्राव से उस महिला की मृत्यु हो गई। इसमे मेरा क्या दोष" कहकर कृष्ण मुसकाए।

वकील ने खिसिया कर दूसरा आरोप जड़ा "इन्होंने झूठ ही प्रचारित किया कि वृन्दावन की यमुना के अंदर कालीदह में एक विषैला नाग रहता था। जिसे इन्होंने मार डाला। उस नाग के विष के प्रभाव से ही यमुना का जल अभी भी नीला दिखाता है"।

कृष्ण "महोदय, यह एक अभूतपूर्व प्राकृतिक घटना है। हम सब जानते हैं कि प्रयाग में गंगा यमुना और सरस्वती का संगम होता था। उस समय सरस्वती नदी का जल यमुना के साथ ही प्रयाग तक आता था जिससे यमुना जल का मौलिक नीलापन परिलक्षित नहीं होता था। किन्तु धीरे धीरे सरस्वती के लुप्त होने से, यमुना जल का मूल नीला रंग उभर कर आ गया। रही बात नाग मारने की, तो ऐसे तमाम विषैले नाग गाय चराते समय गायों की रक्षा हेतु मार देते थे। इसमे कोई भी विलक्षणता नहीं है"।

अदालत में बैठी जनता ने योगेश्वर के उत्तर से संतुष्ट होकर जोर से करतला ध्वनि की, जिससे चिढ़ कर वकील आक्रामक हो उठा "सर, अभी तो इन पर और अधिक संगीन आरोप हैं। योगेश्वर नाम का यह शख्स बहुत ही रसिया और रंगीन तबीयत का व्यक्ति है। इसके 'छिनरपन' के किस्से अब भी कथाओं में चर्चित हैं। इस पर अपने से बड़ी उम्र की शादीशुदा गोपियों से अवैध संबंध रखने का संगीन जुर्म है। इनके एक बहुश्रुत प्रेयसी राधा के साथ इनका बहुत चक्कर चला। हालांकि इन्होंने उसे भी डिच यानि धोखा दिया। ब्रज भूमि से निकले के बाद इन्होंने उसकी तरफ देखा भी नहीं" फिर कुछ रुक कर "इसके अलावा भी इनके सैकड़ों में पत्नियाँ थीं"।

पर–पत्नी से अभिसार! यह जज साहब की दुखती रग थी। रंगीन मिजाज लोगों से जज साहब की चिढ़ बहुत पुरानी थी। जज साहब की त्योरियाँ चढ़ गईं।

जनता में भी असन्तोष के स्वर उठे।

"अबकी पहली बार योगेश्वर के मुँह से मुस्कान गायब हुई। वह गंभीरता से बोले "वकील साहब मेरे ऊपर अभियोजन तैयार करने में आपने 'श्रीमद्भागवत' अवश्य देखी होगी"

"हाँ, वही ग्रंथ तो आपकी करनी का सबसे प्रामाणिक ग्रंथ है। वह ग्रंथ ही इस अभियोजन की बैकबोन (रीढ़ की हड्डी) है" वकील से स्वर में गर्व का पुट था।

"तो वकील साहब कृपा करके अदालत को बताने का कष्ट करें कि भागवत में कहीं भी किसी कोने, किसी पृष्ठ, अथवा किसी भी पंक्ति में राधा नाम का जिक्र है?"

वकील साहब किंकर्तव्य विमूढ़ से हो गए। यह देख जज ने सख्ती से पूंछा "वकील साहब भागवत में राधा का जिक्र है या नहीं?"

"नहीं सर, राधा नाम का जिक्र तो नहीं है किन्तु रास के समय यह जिस प्रेयसी के साथ गायब हुए थे विद्वान उसी को राधा मानते है, और मैं भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचा।"

"अदालत निष्कर्ष नहीं तथ्य जानना चाहती है। राधा का नाम भागवत में है कि नहीं। हाँ या ना?" जज साहब ने सख्ती से पूछा।

"नहीं, हुजूर" वकील पहली बार कुछ नरम पड़ा।

अदालत में शोर मच गया। लोग आपस में बातें करने लगे। जज साहब ने सबको शांत करते हुए पूंछा "योगेश्वर जी, यह कैसे संभव है। हम सब भागवत के श्रंगारिक गाथा कि नायिका राधा को ही मानते हैं। यदि भागवत में राधा है ही नहीं तो राधा का प्रादुर्भाव ही कैसे हुआ?"

"मी लार्ड" कृष्ण ने भी अदालत की गरिमा का ध्यान रखते हुए कोर्ट

को आदर से संबोधित किया "लोग ग्रन्थों का स्वयं अध्ययन न कर बहुधा सुनी सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं। बाद में यह स्वयं को ज्ञानी सिद्ध करने के लिए ऐसे ही असत्य अथवा अर्धसत्य अनर्गल बातों से सबको भ्रमित करते रहते है"।

जज साहब रूखेपन से "योगेश्वर, मेरा प्रश्न था कि राधा नाम की आपकी प्रेयसी आई कहाँ से" "सर, राधा नाम का काल्पनिक नायिका सबसे पहले जयदेव कृत 'गीत गोविंद' ग्रंथ में परिलक्षित होतीं हैं। वह भी ईसा की तेरहवीं सदी में, मेरे जन्म के लगभग चार हजार वर्ष के बाद। सुंदर श्रंगारिकता और पदगेयता के कारण यह ग्रंथ रसिक भक्तों और रजवाड़ों बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस ग्रंथ से राधा–कृष्ण एक आदर्श प्रेमी युगल के रूप में स्थापित हुए। यह सखी भाव से भगवान की भक्ति की परंपरा सूफी संतों में भी पाई जाती है" कह कृष्ण चुप हो गए।

वकील झुँझलाते हुए "फिर यह सैकड़ों शादियों का क्या चक्कर है इसे आप कैसे जस्टिफाई करेंगे।"

"जज साहब! उस बहु–पत्नी प्रथा के काल में मेरे मात्र आठ पत्नियाँ थीं जिन्हें उनके पिता ने मुझे स्वेच्छा से सौपा था अथवा वह नारियाँ स्वयं मात्र कृष्ण का ही वरण करना चाहती थी। रही बात मेरे रसिया होने पर तो मैं बताना चाहता हूँ कि कंस वध के बाद कृष्ण एकाएक ही प्रतिष्ठा पा गया। गुरु संदीपन के गुरुकुल के मार्ग में मालवा की राजकुमारी व उनके पिता ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव रखा था। उस समय मेरे बड़े भाई बलराम अविवाहित थे। अतः मैंने दाऊ के विवाह के बाद ही विवाह करने का अपना निश्चय उन्हें बता दिया। अपने समय की विख्यात सुंदरी याज्ञसेनी (द्रौपदी) ने भी मुझसे प्रणय निवेदन किया था। किन्तु मैं उसका मात्र सखा बन कर अपने मित्र अर्जुन से शादी का सुझाव दिया। जज साहब विचारिए, यदि मैं नारी लोलुप, जैसा कि वकील साहब आरोपित कर रहे हैं, होता तो क्या यह सुअवसर हाथ से जाने देता?" फिर मुसकाते "इस प्रकार वकील साहब का यह आरोप भी निराधार है।"

अदालत में बैठी जनता खुशी से पागल हो उठी। एक बुजुर्ग महिला ने कहा, "बेटा! आज तो तुमने मेरी आँखे ही खोल दी। इतने अवसर होते हुए भी तुम स्थिर रह सके मैं तुम्हें इस नई दृष्टि से प्रणाम करती हूँ।"

योगेश्वर का जनता में सपोर्ट देख वकील साहब चिढ़ से गए। जनत को बड़े रूखेपन से बैठने की ताईद कर फिर से योगेश्वर पर हमलावर हुए– "मीलार्ड, भारत क्या, विश्व के इतिहास में इनके जैसे रक्तपिपासु नहीं हुआ। इसने अपनी कुटिलता से भाई भाई में महाभारत करा कर सारे वीरों का संहार करा दिया। अर्जुन ने युद्ध के प्रारम्भ में ही जब अपने सम्बन्धियो और गुरु पर पर अस्त्र उठाने को मना किया तो इन्होंने 'गीता–ज्ञान' से उसे

उकसाया। इस पर भी जब अर्जुन नहीं माना तब उसे इंद्रजाल रचित भयानक विश्व–रूप दिखा कर धमकाया।"

पूरी कार्यवाही में पहली बार सारी जनता और जज साहब स्वयं वकील के इस आरोप से सहमत दिखे। योगेश्वर चुप रहे। लगा कि वह अपने भावों को उचित शब्द देने का प्रयास कर रहे हैं।

"महोदय, महाभारत की कथा से आप स्वयं परिचित होंगे। आप स्वयं बताएं, यदि भीम को धोखे से जहर देना, वरणावत का षड्यंत्र, द्रौपदी का अपमान, छद्मद्यूत और धोखे से पांडवों के वनवास देने के कुकर्म का वाद आपके सम्मुख प्रस्तुत किया गया होता तो आप स्वयं क्या निर्णय लेते। कौरवों को क्षमा कर देते और पांडवों को दर दर भटकने के लिए बेसहारा छोड़ देते। पांडव तो पाँच गाँव लेकर भी संधि करना चाह रहे थे। किन्तु दुर्योधन और शकुनि तो पांडवों का समूल नाश चाहते थे। ऐसे में युद्ध अपरिहार्य होगया था। युद्ध में दोनों पक्षों का विनाश तो होना ही था, हुआ भी।"

वकील "अर्जुन तो युद्ध लड़ना ही नहीं चाहता था। तुमने उसे उकसाया...।"

कृष्ण बीच में ही बोल उठे "इस न्याय के मंदिर में खड़े होकर मैं आपसे एक प्रश्न करता हूँ। क्या न्याय सबके लिए एक नहीं होना चाहिए। क्या अपराधी अपना संबंधी हो तो उसे न्यायोचित दंड नहीं मिलना चाहिए?"

जज साहब "बिलकुल दंड मिलना चाहिए। न्याय अपने अथवा पराये सभी के लिए समान है।"

"वस्तुतः मी लार्ड, यही अर्जुन का मोह था। जिस अपराध के लिए वह दूसरों को मृत्यु दंड देता था, उसी अपराध में अपराधी के रूप में अपने सगे संबंधियों को वह दंड देने से विमुख हो रहा था। क्या यह अनुचित नहीं था?"

"यदि अर्जुन युद्ध न करता तो अनर्थ हो जाता। नारियाँ सुरक्षित न रहतीं, छल, षड्यंत्र राजधर्म बन जाता। अधर्म का राज्य हो जाता और अनर्थ ही धर्म बन जाता।" फिर आवेश में "और मैं यह अनर्थ होने नहीं देता। मैं स्वयं आतताईयों का विनाश कर देता।"

योगेश्वर की उग्र मुद्रा देख वकील साहब भयभीत हो दो कदम पीछे हट गए। अनर्थ की संभावना से जनता भी खड़ी होकर 'शांति, शांति' का पाठ करने लगी। क्षण में ही योगेश्वर प्रकृतस्थ हो गए, उनके मुँह पर मोहक मुस्कान फिर से लौट आई। सारी अदालत कृष्ण की जय जयकार करने लगी।

जज साहब ने फिर हथौड़ा पटका "आर्डर आर्डर, अभी अदालत का

फैसला नहीं आया। आप लोग शांति से अदालत के फैसले का इंतजार करें।

वकील कुछ और कहना चाह रहा था, किन्तु रुक गया। योगेश्वर की ओर देखने का उसमे साहस ही नहीं बचा था।

"अभियोजन का पक्ष पूर्ण हो गया" कह कर वकील निराश होकर अपनी कुर्सी पर ढुलक गया।

जज साहब काफी देर पर फाइल में कुछ लिखते रहे। अदालत में सन्नाटा पसार गया। लोग सांस रोक कर फैसले का इंतजार कर रहे थे।

जज के हथौड़े से सन्नाटा टूटा। सब फैसला सुनने के लिए सतर्क हो गए–

जज "अदालत ने अभियोजन के सभी आरोपों को सुनाय साथ ही आरोपित की अपने बचाव में दी गई दलीलों को भी नोट किया। दोनों पक्षों की दलीलों को सुन कर व उन पर पूरी गंभीरता के साथ विचार करने के बाद अदालत इस नतीजे पर पहुँची कि, आरोपित पर जितने दोष लगाए गए वह अधिकतर कपोलकल्पित और सुनी सुनाई बातें थीं। हाँ, अर्जुन को सामूहिक हत्या के लिए उकसाने वाले आरोप में काफी दम था। परंतु प्रतिवादी के बयान से पता चलता है कि जो कुछ उसने किया वह उस समय की न्याय व्यवस्था के अनुरूप था। इस प्रकार वादी ने अर्जुन की अंतरात्मा बन कर उसे न्याय का मार्ग दिखा कर धर्म और न्याय की रक्षा की।

अभियोजन के वकील इतने सीनियर होते हुए भी बचपन की शरारतों को चोरी का नाम देकर एक माइनर पर केस चलाने कि निश्चय को विवेक पूर्ण नहीं माना जा सकता।

इन सब बिन्दुओं पर विचार करने के बाद अदालत इस निर्णय पर पहुँची कि आरोपी पर लगाए सभी आरोप बेबुनियाद हैं। अदालत श्रीकृष्ण, जिनके और भी कई नाम हैं, वल्द वसुदेव को बाइज्जत बरी करती है।

सारी अदालत में जय श्रीकृष्ण के नारे लगाने लगे। कुछ उत्साहियों ने जज साहब की भी जय बोल डाली।

कृष्ण के अदालत से जाते समय जज साहब भी उठ कर खड़े हो गए। उन्होने कृष्ण से हाथ जोड़ कर कहा "सर, बड़ा अच्छा होता यदि आप मेरे घर पर एक कप चाय पी लेते"।

"जज साहब मैं अब भी केवल मक्खन और दही ही खाता हूँ। मेरे भक्तों ने मेरी चाय की आदत नहीं डाली" कह कर कृष्ण हँसते हुए बाहर निकल गए।

महायज्ञ

'अच्छा पंडित जी! जरा आप सोच–समझकर मेरी एक बात का जवाब देना।' निरंजना की दादी ने अचानक कहा।

'हाँ पूछिये माता जी!' पंडित जी का हाथ दीप जलाते–जलाते रुक गया।

'ये जो आप गरुड़ पुराण का पाठ करवा रहे हैं घट बँधवाकर पूजन करवा रहे हैं उस सब का कोई अर्थ भी है या यों ही यजमान को लूटा जा रहा है।' दादी ने पुनः कहा।

'कैसी बातें कर रही हैं माता जी! हम तो मृत आत्मा को शान्ति मिले सद्गति मिले और परिवार का सूतक खत्म हो इसलिए ये सभी धार्मिक अनुष्ठान करवा रहे हैं। हमारे यजमान की आस्था इन सभी कर्मकाण्डों में है तो ये सब हो रहे हैं और हाँ इन कार्यक्रमों से परिवार का वातावरण शोकाकुल होते हुए भी सात्विक हो जाता है।' पंडित जी के स्वर में कुछ कठोरता सी आ गयी थी।

'ये सब बातें तो ठीक हैं लेकिन जरा ये तो बताइये कि बिना क्रियाकर्म के किसी शरीर की आत्मा को शान्ति मिल सकती है, भला बिना दाग दिये, कपाल क्रिया हुए कोई आत्मा शरीर को त्याग सकती है, मुक्त हो सकती है।' दादी के स्वर में जिज्ञासा कम व्यंग्य अधिक था।

पंडित जी से पहले अभिषेक बोल पड़े– दादी! शायद आप 'देहदान' को मुक्ति की दिशा में बाधक मान रही हैं। हमने अपने पिता के शरीर को उनकी अन्तिम इच्छा या वसीयत का सम्मान करते हुए चिकित्सा विश्वविद्यालय को दान किया है। सोचिये दादी! इस देश में कितने ऐसे मरीज हैं जिन्हें उचित इलाज मिलता है। सही डॉक्टरों को दिखाकर अपना इलाज कितने लोग करवा पाते हैं डॉक्टरी की पढ़ाई बहुत मुश्किल पढ़ाई है। जीव विज्ञान के विद्यार्थियों को मेढ़क, छिपकली, कॉकरोच, मछली, खरगोश के शरीर की रचना पढ़ाने के लिए ये सभी जानवर चीड़फाड़ के लिए मिल जाते हैं लेकिन डॉक्टरों को इलाज तो मनुष्यों का करना पड़ता है। मानव शरीर तो उन्हें अध्ययन के लिए नहीं मिल पाते इसलिए बहुत सारी जानकारी पुस्तकों के माध्यम से उन्हें मिलती है। व्यावहारिक जानकारी नहीं मिल पाती इसलिए अच्छे डॉक्टर बनाने के लिए 'देहदान' बहुत जरूरी है।

अभिषेक ने एक छोटा सा भाषण ही दे डाला 'देहदान' के पक्ष में। यह बातें उसे तब पता चली थीं जब वह पिताजी के कहने पर चिकित्सा विश्वविद्यालय के 'एनाटॉमी' विभाग के प्रमुख से 'देहदान' के सम्बन्ध में

सम्पूर्ण जानकारी और फॉर्म लेने के लिए गया था। अभिषेक की बातें दादी को कितना प्रभावित कर सकीं यह तो निरंजना नहीं जानती लेकिन उसे गर्व है कि उसका सम्बन्ध एक ऐसे घर से जुड़ने जा रहा है जहाँ जागरूकता है, भावी पीढ़ी की चिन्ता है, अंधविश्वास नहीं है। उसका मन अपने होने वाले श्वसुर अमृतांश की स्मृति को नमन करते हुए जीवन साथी अभिषेक के प्रति गर्व से भर गया।

अभिषेक के पिता राघव जी आयकर विभाग में उच्च अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे। अपने सेवाकाल में उन्होंने जीवन के सभी रंग देखे थे। माता–पिता के साथ सुनहरा बचपन; जहाँ प्रकृति के सानिध्य में मासूमियत पलती थी; शहर आने के बाद नौकरी–तरक्की का संघर्ष छोटी–छोटी बातों के बड़े–बड़े अर्थ; रिश्तों का आडम्बर और उथलापन; सभी कुछ तो था राघव जी के जीवन में। साथियों के बीच अपने गम्भीर स्वभाव और कर्मठता के कारण अलग पहचान बनाने वाले राघव जी को ईर्ष्या का भी सामना करना पड़ा था। उच्च अधिकारियों की दृष्टि में सराहना का बढ़ता ग्राफ साथियों के बीच षड्यन्त्र को जन्म देने वाला भी बना।

एक गम्भीर अनियमित्तता के आरोप में उन्हें नौकरी से पहले निलम्बित फिर बर्खास्त कर दिया गया। उन्हें न्यायालय की शरण में जाना पड़ा। मुकदमा चला तारीखों पर तारीखें। एक वकील से दूसरा वकील एक अधिकारी से दूसरा अधिकारी। मामला खिंचता जा रहा था राघव जी का धैर्य चुकता जा रहा था। कहते हैं भगवान के घर देर है अंधेर नहीं। राघव जी के भाग्य से विभाग में एक ऐसे उच्च अधिकारी ने कार्यभार ग्रहण किया जो बहुत सख्त और दफ्तर वालों की भाषा में कहें तो 'खडूस' माने जाते थे।

उनके परम मित्र और कार्यालय में सहयोगी गुप्ता जी ने चुपके से फोन कर उन्हें सुझाव दिया कि सारा मामला आकर नये साहब को समझाओ शायद कुछ बात बन जाय। वे बड़ी दुविधा के साथ नये साहब से मिले उन्होंने पहले तो कुछ विशेष रुचि नहीं दिखायी प्रार्थना पत्र लिख कर कार्यालय में देने को कहा।

प्रार्थना–पत्र लिखकर वे उनके निजी सचिव को दे आये बिना किसी उम्मीद के, बिना किसी सुखद परिणाम की आशा के। अचानक पन्द्रह दिन बाद अधिकारी महोदय के निजी सचिव का फोन आया। अधिकारी ने उन्हें अपने पूरे कागजों के साथ दो दिन बाद कार्यालय में बुलाया था ठीक दस बजे। वे नियत समय पर अधिकारी से मिले। अधिकारी ने उनकी पूरी बात ध्यान से सुनी। और सारे कागज सारे सबूत देखे। अपने सहायक को बुलवाकर सभी कागजों की छायाप्रतियाँ करवायीं और चश्मे के नीचे से झाँकते हुए पूछा– राघव जी! अगर आपको न्याय इसी कार्यालय से मिल

जाय तो क्या आप मुकदमा वापस ले लेंगे। बिना एक क्षण गँवाये राघव ने कहा– 'बिल्कुल सर!' तो यह लिखकर दे दीजिये। चाहिए तो अपने वकील से भी पूछ लीजिये। अधिकारी की गम्भीर आवाज थी।

'इसकी आवश्यकता नहीं सर! मुझे आप पर पूरा विश्वास है।' कहते हुए अमृतांश कमरे से बाहर आ गये निजी सचिव के कक्ष में बैठकर उन्होंने प्रार्थना पत्र लिखा और अधिकारी को सौंप कर चुपचाप घर चले आये।

उन्होंने अनुभव किया था कि जब से उनके खिलाफ जाँच प्रारम्भ हुई थी– आरोप लगे थे तब से उनके अपने साथियों का व्यवहार भी कुछ–कुछ बदल गया था बाद में तो सभी ने उन्हें दोषी ही मान लिया था और सामने पड़ने से कतराने लगे थे। कुछ लोगों को छोड़कर उनको हौसला देने वाला कोई भी नहीं था। न्याय की उम्मीद वे किससे करते ?

नये अधिकारी के प्रयास का परिणाम एक महीने के अन्दर ही आ गया। उनके ऊपर लगाये गये सभी आरोप बेबुनियाद सिद्ध हुए थे। उनके खिलाफ साजिश करने वालों को कठोर दंड देने की संस्तुति करते हुए उन्होंने सारा प्रकरण मंत्रालय को सूचनार्थ भेज दिया था। सेवानिवृत्ति के दस महीने पहले उन्होंने ससम्मान अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया था। कुछ लोग इस निष्पक्षता की सराहना करने वाले थे कुछ लोग 'दाल' में अब भी 'कुछ काला' खोज रहे थे। बहरहाल अपना खोया हुआ आत्मसम्मान पुनः प्राप्त कर राघव जी रिटायर हुए। इसी बीच उन नये अधिकारी श्रीमान् विष्णु शेषन का स्थानान्तरण प्रमोशन के साथ हो गया था। जाते हुए अपने सम्बोधन में उन्होंने सभी से एक ही निवेदन किया था कि किसी के साथ हो रहे अत्याचार में सहयोग देना बहुत आसान है मुश्किल है निर्दोष को बचा लेना। हमारा कर्त्तव्य है कि हम निर्दोष को बचाने की दिशा में पहल करें।

राघव जी के मन में यह बात पत्थर की लकीर के समान अंकित हो गयी थी। रिटायरमेण्ट के बाद पेंशन हेतु जीवित प्रमाण पत्र देने वे लगभग दस–ग्यारह महीने बाद कार्यालय गये तो पता चला श्रीमान् विष्णु शेषन का निधन हो गया। उन्हें अचानक कोई ऐसी बीमारी हो गयी जिसका पता किसी जाँच में नहीं चला, अभी अन्य जाँचें पूरी भी नहीं हो पायी थीं कि श्री शेषन की साँस की डोर टूट गयी। राघव जी को बहुत बड़ा धक्का लगा। अच्छे आदमियों के साथ बुरा क्यों होता है ?

कार्यालय से वे श्रीमान् शेषन का पता ले आये थे। आरक्षण कराकर वे श्री शेषन के परिवार से मिलने चैन्नई गये। उनके परिवार में पत्नी अकेली थीं। लगभग पचास–पचपन वर्ष की महिला बिल्कुल अकेली। अमृतांश ने अपना परिचय दिया और साहब के एहसान को बताया तो श्रीमती शेषन उदास होकर बोलीं – 'भाई! आपकी भावना का मैं सम्मान करती हूँ लेकिन

अगर एक्सपर्ट डॉक्टर मेरे पति का इलाज करते तो शायद वे आज हमारे बीच होते जीते–जागते। मैंने उनका पोस्टमार्टम करवाना चाहा तो मुझे एक डॉक्टर ने सलाह दी– मैडम! पोस्टमार्टम से तो केवल आपको यह पता चल सकता है कि मिस्टर शेषन की मृत्यु कैसे हुई लेकिन यदि आप उनका शरीर हमें दान दे दें तो इस अबूझ बीमारी के बारे में हम अनेक खोजे कर सकते हैं जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं....श्रीमती शेषन का कण्ठ अवरुद्ध हो गया लगभग सिसकते हुए उन्होंने बात आगे बढ़ायी– 'भाई! उस युवा डॉक्टर ने एक क्षण को मुझे हतप्रभ कर दिया।' वह आगे बोलीं 'उसने कहा कोई जबर्दस्ती नहीं है कोई बन्धन नहीं है लेकिन सोचिए भाभी जी! आपका यह 'देहदान'' हमारे लिए कितना महत्त्वपूर्ण होगा भविष्य में हम उम्मीद कर सकते हैं कि इस अनजानी बीमारी से लड़ने का हम कोई रास्ता अवश्य खोज लेंगे। आपसे वायदा करते हैं कि आपके पति की तरह इस बीमारी से अन्य किसी मरीज की लड़ाई हम अन्तिम साँस तक लड़ेंगे। आपके पति का और आपका नाम एनाटॉमी विभाग में देहदाताओं की सूची में अंकित किया जायगा।'

श्रीमती शेषन ने एक हिचकी के साथ लम्बी ठण्डी साँस ली– राघव भाई! मैं अपने पति आपके आदरणीय बॉस श्री शेषन की देह को अमर कर आयी। वैसे भी शरीर तो नश्वर है आत्मा अजर–अमर है मुझे विश्वास है मेरे प्रिय पति आत्मा ने कोई नया शरीर खोज लिया होगा। मुझे आशा है उनके शरीर से वे युवा डॉक्टर कुछ न कुछ नया अवश्य खोजेंगे....।' कहते–कहते श्रीमती शेषन का कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

राघव वहाँ से एक नया विचार लेकर आये थे। उन्होंने श्रीमती शेषन से हुई अपनी पूरी बातचीत अपने बेटे अभिषेक को बतायी थी और इच्छा व्यक्त की थी कि उनकी मृत्यु के बाद उनका भी देहदान किया जाय और अभिषेक से यह वायदा भी लिया था कि वह 'देहदान' के इस यज्ञ में आहुति देने वालों की संख्या में निरन्तर बढ़ोत्तरी करवायेगा। तब से अभिषेक ने इस 'महायज्ञ' को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है। निरंजना भी अपने को अभिषेक के विचारों के साथ खड़ा पा रही है शायद इसी तरह कारवां बनता चले।

डॉ0 अमिता दुबे
सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,
6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ
चलभाष सं0 : 9415551878
Email : amita.dubey09@gmail.com

सलीबें

पहना है क्यों काँटों का ताज
ये हँसते हुए गुलाबों से पूछो
किसी भूले हुये वादे की कीमत
पथरा गई उन आँखों से पूछो
उनकी मेहरबानियों का मतलब
किसी के चाक दामन से पूछो
पल–पल बदलते चेहरे की हकीकत
उसके रंगीन मुखौटों से पूछो
डूबी है क्यों किनारे पे कश्ती
ये मेरे कद्रदानों से पूछो
मुट्ठी भी आसमाँ की हसरत
सदियों से बंद दरवाजों से पूछो
होती हैं क्या हसरते परवाज
ये कफस के परिंदो से पूछो
कैसे मिलती है मंजिले दुश्वार
ये पाँव के छालों से पूछो
किसी के बुलंद इरादों से ताबीर
उसके हौसलों से पूछो
उसकी जद्दोज़हद की कहानी
उन सुर्खरू–सलीबों से पूछो।

मंजु शुक्ल
पूर्व शिक्षा निदेशक,
उ. प्र.

प्रबुद्ध वर्ग और उसकी भूमिका

'प्रबुद्ध' का शब्दकोशीय अर्थ है : ज्ञानी, जागा हुआ ,होश मे। 'बुद्ध' का भी अर्थ है जागा हुआ, जागृत, ज्ञानी, बुद्धिमान। अब उसमें 'प्र' लगाने से हो गया ज्ञानियों में श्रेष्ठ।

ज्ञान क्या है? ज्ञान गाँधीजी के अनुसार सबसे बड़ा बल है। और अगर अध्यात्म की दृष्टि से देखें तो योगेश्वर ने गीता में ज्ञान को तीन प्रकार का कहा है – सात्त्विक,राजस और तामस। और कहा है :

"सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानमं विद्धि सात्त्विकम्।"

(१८/२०)

जिस ज्ञान से मनुष्य पृथक् पृथक् सब भूतों में एक अविनाशी परमात्वभाव को विभागरहित समभाव से स्थित देखता है,उस ज्ञान को तू सात्त्विक जान।

यह सात्त्विक ज्ञानी की परिभाषा है। और क्योंकि हम चर्चा प्रबुद्ध व्यक्तियों की कर रहे हैं अतः हमारे लिए यही परिभाषा अभीष्ट है। और हममे सात्त्विक के अतिरिक्त अन्य भाव भी आएँगे ऐसी आशा की ही नही जाती। और इस कारण यह कथन पूर्णतः सही है कि यदि हममे और कोई भाव आ रहा है तो हम स्वयं को गिरा रहे हैं। हम श्रेष्ठ हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं, पर सर्वश्रेष्ठ की एक दिक्कत होती है–उस स्थिति में स्वयम् को बनाए रखने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना पड़ता है क्योंकि चूक होने पर अगली गति अधोगति है। और अगर प्रबुद्धजन चाहते हैं कि उनका वही सम्मान हो, जैसी हम अपेक्षा करते हैं, तो हमको अपने आचरण, विचार और व्यवहार को सतत् आँकना होगा। हमें ध्यान रखना होगा कि हम जो बोल रहे हैं वह मात्र दूसरों के उपयोग के लिए नही है, और न अपनी वक्तृत्व कला प्रदर्शित करने के लिए है। ऐसा नही हो सकता कि हम दूसरों को समझायें और स्वयं राजस या तामस व्यवहार करें, वैसा व्यवहार जैसा गीता के 18 वें अध्याय के 19 वें और 20 वें श्लोक में परिभाषित किया गया है अर्थात्–'जिस ज्ञान के द्वारा मनुष्य सर्व भूतों में भिन्न भिन्न प्रकार के नाना भावों को अलग अलग जानता है, उस ज्ञान को राजस जान।' और 'जो ज्ञान एक कार्यरूप शरीर में ही सम्पूर्ण के सदृश आशक्त है, तथा जो बिना युक्तिवाला, तात्विक अर्थ से रहित और तुच्छ है वह तामस है।' अर्थात हमारे भाषण देने, लिखने और उपदेश देने के लिए तो हम प्रबुद्ध हैं, सात्त्विक हैं पर व्यवहार और स्वार्थ के लिए हम राजस हैं

और यदि आवश्यकता पड़े तो तामस भी। यह द्वैत, यह द्विविधा, और ख़राब शब्दों में कहें तो यह दोगलापन, हमें नीचे ले जाता है, अधोगति की ओर; और हम श्रेष्ठतम की श्रेणी से नीचे गिर जाते हैं। अगर हम प्रबुद्ध होने का दावा करते हैं तो हमें यह दोहरापन त्यागना होगा क्योंकि प्रबुद्ध होने का अर्थ ही है– जागा हुआ, होश में और जो जागा हुआ है वह गलत रास्ते पर यदि जाता है तो उसको जगाना बड़ा कठिन है। उससे तो आशा यह की जाती है कि वह दूसरों को जगाएगा। और यदि हम ऐसा नही भी कर सकते तो कम से कम इतना करें कि स्वयं के विचार–व्यवहार में कोई अन्तर न आने दें। अपने स्वतंत्रता संग्राम को देखें – जिसका नायक महात्मा गाँधी को माना गया, न कि गोखले को, जो उनके राजनीतिक गुरु थे, न तिलक को जिनके मूल मन्त्र "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" को ही गाँधीजी ने अपनाया, न रानाडे को, न पाल को, न बोस को, न लाजपत को जो सभी विद्वता और देश प्रेम में गाँधीजी से कम नही थे। इसका कारण, जो मुझे समझ में आता है वह यह है कि गाँधी ने अपने विचारों और व्यवहार में तथ्य स्थापित कर बौद्धिक सोच को जन जन की सोच बना दिया। तो प्रबुद्ध वह हुए, ज्ञानी वह हुए, जागे हुए वह हुए। जिस प्रबुद्ध समाज की हम बात करते हैं–यहाँ पर ब्राह्मण समाज–वह न केवल जगा हुआ था वरन दूसरों को जगाए रखने के अपने उत्तरदायित्व को भी उठाता रहा है और गीता के सात्त्विक ज्ञानी की तरह सभी प्राणियों में उसी परमात्मा के अंश को मान कर सद्भाव, सम भाव के सिद्धान्त पर चलते हुए यह उद्घोष करता रहा है: "प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।" यह विचार और इनका पालन हमारे सिवा और किस संस्कृति, सभ्यता और धर्म में पाया जाता है? यह है हमारी प्रबुद्धिता! और यह इसलिए है क्योंकि प्रबुद्ध स्वयं के हित से पहिले समाज का हित सोचता है। यहाँ पर दो बातें और–वाल्मीकि या विश्वामित्र या गाँधी ब्राह्मण नहीं थे पर प्रबुद्ध थे अर्थात प्रबुद्धता जन्मतः नही है यद्यपि ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से सदियों के संचित गुण स्वाभाविक रूप से उसमें आना अपेक्षित हैं जिससे उसे इस दौड़ में लाभ मिलता है। दूसरे ज्ञान एक बल है और सबसे बड़ा बल, और सभी बलों की तरह इसकी एक समस्या है : इसका उपयोग। यदि ज्ञान का उपयोग सकारात्मक है तो मानवता से देवत्व की ओर ले जाता है और यदि नकारात्मक है तो दानवता की ओर ले जाता है, जैसे रावण। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि हम ज्ञान का सदुपयोग करें और सत्कर्म करें और स्वयं को अनुकरणीय बनायें ताकि समाज जगा रहे।

डी एन दुबे, आई ए एस

मिलिये गौमाता से

– योगेन्द्र शर्मा

गर्व का विषय है कि हम अपने पेड़–पौधों, नदी–नालों, पत्थरों–पर्वतों से प्यार करते हैं। परन्तु सबसे अधिक हम अपने 'घर के कूड़े' से प्यार करते हैं । अव्वल तो, हम अपने घरों का कूड़ा घर में ही रखना चाहते हैं। भइये, हमारे पूर्वजों की धरोहर है, घर का कूड़ा–करकट। दादी–माँ, नानी–माँ, कैसे इसे प्यार से बुहारती हैं? उसे हम जहाँ चाहें फेंके, यह हमारा जन्मसिद्ध, मौलिक व संवैधानिक अधिकार है। मेरे शहर की तो यह परम्परा है, या तो आपको सड़क पर कूड़ेदान यथास्थान दृष्टिगोचर नहीं होगा, यदि वह यथास्थान शोभायमान होगा भी तो, यहाँ की जनता–जनार्दन, अपना कूड़ा उसके इर्द–गिर्द बिखरा देगी। ताकि नगर पालिका के चन्द 'अवैतनिक सफाई कर्मचारी' ढेर की यथास्थिति सफाई कर लें।

ऐसे ही एक कूड़े के 'सुगन्धित–पवित्र' ढेर पर, एक गौमाता, एक श्वान महोदय, व एक कूड़ा बीनने वाली युवती व्यस्त थे। कूड़ा बीनने वाली युवती, एक कटी–फटी जींस और टाप. कानों में टॉप्स पहने हई थी। उसकी भौहों का सौन्दर्यीकरण, एक ब्यूटी पार्लर द्वारा किया गया था। इससे यह स्पष्ट हुआ कि यथा–हैसियत, औकातानुसार सजना–सँवरना भी, हर स्त्री का संवैधानिक अधिकार है। तभी उसी युवती ने जेब से मोबाइल निकाला, तो मुझे यह विश्वास हो चला कि हमारा जीवन –स्तर, महँगाई के स्तर से भी ऊँचा हो चुका है। हमारे अच्छे दिन आ चुके हैं। श्वान महोदय, व गौमाता दोनों बिना आधार कार्ड, अर्थात् बिना पट्टे के थे तीनों प्राणियों के बीच उनकी बिरादरी का कोई अन्य प्राणी नहीं था, अन्यथा उन्हें 'पाकिस्तानी' बनने में देर न लगती।

गौमाता से प्रणाम कर, जब मैंने कहा कि मैं एक छोटा–मोटा लेखक हूँ (कद 5 फिट 5 इंच और वजन 81 किलो) तो उन्होंने मुझे ध्यान से देखा, फिर मुस्करायी। बेटा, गोस्वामी तुलसीदास कह गये हैं, 'बिन हरि कृपा मिलहि नहिं सन्ता'। मेरे दिल पर बहुत बोझ है। अब तो मैं अपने 'मन की बात' तुमसे अवश्य कहूँगी। गौमाता ने जो प्रवचन दिया, उसका सारांश प्रस्तुत है–

''क्या कहा... कि मैं करोड़ों भारतीयों की माँ होते हुए भी, पॉलीथीन से पेट भर रही हूँ। (व्यंग्यभरी मुस्कराहट गहरा गयी थी) बेटा, खाली पेट

भूखों मरने से तो अच्छा है, पॉलीथीन खाकर मरा जाए। अब तुम पूछोगे कि मेरा कोई मालिक है, या नहीं?''।

''यदि है, तो मेरे भोजन की व्यवस्था क्यों नहीं करता? मालिक–भोजन व्यवस्था करता था, बेटा। जब तक मैं दूध देती थी, सच, मेरा बड़ा लाड़–प्यार होता था। हर त्यौहार पूड़ी. कचौड़ी, साग, हलुआ, खीर, मुझे मिलता था। सानी में खाली भुस नहीं मिलता था। अब हर सुबह, वह मुझे खुल्ला छोड़ देता है, अपना पेट खुद भरने को। अब तो मेरी नींद में मक्खियाँ भिनभिनाती रहती है। डर है कि, कहीं मुझे वह बेच न दे। हमसे ज्यादा बुरी दशा साँड़ों की है। हम दूध आदि देती हैं, बैलों से भी श्रम लिया जा सकता है, परन्तु साँड़ों का वंश–वृद्धि का अल्पकालिक उपयोग है। उन्हें तो प्रायः बचपन से ही कूड़े के ढेर पर छोड़ दिया जाता है। बेटा, राज्य और केन्द्रीय सरकार दोनों को गौवंश संवर्धन–संरक्षण करना पड़ेगा, अन्यथा हमारा पालन पोषण तो कूड़ा–करकट ही करेगा।''

जब मैंने कहा कि सरकारें इस विषय में गम्भीरता से सोच रही है। गोरक्षक भी किसी हालत में आपको बिकने नहीं देंगे। इस पर उन्होंने ठंडी साँस भरी। ''बेटा, कहावत है, 'अन्धी रे अन्धी!, तेरा बेटा आया। तब आया, जानिये जब गोद में आ बैठे। सरकारी योजनाएँ कागजों में बहुत लुभावनी लगती है, परन्तु वह प्रायः कागजों में ही रह जाती है। जहाँ तक गोरक्षा की बात है, यह हमारे हित में है, परन्तु इसकी आग में अपने स्वार्थ की रोटियाँ सेंकना, कहाँ तक उचित हैं? यह सत्य है, कि अधिकांश हिन्दू मुझे पालते हैं। दुधारू रहने तक, हमारी लात भी संहर्ष सह जाते हैं। उसके बाद या तो हमें कूड़े से पेट भरने को छोड़ देते हैं, या अपने किसी मुसलमान पड़ोसी को बेच देते हैं। कटु सत्य तो यह है कि हिन्दू–मुसलमान दोनों ही हमारी दुर्दशा के लिए जिम्मेदार हैं।''

हमारे साथ ही नहीं, जरा सोचो बेटा, कि आप लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं। औकात से ज्यादा बोझ ढोने वाला, कर्मठ, सहनशील प्राणी है, गधा। इस सज्जन, प्राणी को हम बार–बार अपमानित करते हैं। किसी मूर्ख मनुष्य को फटाक से कह देते हैं "अबे तू तो एकदम गधा है... गधा।'' घोड़े की दोनों आँखों पर चमड़े के ढक्कन लगा कर, एक कर्मठ, कर्मयोगी प्राणी को 'तंगनजर' बनाते हैं। जंगल के राजा शेर और हाथी, उनसे सर्कस में उछल–कूद करा कर लाखों कमाते हैं। हाथी दाँत के लिए हाथी, कस्तूरी के लिए हिरन, मार देते हैं। खाल के लिए लाखों पशुओं की

हत्या करते हैं। गैर–कानूनी कट्टी खाने भले ही बन्द हो जाए, परन्तु बकरे की माँ अब भी अल्लाह मियाँ से खैर मानती है, कि सुबह को निकला उसका बेटा, शाम को सही सलामत घर लौट आये। बेटा, अरब देश जहाँ वनस्पतियों का अभाव है, वहाँ की जाने दो, परन्तु इस देश में जहाँ साग सब्जी की कोई कमी नहीं, वहाँ इतनी जीव–हत्या क्यों? हमारी नेता मेनका गाँधी, की... जय।''

''बेटा, मैं तो तुम्हारी मुँह–बोली माँ हूँ। जरा मथुरा–वृन्दावन जाकर देखो। सिर मुड़ाये, दिन भर भजन करती, मुट्ठी भर चावल पर गुजारा करती, हजारों माताएँ मिलेंगी, जिन्हें उनके बेटे–बहुओं ने छोड़ दिया है। ये मानुस की बात तो है ही, स्वार्थी। पशुओं को छोड़ों, माँ–बाप से भी स्वार्थ का रिश्ता रखते हो। हम तो सस्ती चीजें घास, चारा वगैरह खा दूध, दही, मक्खन, घी जैसी अमूल्य चीजें जीते जी देते हैं, और मरणोपरान्त हमारी खाल भी उपयोगी है। जब तक तुम्हारा स्वार्थ सिद्ध होता है, पशुओं को तुम पालते हो, फिर उसे दुत्कार देते है।''

''क्या कहा... सबके अच्छे दिन आनेवाले हैं। हमारे भी आएँगे। अरे, हमसे ज्यादा अच्छे दिन तो इन भैंसों के रहे हैं। उत्तर–भारत के अनेक शहरों में देख लो, कटरा–फलाना, कटरा–ढिमाका, मुहल्लों के नाम। कोई मेरे बछड़े, बछड़ी के नाम पर क्यों नहीं रखता मुहल्लों के नाम। दूध भले हमे भैंसों की तुलना में कम देती है, लेकिन पतला होते हुए भी हमारा दूध अधिक गुणकारी है। हमारा औषधीय महत्त्व भी अधिक है।''

''अच्छे दिन तो बेटा जी, नेताओं के रहे हैं, और रहेंगे। एक हमारे राजा राम थे। पिता का वचन निभाने को अयोध्या का राज पल भर में ठुकरा दिया। जब भरत भाइया उन्हें मना कर वापस लाने गये, तो लौटते समय उन्हें शिक्षा दी–मुखिया मुख सो चाहिये, खान–पान को एक, पालहि पोसहि सकल अंग, तुलसी सहित विवेक। अर्थात मुखिया मुख के सामन होना चाहिए। मुख कोई भोज्य पदार्थ, अपने पास नहीं रखता, विवेक सहित सभी अंगों में बाँट देता है। यदि मुख ऐसा करने का प्रयास करता है, तो उसमें सड़न होने लगती है, और एक हमारे नेता जी, ऐसे पशु प्रेमी कि अपने राज्य के समस्त पशुओं का आगामी तीस वर्षों का चारा खा गये। अरे, सीमेंट, खाद, जमीनें यह सब तो हजम कर ही गये, पशुओं का चारा भी डकार गये। कितना 'लक्कड़ हजम, पत्थर हजम' हाजमा था उनका। कई राजनेता ऐसे हुए जिन्होंने अपनी सात पीढ़ियों का इन्तजाम कर लिया। दुख की बात तो यह है कि जनता ऐसे भ्रष्ट नेताओं को बराबर वापस बुलाकर सिंहासन सौंप .. रही

है। आज का मतदाता सोचता है, कि जनता का खून चूसता है, तो क्या, उसका काम तो कर ही देता है। नेता खाता है तो क्या. है तो अपनी जात बिरादरी का।''

''सच तो यह है कि हम पशु, तुम मानवों से अधिक श्रेष्ठ है। वृक्षों की तरह जब तक जीवित रहते हैं, 'सर्वजनहिताय' कार्य करते हैं, और मरणोपरान्त भी परोपकार कर जाते हैं। एक माँ, पिता से अधिक अपनी सन्तान को देती है। नौ माह शिशु को अपनी कोख में रखती है। अपार कष्ट सहकर उसे जन्म देती है। फिर शिशु जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा न हो जाए, तब तक उसका लालन–पालन करती है...''

बहुत–सी दादियाँ, खुद कन्या भ्रूण को गर्भ में ही हत्या करवाती हैं। उनसे कोई पूछे कि उनकी दादी यदि उन जैसी ही होती तो वह इस संसार में न होतीं, वह न होतीं, तो उनका बेटा न होता, न उनकी बहू होती। अपने स्वार्थ के कारण प्राकृतिक जनसंख्या सन्तुलन बिगड़ने न दें। क्या बेटियों के बिना, वह बेटे पैदा कर सकते हैं? जब माँ नहीं होगी, तो न नर होगा न मादा।

''मेरा तो कहना है कि माँ चाहे असली हो या मुझ जैसी मुँहबोली। माँ तो माँ है, उसकी कद्र करो, उसका सम्मान करो। उसने तुम्हारी खातिर इतने कष्ट सहे, तुम उसकी खातिर थोड़ा–सा कष्ट सहन करो। माँ से बड़ी नियामत है कोई जग में? जिनके पास माँ नहीं है, उनके दिल से पूछो।''

मो. : 09897410320

हेड ट्रांसप्लांट

– डॉ. दुर्गा शंकर शुक्ला

आज के समाचार पत्र की प्रमुख खबर–'भारत के एयर बेस पर आतंकी हमले के पहले ही पाँचों आतंकवादी ढेर'– अंदर की पंक्तियों में लिखा था– इस मुटभेड़ को सफल बनाने वाले कैप्टन अमित आतंकियों की गोलियों से बुरी तरह जख्मी।

वहीं अंदर के पृष्ठों में भी एक खबर प्रमुखता से छपी थी 'शहर के नामी उद्योगपति रोड एक्सीडेंट में गंभीर रूप से घायल।

– दोनों AIIMS दिल्ली में भर्ती थे।

– कैप्टन के दिल और फेफड़े बुरी तरह से क्षतिग्रस्त। यदि प्रत्यारोपण के लिए दूसरा हृदय उपलब्ध नहीं हुआ तो मृत्यु निश्चित।

– उद्योगपति हेड इंजरी से ब्रेन डेड घोषित, मात्र लाइफ सपोर्ट पर चल रहे हैं।

जहाँ भारतीय सेना के डाक्टर और अधिकारी एक जाँबाज सिपाही की जान बचाने के लिए एक अदद दिल और फेफड़े का दान कर्ता ढूँढ रहे थे। वहीं धनाढ्य उद्योगपति के परिवारी जन, एक एक ऐसे घायल की तलाश में थे थे जो दौलत के बदले अपने रिश्तेदार का सिर दान कर सके। अस्पताल के 'अंग–दान प्रोत्साहन' टीम ने वयोवृद्ध उद्योगपति के रिश्तेदारों से, देश की रक्षा में घायल युवा सिपाही के लिए दिल और फेफड़े दान करने की सलाह दी। किन्तु वह नहीं माने। उन्होने उलटे सैनिक के रिश्तेदारों को धन का लालच देकर सैनिक का सिर उद्योगपति को दान देने का प्रस्ताव रख दिया। कई दिन तक जब सैनिक को दिल और फेफड़े दान में नहीं मिल, तब हार कर सैनिक के परिवार ने सैनिक का 'सिर दान' करने का मन बनाया। मगर शर्त थी कि यह केवल और केवल 'दान' होगा। उद्योगपति के परिवार से इसके बदले में वह एक पैसा भी स्वीकार नहीं करेंगे।

आखिर एक बूढ़े धनाढ्य के लिए एक युवा देश रक्षक को अपनी जान देनी पड़ी।

हेड ट्रांसप्लांट सफल रहा। परंतु जैसा की डाक्टरों ने पहले से बता दिया था, उद्योगपति के गर्दन के नीचे का हिस्सा पूरी तरह से निष्क्रिय हो गया था। इसे मेडिकल में क्वार्डीप्लीजिया (दोनों हाथ और दोनों पैरों की पैरालिसिस)। इसका कारण था गर्दन के नीचे की सभी नर्व्ज का कट जाना

था। मानव की नर्व एक मिलीमीटर प्रति दिन ग्रो करती है। इस गति से दस महीने में नर्व्ज दो फीट तक ही रीजेनेरेट होतीं हैं। इस प्रक्रिया की गति को स्टेम सेल ट्रांसप्लांट की मदद से बढ़ाया भी जा सकता है।

उद्योगपति को पैसे की कोई कमी नहीं थी। अतः विश्व में उपलब्ध सभी सुविधाएं उसे उपलब्ध हो गईं। धीरे धीरे उद्योगपति के अंगों में हरकत भी होने लगी। यह देख मरीज का परिवार ही नहीं आपरेटिंग टीम के डाक्टर भी उत्साहित हो उठे। उद्योगपति का मेडिकल बुलेटिन स्थानीय अखबारों में छापा जाने लगा।

पाँच महीने की कोमा के बाद उद्योगपति को होश आया। घरवाले उत्साहित हो उठे। मगर डाक्टरर्स जानते थे कि यह बाहोशी पूरी नहीं है। मारीज कम्प्लीट एम्नेसिया में था (याददाश्त खो चुका था)।

घरवाले चिंतित होने लगे। उद्योगपति कानूनी तौर पर अब भी जीवित था। उसके जीवित रहने तक वारिसान को उनका हक नहीं मिल सकता था। वहीं, बगैर याददाश्त के वह अपनी वसीयत भी नहीं लिख सकता था। बड़े लोगों में रिश्ते स्वार्थ पर अधिक निर्भर होते हैं। धीरे धीरे करीबी रिश्तेदारों की संख्या भी घटने लगी। केवल सेठ की पत्नी ही चौबीस घंटे उसके साथ रहती। देखभाल के लिए चौबीसों घंटे अस्पताल की नर्सिंग टीम घर पर ही उपलब्ध थी।

मरीज के शरीर की स्पंजिंग करते समय नर्से युवा चेहरे के बूढ़े शरीर को देख कर तरस खा कर रह जातीं थीं। वह सोचतीं कि काश इस युवा को, इस बूढ़े सेठ का दिल और फेफड़ा मिल गया होता। ऐसे में एक परिवार नष्ट होने से बच जाता।

एक दिन स्पंजिंग करते समय मरीज के शरीर के परिवर्तन को देख नर्स आश्चर्य चकित हो गई। उसने जूनियर डॉक्टर को सूचित किया कि, समय के साथ मरीज की खाल की झुर्रियाँ धीरे धीरे कम हो रही हैं। डाक्टर ने खाल के इस परिवर्तन के साथ नोटिस किया कि मरीज की मांसपेशियाँ का आकार बढ़ गया और पहले से काफी मजबूत दिखने लगी थीं। सीनियर डाक्टर ने इस परिवर्तन को बहुत हल्के लिया। वह जानते थे कि, शरीर सारे हार्मोन्स मस्तिष्क से कंट्रोल होते है। वृद्ध शरीर में जोड़े गए युवा मस्तिष्क के असर से शरीर में एंडरोजेन्स की अधिक उपलब्धता से यह परिवर्तन हो रहे है। सीनियर डाक्टर ने बताया, कि अधिक आयु के लोग अपेक्षाकृत कम उम्र का दिखने के लिए, लोग इन एंड्रोजेन्स का सेवन करने लगते हैं। हालाँकि अधिक दिनों तक इसका इनका सेवन हानिकारक होता है।

समय के साथ मरीज की दशा में तेजी से सुधार होने लगा। डाक्टरों की व फिजिओथिरेपिस्ट की लगभग पाँच वर्ष की मेहनत के बाद मरीज धीरे धीरे अब सहारे के साथ चलने फिरने लगा। मगर उसकी याददाश्त अब भी वापस नहीं आई थी। अपने अपने आप चलने फिरने में समर्थ होने के बाद वह केवल एक नर्सिंग अटेंडेंट के सहारे अपनी देखभाल करने लायक हो गया।

डाक्टरों का कहना था कि घर के माहौल में किसी पुरानी बात या वस्तु को देख उद्योगपति की याददाश्त वापस आ जाएगी। किन्तु कब तक? यह एक बड़ा प्रश्न था। जिसका उत्तर डाक्टर भी नहीं दे सकते थे।

नित्य क्रियाओं से फारिग कराने के बाद सेठ जी को उनका अटेंडेंट सोफा पर बैठा कर, टी वी आन कर देता। सेठ जी नन्हें बच्चे की तरह टुकुर टुकुर टी वी देखते रहते। कितना समझ पाते थे, भगवान जाने। डाक्टर के कहने पर टी वी का रिमोट सेठ जी के हाथ में दिया जाने लगा। सेठ जी कुछ दिन बाद स्वयं चैनल बदलना सीख गए। सभी के लिए यह बड़ी खुशी का सबब था।

एक दिन सेठ जी निर्विकार भाव से टी वी चैनल बदल रहे थे। एकाएक एक चौनल पर तड़–तड़ चलती गोलियों की आवाज आई। सेठ जी की मुद्रा में परिवर्तन हुआ, परंतु तब तक वह चैनल चेंज हो चुका था। इस परिवर्तन को उनके नर्सिंग अटेंडेंट ने नोटिस किया। सेठ जी जब चैनल बदलते हुए जब दोबारा उसी चैनल पर पहुँच कर रुक गए। अटेंडेंट को लगा जैसे सेठ जी टी वी स्क्रीन के दृश्य को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

टी वी पर एनाउंसर बोला आज भारत पाकिस्तान सीमा पर हुई ऐतिहासिक मुठभेड़ की पाँचवी वर्षगाँठ है। आज के ही दिन भारत के एक वीर सैनिक ने, अपनी जान पर खेल कर एक बड़े आतंकवादी हमले से भारत को बचाया था। उस शहीद की याद में प्रस्तुत है उस घटना का नाट्य रूपांतर–

टी वी पर मुठभेड़ के सीन के साथ कमेंटरी भी चल रही थी। उस रात कैप्टन अमित अपने एक साथी के साथ गश्त पर निकले। रात के अंधेरे में उन्हे लगा जैसे कुछ आतंकवादी सरहद की कटीली बाड़ काट कर भारत की सीमा में प्रवेश कर रहे हैं। आतंकवादी शायद सौ गज कि दूरी पर होंगे और धीरे धीरे जमीन पर रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे। कैप्टन अमित और उनका साथी ने तत्काल जमीन पर लेट कर पोजीशन ले ली। अमित ने अपने साथी को फुसफुसा कर कहा "यह इतने नजदीक हैं कि, अगर हम बेस को सूचित करते हैं तो यह हमारी उपस्थिति जान जाएंगे। हम दोनों को ही इन पर

सरप्राइज अटैक करना होगा"। कैप्टन ने अपने साथी को थोड़ी दूर एक पेड़ के तने के पीछे से, टार्च की रोशनी फ्लैश करने को बोला। अमित की युक्ति काम कर गई। आतंकवादी टार्च की रोशनी की ओर फायर करते दौड़े। भागते समय वह अमित के एकदम पास से गुजरे। अमित इसी मौके की तलाश में था। उसने अपनी असाल्ट गन का एक बर्स्ट फायर किया। कुछ आतंकवादी गोली खा कर गिर पड़े बाकी जमीन पर लेट पोजीशन लेकर अमित की ओर फायरिंग करने लगे। अमित तब तक अपनी जगह से हट कर आतंकवादियों के पीछे पहुँच चुके थे। दुश्मन अपनी फायरिंग का असर जानने के लिए रुक कर आहट लेने लगे। तभी टार्च की रोशनी फिर चमकी। सबका ध्यान रोशनी की ओर गया। अब तक अमित उनके पीछे पहुँच चुका था। उसने इस बार निशाना लगा कर फायर किया तीन लोग वहीं ढेर हो गए। तभी अमित के पीछे से आवाज आई "ओए, खबीस यहाँ है" कह कर पीछे से आते हुए आतंकवादी ने फायर किया। तीन गोलियाँ अमित की पीठ चीरती हुई सीने में घुस गईं। अमित को जरा भी दर्द महसूस नहीं हुआ। उसने पलट कर हमलावर पर पूरी मैगजीन खाली कर दी।

फायरिंग की आवाज से पास की गश्ती टुकड़ी आ गयी। अमित का साथी भी पेड़ के पीछे से निकल आया। सबने देखा चार आतंकवादी मर चुके थे और एक अंतिम साँसे ले रहा था। वहीं कैप्टन अमित के सीने में तीन गोलियां लगी थीं। वह बेहोश थे।

एनाउंसर बताता है कि कैप्टन अमित को मरणोपरांत वीरता चक्र से सम्मानित किया गया। इसके बाद स्लो मोशन में अमित को गोली लगते दिखाया जाता है। इस बार जैसे ही गोली अमित के सीने में लगती है सेठ जी एकदम चीख उठते हैं।

अटेंडेंट खुश हो जाता है कि सेठ जी की याददाश्त वापस आ गई। वह सामने आ कर पुकारता है "सेठ जी, कैसे हैं आप?"

वह सोफे से उठता है। अटेंडेंट को अंजानी निगाहों से देखता हुआ, वह पास के रखे टेलीफोन तक जाता है। टेलीफोन उठा कर एक नंबर डायल करता "हेलो, तेंतीस राइफल कमांड? मैं कैप्टन अमित बोल रहा हूँ"

नोट– प्रसिद्ध हार्ट ट्रांसप्लांट सर्जन क्रिश्चियन बर्नार्ड का एक व्यक्तव्य था "हेड ट्रांसप्लांट के बाद शरीर मस्तिष्क का व्यक्तित्व हासिल कर लेगा। इस प्रकार यह हेड–ट्रांसप्लाट न होकर टोटल बॉडी ट्रांसप्लांट होगा।"

होली गीत

जाने आज अपने शहर की होली मुझको क्यों याद आती हैं,
रंगे–पुते रंगीन चेहरे, जानी पहचानी मुस्कान लिये,
प्रेम–नगर के तरण–ताल में डूबे, सब गमों से अन्जान हुए।

फाल्गुन की सरगोशी में डूबा, खिलखिलाता था गुलाल,
टेसू के फूलों में भीगें, इठलाते आँगन ताल।

हर घर में... घर–घर में माँ गुझिया पारे तलती थीं..,
पर इसके उसके घर की गुझिया एक प्यार के साये में ढ़लती थीं।

ठंडाई की बात न पूछो, उसमें अलग खुमारी थी...,
अपनेपन की मिठास, हर माँग पर भारी थी।

सिर्फ घर के नहीं, मन के किवाड़े खोले जाते थे...,
रंगों से भरे गुब्बारे, हमको बड़ा लुभाते थे।

नमकपारों में प्यार भरा, और पापड़ों की कुरमुर...,
फिर यादों में लहराया वो सतरंगी सपनों का झुरमुट।

खुशियों के ठहाकों में झिलमिल रंग छलकते थे...,
बसन्ती मन–मतवाला होता, हर्षित नैना बरसते थे।

आज यहाँ बैठा हूँ सूखा, हाथों में गुलाल लिये...,
इस भारी भीड़ में नितांत अकेला बस मन में यही मलाल लिये।

शायद अन्जाने इस व्यस्त शहर में चंद लम्हां,
जिन्दगी से उधार मिले...।

कोई लादे मिट्टी मेरे शहर की हवा में उछाल उसे उड़ाँऊ,
तब शायद इस पत्थर से बेरंग शहर में थोड़ा रंग में भर पाँऊ

– मुक्ता द्विवेदी

कर्म और फल

गुरु अपने शिष्यों को कर्म और कर्म में फल की अनिवार्यता बता रहे थे। गुरु का कहना था कि कर्म कभी निष्फल नहीं होता। यदि कर्म हुआ है तो उसका फल अवश्य प्राप्त होगा। संत ने चेताया कि कर्म में प्रवृत्ति केवल कर्तव्य भाव से होनी चाहिए, फल की लालसा में नहीं।

कर्म चाहे सफल हो या असफलय कृत कर्म का फल अवश्य प्राप्त होगा। जहाँ सत्कर्मों का सुफल होगा वहीं दुष्कर्मों से दुष्फल हाथ लगेगा।

एक शिष्य ने जिज्ञासा प्रकट की "गुरुदेव, यदि मैं सामने वाली पहाड़ी को ठेल कर हटाने का कर्म करूँ तो क्या पहाड़ी हट जाएगी? क्या मेरा यह कर्म निष्फल नहीं होगा?"

गुरु मुस्कराते हुए बोले "मेरे हाँ या ना कहने से तुम्हारी जिज्ञासा संतुष्ट नहीं होगी। पहाड़ी सामने है, तुम कर्म करने को प्रस्तुत हो। स्वयं परीक्षण कर लो। इस महत्कार्य कार्य को फलित होने के लिए मैं छह माह की अवधि निर्धारित करता हूँ।"

शिष्य प्रणाम करके जाने लगा। एकाएक गुरु ने उसे रोक कर उससे मैदान में पड़े लकड़ी के एक बड़े गट्ठर को उठा कर अंदर रखने को कहा।

शिष्य पूरा बल लगा कर उस भरी लकड़ी के गट्ठर को उठाना तो दूर हिला भी नहीं सका।

गुरु "कोई बात बात नहीं उसे वहीं पड़ा रहने दो।"

छः माह बाद शिष्य आया। उसके चेहरे पर निराशा के भाव थे। उसने कहा "गुरुजी, मैंने छः महीने तक पहाड़ी को धकेलने का कर्म किया, किन्तु पहाड़ी रत्ती भर भी नहीं हिली। मेरा कर्म व्यर्थ हो गया।"

गुरु ने शिष्य से कहा "इसके पहले कि हम इस पर चर्चा करें, तुम उस लकड़ी के गट्ठर को भीतर रख आओ।"

छह महीने से वहीं पड़े गट्ठर की लकड़ियाँ वर्षा से भीग कर काफी भारी हो चुकीं थीं। फिर भी उस शिष्य ने बहुत आसानी से वह गट्ठर उठा कर भीतर रख, गुरु के समक्ष उपस्थित हो गया।

उसने देखा कि गुरु सहित सभी के चेहरा पर स्मित मुस्कान थी।

गुरु "यह सत्य है वत्स, कि छः महीने के निरंतर कर्मसे पहाड़ी तो रत्ती भर भी नहीं हिली। किन्तु निरंतर श्रम करने से तुम्हारे शरीर में इतनी शक्ति आ गई कि जिस लकड़ी के ढेर को तुम पहले हिला भी नहीं सकते थे, उसे आज तुमने सरलता से उठा लिया। शक्ति में इतनी अद्‌भुत वृद्धि ही तुम्हारे छः माह के कर्म का फल है ।"

एक दूजे के लिए

–डा कीर्ति अवस्थी
राय बरेली
प्रवक्ता सेंट एग्निस
कालेज, लखनऊ

मैं कॉन्फ्रेंसहॉल की तरफ जाने के लिए लिफ्ट में चढ़ा था कि अचानक वहाँ खड़ी एक महिला पर मेरी नजर रुक गई। मैं मुस्करा दिया।

'शिखा! तुम यहाँ कैसे?' मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'एक कांफ्रेंस में शामिल होने के लिए आई हूँ और जहाँ तक मेरा ख़्याल है, तुम भी इसी वजह से आए होगे।'

'हाँ। बैंक्विट हॉलथ्री। क्या तुम्हारा भी?'

'हाँ, मुझे लगा लेट न हो जाए इसीलिए थोड़ा जल्दी निकल आई। चलो फिर साथ ही चलते हैं। फोर्थ फ्लोर पर है।'

'नहीं तुम जाओ, मुझे सेकेंड फ्लोर पर थोड़ा काम है। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।'

'क्या काम है?'

'कुछ नहीं, तुम चलो मैं आता हूँ।'

'तुम्हारी आदत अभीतक नहीं बदली। अब तो मेरा कोई हक भी नहीं तुमसे जबरदस्ती करने का, उससे तो तुम आठ साल पहले ही आजाद हो चुके हो। खैर, काम निपटा कर पहुँचना।'

तब तक सेकेंड फ्लोर आ गया। मैं लिफ्ट से निकलकर कमरों की ओर चल दिया क्योंकि मेरा एक मित्र इसी होटल में आकर रुका है। संयोग से मुझे आज आना ही था, तो सोचा क्यों न उससे मिल लूँ। लेकिन शिखा के अचानक यहाँ मिल जाने पर मन कुछ अजीब–सा हो गया। उसके शब्द अभी तक कानों में गूँज रहे थे–'अब तो मेरा कोई हक भी नहीं तुमसे जबरदस्ती करने का, उससे तो तुम आठ साल पहले ही आजाद हो चुके हो।'

'आजाद' मतलब आठ साल पहले तक वह मेरी पत्नी थी पर अब कागजों पर मेरा उससे कोई संबंध नहीं। वह तो इस हद तक आत्मनिर्भर है कि मुझसे गुजारा–भत्ता भी नहीं लिया। मैंने भी इन सालों में उसकी कोई खोज–खबर लेनी जरूरी नहीं समझी। कभी–कभी मुझे लगता है कि हमारा रिश्ता नाहक ही टूटा। उसके बाद हम कभी नहीं मिले। मिल भी तो आज

अचानक इस तरह से। इन आठ सालों में न मैं दूसरी शादी कर पाया न ही किसी और को प्यार। कुछ अजीब ही हालत रही मेरी। रिश्ता टूटने पर मैं थोड़ा दुखी जरूर था पर इतना नहीं कि अपनी जिंदगी आगे चलाने में नाकाम रहता। शायद मेरे लिए वही सही था। मगर आज उससे यूँ अचानक मिला, तो भीतर का प्यार जाग गया। मुझे लगा कि शायद इतने साल बाद फिर से एक हो जाने के लिए ईश्वर ने कोई षड्यंत्र रचा है। अगर ऐसा है, तो मैं कोशिश करूँगा कि सभी बातें भूल कर नई शुरुआत की जाए। लेकिन अगर इन सालों में कोई उसकी जिंदगी में आ चुका होगा, तो यह मुमकिन नहीं। चलो, अभी मिलना तो है ही, तब पूछ लूँगा। यह सब सोचकर कुछ अच्छा लगा और मैं मुस्करा दिया।

इस सब के बावजूद मैंने अपने मन में जिस हिंदी फिल्म जैसा अंत गढ़ा है, पता नहीं वह कितना सही होगा। मैंने पाया कि मैं सेकेंड फ्लोर के खूबसूरत हॉल में पहुँच चुका था। मैंने एक वेटर से रूम नंबर 203 पूछा और उस दिशा में बढ़ गया।दरवाजा खटखटाया तो मेरे मित्र ने मुस्कराते हुए दरवाजा खोला–

'आओ यार बड़ी देर कर दी।' उसने पूछा ।

'हाँ निकला तो जल्दी ही था लेकिन यहीं होटल की लिफ्ट में शिखा मिल गई, तो बात करने में देर हो गई।' मैंने बिना किसी भूमिका के कहा।

'अच्छा! शिखा से बातें... बातें या झगड़ा।' उसने व्यंग्य करते हुए कहा।

'नहीं, झगड़ा नहीं बातें । क्योंकि वो भी उसी कॉन्फ्रेंस के लिए आई है, जिसके लिए मैं आया हूँ। मैंने उससे कहा सेकंड फ्लोर पर जाना है, तो वह कारण पूछ बैठी। मैंने नहीं बताया, तो कहने लगी अब तो मेरा भी हक नहीं रहा तुमसे कुछ पूछने का।' मेरी आवाज में हताशा थी।

'तुम इतनी निराशा से क्यों बोल रहे हो? अब तुम फ्री हो, तलाक हो चुका है, तुम्हारी अपनी जिंदगी है और हर बात की जवाबदेही भी अब नहीं बनती। अगर इतने दिनों बाद मिलकर तुम्हारे मन में अचानक उसके लिए प्यार उमड़ रहा है। यह प्यार तब कहाँ था मेरे दोस्त, जब तुम्हारा रिश्ता खत्म हुआ?' उसने थोड़ा उत्तेजित होते हुए कहा।

'यार हर रिश्ता तो बनाए रखने की नीयत से ही इंसान बनाता है लेकिन अगर कुछ गलत हो जाए और रिश्ता न चले, तो मान लेना चाहिए कि किस्मत रूठी है।' मैंने कहा

'अच्छा तो तुम यह कहना चाहते हो कि वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना नहो मुमकिन, उसे एक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा।'

'हाँ, शायद यही सही है।'

'लेकिन मेरे भाई, यह बात तो तुम्हारे रिश्ते में बिल्कुल सही नहीं है क्योंकि जहाँ तक मुझे याद है तुमने अपने तलाक के बाद कभीभी शिखा से बात नहीं की और उसने भी कभी ऐसी कोशिश नहीं की। अब यह बताओ कि इसमें कौन सा खूबसूरत मोड़ है।'

'इस रिश्ते का यही खूबसूरत मोड़ है कि हम दोनों ने कभी एक दूसरे से बात नहीं की वरना सिवाय शिकायतों के कुछ न होता। कभी–कभी जिंदगी में सुकून के लिए हमको हमारी वह चीज छोड़नी पड़ती है, जो हमें सबसे अजीज हो।'

'अजीज तकलीफ नहीं देते हैं दोस्त।' उसने कहा ।

'देतें हैं, बहुत देतें हैं । लेकिन हम खुद को रोक नहीं सकते उसे चाहने से, प्यार करने से।शिखा और मेरा रिश्ता भी कुछ ऐसा ही था, शिखा वह फूल है, जो खूबसूरत है लेकिन दुर्गंध से भरा और इसी वजह से मुझे न चाहते हुए भी उसे छोड़ना पड़ा।' मैंने लंबी साँस खींचते हुए कहा।

'अच्छा, दुर्गंध से भरा। अगर वह आज तुम्हारी बात सुन ले, तो मानहानि का दावा ठोंक दे।' उसने हँसते हुए कहा।

'हाँ, शायद तुम सही कह रहे हो क्योंकि उसे कभी अच्छा नहीं लगा कि कोई उसकी कमी निकाले। मैं चाहता तो नहीं था लेकिन जब आप किसी के बहुत करीब होते हैं तो वह करीबी कभी–कभी घुटन बन जाती है। मैंने शिखा से शादी करके अपना इतना साधारणीकरण कर लिया कि धीरे–धीरे उसे ऐसा लगने लगा कि मैं पुरुषत्व से हीन हूँ हालाँकि ईमानदारी से कहूँ, तो आज भी मन में अपने रिश्ते को बनाने का ख्वाब देखता हूँ लेकिन जानता हूँ कि ऐसा होगा नहीं।'

'तुम्हें लगता है कि शिखा तुम्हारे पास लौटेगी?'

'नहीं, कभी नहीं क्योंकि हम दोनों का रिश्ता जब टूटा था, उस समय इतनी कड़वाहट भर गई कि एक दूसरे का मुँह देखना भी हमने गवारा नहीं किया।तब से न मैंने उसे खोजने या देखने की कोशिश की । न ही उसने।

'तुम दोनों के बीच मुद्दे क्या थे, जो ऐसा हो गया?'

'हर छोटी–छोटी बात एक मुद्दा बन जाती थी और बताया तो मैंने अपना साधारणीकरण कर लिया था।शिखा के अहम का शिखर इतना ऊँचा था कि सोना–जागना, खाना–पीना, ऑफिस, मेरे दोस्त हर एक चीज मुद्दा बन जाती। वो उत्तेजित होकर चीखने लगती। मुझे मेरी हर बात के लिए नीचा दिखाती। उसकी हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं उससे माफी माँग कर उसे ही सही मानूँ।'

'यार, यह तो सरासर हुक्म चलाने वाला एटीट्यूड है। हस्बैंड आखिर हस्बैंड होता है, नौकर नहीं। औरतों का दिमाग इसी वजह से खराब होता है। अगर लगाम ढीली छोड़ो तो सीधे सिर पर बैठ जाती हैं। वैसे एक बात तो है, शिखा का दिमाग तुम्हारी वजह से ही चढ़ गया। बड़े आए सीधे बनने वाले!'

'जरा कायदे से बोलो, वह पत्नी है मेरी।' मैंने कठोर स्वर में कहा।

'है नहीं, थी । और वैसे भी इस तरहके मर्द के साथ कौन सी औरत रहेगी, जिसमें मर्दानगी नाम की चीज न हो।'

'क्या मतलब?' मैंने पूछा

'अरे जो मर्द बीवी की जरा–जरा सी धमकियों से डर जाए, वह मर्द नहीं मर्द के नाम पर धब्बा है। और ऐसे आदमी की बीवी तो उसे छोड़ ही देगी। तुम कहते हो कि तुम बहुत सीधे हो तो बहुत अच्छे हो। देख लो अपनी सीधाई का नतीजा बीवी भाग गई छोड़कर।'

'यार, तुम मेरी बेइज्जती कर रहे हो। अगर कोई पुरुष स्त्री की हर बात माने तो इसमें खराबी क्या है? मैंने शिखा की हर बात मानी क्योंकि मैं उसे बराबरी का दर्जा देना चाहता था।'

'बराबरी? वह तो बराबरी से भी, ऊपर हो गई।'

'मुझे एक बात बताओ क्या हर बार दबना या झुकना स्त्री को ही चाहिए? पुरुष अगर झुके तो खराबी है।'

'झुके तो तुम, इतना झुके कि तुम्हारी बीवी तुम्हारे सिर पर बैठ गई। तुम जिस बराबरी की बात कर रहे हो, वह रही कहाँ? वह अपने अहंकार में ऊपर और ऊपर चली गई और तुम उतना ही नीचे रह गए और महाशय! झुकना, समझौता, सहमति यह दोनों पक्षों की बातें हैं। कोई एक इसमें कुछ नहीं कर सकता। तुम बार–बार बराबरी की बात करते हो। क्या पति–पत्नी का रिश्ता दोनों की आपसी सहमति का सम्बन्ध नहीं है? तुम्हें लगा कि तुम अकेले ही बड़े विनम्र बनकर यह रिश्ता संभाल लोगे, देख लो उसका अंजाम।

आज तुम दोनों को अलग हुए आठ साल हो गए।

'हाँ । यह सही है कि मेरा रिश्ता नहीं चला लेकिन मैं इस बात से संतुष्ट हूँ कि मैंने कभी भी शिखा से उसकी आजादी नहीं छीनी और मेरे–तुम्हारे बीच का यह मुद्दा तो बहस बन गया। मैं आया था अपने दोस्त से मिलने लेकिन यहाँ तो वाद–विवाद प्रतियोगिता का प्रतियोगी मिल गया।'

'तुम मेरी बात गलत समझ रहे हो यार। मेरा तुमसे कौन सा विवाद। मैं तो बस तुम्हारे नजरिए में बदलाव लाने की कोशिश कर रहा हूँ।'

मैं अचानक मुस्करा दिया और घड़ी की ओर देखने लगा। वह मेरी ओर देख कर बोला, 'यही मुस्कराहट है तुम्हारे दुखों का कारण। समझ नहीं आता कि तकलीफ में हो या नहीं।'

'अच्छा, अब मैं चलता हूँ मीटिंग का समय हो रहा है।' मैंने एकदम से खड़े होते हुए कहा ।

'हाँ–हाँ! जाओ, लेकिन वहाँ कोई इंतजार नहीं कर रहा है।'

मैं उठकर निकला और लिफ्ट से बैंक्विट हॉल थ्री पहुँच गया। शिखा आगे की पंक्तियों में कहीं होगी। मुझे अटेंडेंट ने मेरी जगह बैठाया। कॉन्फ्रेंस खत्म होने पर शिखा मेरे पास आई।

'तुम किस समय आए?'

'वापस आ गया था समय पर।'

'चलो बाहर कहीं कुछ खाते हैं। यहाँ वेज–नॉनवेज एक साथ हैं। हम रिसेप्शनिस्ट से पूछ कर वहाँ के रेस्टोरेंट में चले गए।

'क्या हाल–चाल है?'उसने बिना किसी भूमिका के पूछा।

'ठीक हूँ। तुम बताओ?'

'मैं भी ठीक हूँ।'

मेरे मन में आ रहा था कि उससे कहूँ कि जैसे फिल्मों में बिछड़ने के बाद पति–पत्नी एक हो जाते हैं वैसे ही अब तुम्हें भी घर लौट आना चाहिए। उसे वापस लाना था तो जाने क्यों दिया? मन में एक विद्रोही स्वर गूँजा। 'अभी अगर तुम कुछ ऐसा बोले तो झिड़क दिए जाओगे यह मत भूलना।' एक दूसरी आवाज का हस्तक्षेप। मानो मन, मन न हुआ विचारों का अखाड़ा हो गया हो। हर विचार अपनी ज्येष्ठता का आभास करा रहा था।

'क्या सोच रहे हो?'

'कुछ नहीं मीटिंग के बारे में।' मैंने झूठ बोला।

'ओह! मुझे लगा तुम कहीं मुझे वापस ले जाने के बारे में तो नहीं सोच रहे हो।'

'अरे! नहीं।' मैं खिसियाई सी हँसी हँसा।

'हाँ सोचना भी मत क्योंकि मैं बहुत आगे आ चुकी हूँ।'

'हूँ!'मन में आवाज आई कि पूछूँ 'आगे आने' का क्या मतलब है लेकिन हिम्मत नहीं कर पाया।

तब तक वेटर खाना ले आया। शिखा तरह–तरह की बातें कर रही थी। मुझे ऐसा एहसास हो रहा था कि जैसे मैं किसी कलीग के साथ बैठा हूँ जिससे एक दूरी बनाए रखनी थी। खाने के बाद मैंने विदा ली। न उसने मेरा नंबर माँगा न मैंने उसका। होटल से निकल कर ड्राइवर से चलने को कहा। गाड़ी चल दी, ठीक उसी समय एफ. एम. पर एक गीत बज उठा, 'उसको कसम लगे, जो बिछड़ के इक पल भी जिये, हम बने तुम बने, इक दूजे के लिए। मैं मुस्कुरा दिया।

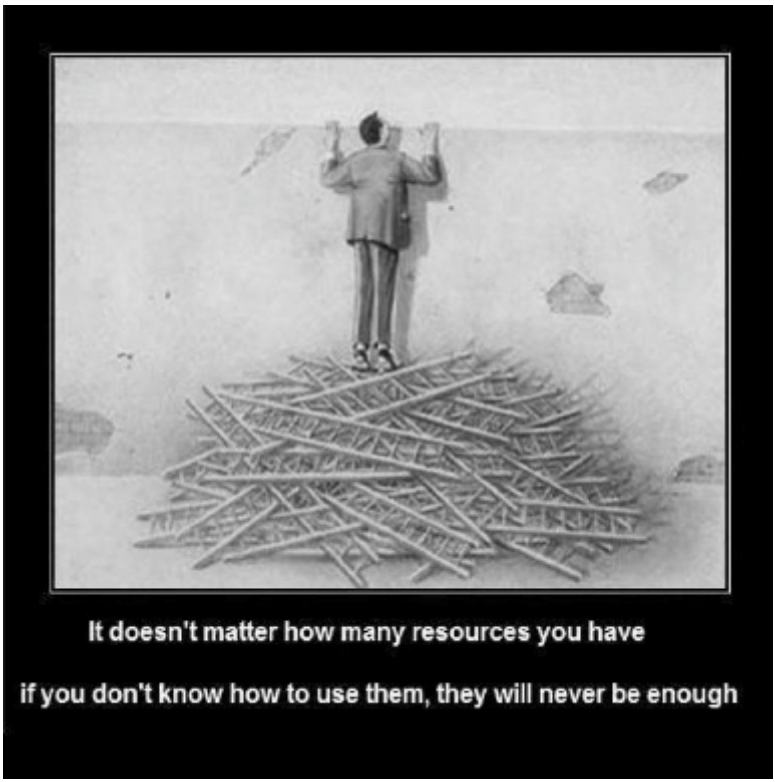

Supreme Court judgement supports the idea of editor 'Kaanyakubj Vaani'

In March 2014 in magazine "KANYAKUBJ VAANI" editor wrote in an article on 'Paternity or पितृत्व While discussing 'Legitimacy' he pointed out that the ancient Hindu Law and Sect. 112 of Indian Evidence Act are similar. But in modern era of DNA testing, the things have changed. Now the biological father can be prosecuted under section 497.

डी एन ए टेस्टिंग व्यवहारिक होने के बाद की स्थिति

डी एन ए टेस्टिंग के बाद चरित्रहीनता के आधार पर पति को तलाक मिल सकता है तथा जैविक पिता का धारा 497 के अंतर्गत Infidelity का केस चल सकता है। कानून में व्यवस्था है कि ऐसी परिस्थिति में महिला को 'abbetter' होने का अपराधी नहीं माना जायेगा। वर्तमान कानून में यह व्यवस्था सम्भवतः इसलिये है कि अभी भी पत्नी को पुरूष की सम्पत्ति माना जाता है, अतः ऐसी घटना को घर के अन्दर घुस कर चोरी के समकक्ष माना गया। परन्तु अब नारी अपने को पुरूष के बराबर मानती है सम्पत्ति नहीं। इन परिस्थितियों में विधि निर्माताओं का इस विषमता पर ध्यान देना वांछनीय है।

After an interval of three years only in, September 2017, in one of the petition the Honourable Supreme Court observed- "We declare Section 497 IPC and Section 198 of Cr. PC. dealing with prosecution of offences against marriage as unconstitutional," said Justice Misra, who wrote the judgement for himself and Justice Khanwilkar, adding that any provision treating women with inequality is not constitutional and it's time to say that "husband is not the master of woman".

Editor Vaani does not boast that his article had in any role in the above quoted ruling of Honourable Supreme Court. This article only underlines the fact the editor's opinion was in concurrence of same public opinion, which is now indicated by highest court of India.

कीर्ति सदैव कुवाँरी ही रहती है
स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी

रामजी मिश्रा

कीर्ति को वरण करने की इच्छा रखने वाले को वह कभी भी प्राप्त नहीं होती। निष्काम कर्म योग की साधना करने वाला ही उसे पाता है, परन्तु कैसा विचित्र संयोग है कि वह उसे वरण करना नहीं चाहती। स्वामी विवेकानन्द, समर्थ गुरु रामदास, स्वामी रामतीर्थ आदि शंकराचार्य सभी ने अवधूत स्थित को प्राप्त किया तब उन्हें पद एवं रुतबे की जरूरत ही न रही, कुछ ऐसा ही व्यक्तित्व स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरिजी का था।

27–28 वर्ष की युवा अवस्था में ही शंकराचार्य की पदवी पाने वाले अंबिकादत्त पाण्डेय का नाम उनके मार्गदर्शक सन्त स्वामी वेदव्यासानन्द सरस्वती जी ने बदला तब से उनका नाम स्वामी सत्यमित्रा नन्द गिरि पड़ा और तभी से इस सन्त ने अपना जीवन लोक कल्याण के लिये समर्पित कर दिया।

लगातार 40 वर्षों तक बद्रिकाआश्रम की भानपुरा उपपीठ पर शंकराचार्य पद पर सुशोभित रहकर वह वर्तमान में देशधर्म और लोकधर्म के साथ सेवाधर्म की साधना राघव कुटीर (हरिद्वार) में रहकर कर रहे थे। आपका जन्म 1932 को आगरा (उ.प्र.) के पास कहीं हुआ था।

मई 1983 में स्वामीजी ने भारत माता मन्दिर की स्थापना की थी। 15 मई 1983 को जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने किया था। 55 फुट ऊँचा यह मन्दिर रामायण युग से आजादी के काल तक की सजीव झाँकियों से सुसज्जित है। प्रथम तल पर भारत माता की भव्य मूर्ति है, अन्य मंजिलों पर सूरदास, मीरा, सावित्री, मैत्रीय आदि मन्दिर है। चौथी मंजिल पर संत मंदिर में जैन, सिख, बौद्ध धर्म के महान संत चित्रित हैं। पाँचवी मंजिल पर भारत के सह–अस्तित्व के साथ–साथ विभिन्न धर्मों के प्रतीक चिन्हों का चित्रण है। छठी मंजिल पर शक्ति के रूपों का दर्शन, सातवी मंजिल पर भगवान विष्णु के विभिन्न रूपों का दर्शन होते हैं। आठवीं मंजिल पर भगवान भोलेनाथ का मन्दिर है, जहाँ से हिमालय, हरिद्वार तथा सप्त सरोवर की विहंगम छटा दिखती है। 26 जून 2016 को, उन्हें राघव कुटीर भारत माता मन्दिर हरिद्वार में समाधि दी गयी। ऐस युगपुरुष को शत्–शत् नमन।

कोरोना वायरस

वायरल रोग होय कोरोना।
छींकने खाँसने से फैले,
हमें नहीं बस धीरज खोना।।1

भाई बहन पाँच छः इसके,
बचके रहना तुमको इससे।
फैलता है पशु–पक्षियों से,
ताप सहन ना होता इससे।।2

होय जहाँ भी इसे घेर लो,
उलट पलट कर इसे फेर लो।
दवा दर्द की पहले देना,
निमोनिया पर आँख तरेर लो।।3

पहले है सैंतीस में दिखा,
अलग तरह का साठ में दिखा।
कई उप जातियों के कारण,
कहते 'वुहान' जो आज दिखा।4

पानी अधिकाधिक है पीना,
गर आगे तुमको है जीना।
नींबू ,संतरा, मुसम्मी साथ,
लें सलाह गर रीना–झीना।।5

मुँह ढककर ही लेना साँस,
हो भले सुरक्षा तेरे पास।
जहाँ होय शक वहाँ न जाना,
भले वहाँ हो तेरा खास।।6

इसे मांस भी है फैलाता,
ठण्डा पेय नहीं फैलाता।
अनजाने अनखुले पृष्ठ को,
बारम्बार सामने लाता।।7

स्तनपायी आते चपेट में,
दस्त भी ले लेता चपेट में।
वायरल तीव्रता से कभी,
होता दिखता असर पेट में।।8

सबसे पहले चीन में दिखा,
फिर एशियन देशों में दिखा।
कई देशों को रौद्र रूप के,
दर्शन भी है वह करा चुका।।9

तीव्र, शीघ्र यदि तंत्र प्रभावित,
मृत्यु मरीज की सम्भावित।
दस्त, बुखार व नजला दिखता,
होता वह जो है प्रस्तावित।।10

लोपावीर रिटोनावीर,
बाहर से तो दिखते वीर।
अंदर सिद्ध करें न जब तक,
कैसे बोल दें अपने तीर।। 11

सूचना के अनुसार
मृत – करीब1500
प्रभावित – करीब 8000
मुख्य रूप से चीन व दक्षिण एशिया में

लेखक : –डा सुभाष गुरुदेव

संपादकीय नोट :– हम आतंकित हो उठे हैं कि भयानक कोरोना वायरस से पिछले दो दिनों में, विश्व में प्रतिदिन 25 लोग मर रहे हैं। विडम्बना है कि हम ध्यान नहीं देते कि केवल भारत में हर घंटे 17 व्यक्ति रोड एक्सीडेंट और हर मिनट एक व्यक्ति टी बी से मर रहा है।

साइकिल व छात्रवृत्ति पाने वाली छात्राएं-

साक्षी मिश्रा कक्षा vii, इटौंजा	साइकिल
प्रेरणा मिश्रा, कक्षा xii, माध्यमिक विद्यालय आर.ए. बाजार, लखनऊ	साइकिल
गौरी अवस्थी viii सेंट जोसेफ स्कूल राजाजीपुरम	साइकिल
प्रीति उपाध्याय कक्षा ix दयानन्द कालेज लखनऊ	साइकिल
अनन्या बाजपेयी कक्षा vii रायन कालेज रायबरेली	साइकिल
आराधना मिश्रा बी.एससी. i रजत डिग्री कॉलेज, कमता, लखनऊ	साइकिल
निधि दीक्षित कक्षा vi सेंट पीटर स्कूल, रायबरेली	साइकिल
संस्कृति मिश्रा कक्षा viii पी.एस.ए.एस. इंटर कॉलेज खैराबाद सीतापुर	साइकिल
शालिनी मिश्रा कक्षा xii पी.एस.ए.एस. इंटर कालेज, खैराबाद, सीतापुर	साइकिल
गौरी अवस्थी कक्षा viii, सेंट जोसेफ स्कूल, राजाजी पुरम, लखनऊ	साइकिल
प्रीति उपाध्याय कक्षा ix, दयानन्द कालेज, लखनऊ	साइकिल
आयुषी तिवारी कक्षा xi यशोदा रस्तोगी गर्ल्स कालेज लखनऊ	रु. 3500=00
लक्ष्मी शुक्ल कक्षा xii दयानन्द कालेज लखनऊ	रु. 3000=00
कीर्ति त्रिवेदी क्षा x पी.एस.ए.एस. इंटर कालेज खैराबाद, सीतापुर साल की छात्रवृत्ति	रु. 4000=00

सहयोग के लिए हम जिनके आभारी हैं

1.	श्री गंगा प्रसाद तिवारी	रु. 6000.00
2.	ब्रिग. सीतांशु मिश्रा स्मृति पिता स्व. पं आर के मिश्रा 'मान भाई' रायबरेली	रु. 5000.00
3.	श्रीमती मीनू (आशा) द्विवेदी	रु. 5000.00
4.	श्री विमल जेटली	रु. 5000.00
5.	श्रीमती गोविंद शरण निगम अपने पति की स्मृति में	रु. 5000.00
6.	डा आर के मिश्रा स्मृति पुत्री स्व. कु. सोनल मिश्रा	रु. 3500.00
7.	श्रीमती शैल मिश्रा स्मृति पति स्व. जी मिश्रा	रु. 3000.00
8.	श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति मातामह स्व० रायबहादुर उदितनरायन पाठक आफ सिसेंडी	2500.00
9.	श्रीमती दिव्य बाजपेयी स्मृति माता, स्व० शैलेन्द्र कुमारी शुक्ला, नाटौर	रु० 2500.00
10.	श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति पिता स्व. पं ज्ञानेन्द्रप्रसाद शुक्ला	रु० 2500.00
11.	श्री आशुतोष बाजपेयी स्मृति माता, स्व. विनोदिनी बाजपेयी	रु० 2000.00
12.	श्री आशुतोष बाजपेयी स्मृति पिता स्व. पं उमाशंकर बाजपेयी	रु० 2000.00
13.	श्री अखिलेश पाठक, पाठक गंज, महिलाबाद, लखनऊ	रु. 2000.00
14.	डा डी एस शुक्ला स्मृति मौसी स्व. उर्मिला मिश्रा	रु. 2000.00
15.	श्रीमती मनोरमा तिवारी स्मृति पुत्री स्व. डा अर्चना तिवारी	रु. 1000.00
16.	कु. प्रेमप्रकाशिनी मिश्रा स्मृति पिता स्व. पं जयशंकर मिश्रा	रु. 1000.00
17.	श्रीमती माधुरी शुक्ला स्मृति पुत्र स्व. ज्योतिर्मय	रु. 2000.00

होली मिलन समारोह 2020 को मुख्य अतिथि के कर कमलों से मंच पर वितरित पारितोषिक

1. स्व. श्री लज्जा राम बाजपेई एवं स्व. श्रीमती बिन्देश्वरी देवी पारितोषिक प्रदत्त पुत्र श्री नवीन चन्द्र बाजपेई (आई. ए. एस. रिटायर्ड), कु. निधि शुक्ला पुत्री श्री सोहन लाल शुक्ल, कक्षा–7, बी.एस.एन.वी. जी.आई.सी., चारबाग, लखनऊ। — रु. 500/–
2. स्व. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक I प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जय शंकर त्रिवेदी, कु. दृष्टि मिश्रा पुत्री श्री विनय मिश्र, कक्षा–8, बी.एस.एन.वी.जी.आई.सी., चारबाग, लखनऊ। — रु. 500/–
3. स्व. श्रीमती रामा देवी (मातृतुल्य भाभी जी) पारितोषिक I प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र, कु. समीक्षा शुक्ला पुत्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल, कक्षा–8, बी.एस.एन.वी.जी.आई.सी., चारबाग, लखनऊ। — रु. 500/–
4. स्व. श्रीमती रामा देवी (मातृतुल्य भाभी जी) पारितोषिक II प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र, कु. अनुष्का मिश्रा पुत्री श्री चन्द्र भूषण मिश्र, कक्षा–8, बी.एस.एन.वी.जी.आई.सी., चारबाग, लखनऊ। — रु. 500/–
5. स्व. श्रीमती विद्येश्वरी द्विवेदी पारितोषिक प्रदत्त पति डॉ. सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी, कु. अनशी पाण्डेय पुत्री स्व. मदन गोपाल पाण्डेय, कक्षा–9, सेन्ट मैरी स्कूल, पारा रोड, राजाजीपुरम्, लखनऊ। — रु. 1100/–
6. न्यायमूर्ति स्व. पं. जयशंकर त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त न्यायमूर्ति श्री दिनेश कुमार त्रिवेदी (अ.प्र.), कु. प्रगति त्रिपाठी, पुत्री निर्मल त्रिपाठी, कक्षा–8, खुनखुन जी गर्ल्स इंटर कॉलेज, लखनऊ। — रु. 1000/–
7. स्व. श्रीमती रामा देवी (मातृतुल्य भाभी जी) पारितोषिक III प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र, कु. यति पाण्डेय पुत्री स्व. मदन गोपाल पाण्डेय, कक्षा–7, सेन्ट मैरी स्कूल, पारा रोड, राजाजीपुरम्, लखनऊ। — रु. 500/–
8. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II प्रदत्त न्यायमूर्ति स्व. पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. मनाली बाजपेई, कक्षा–10, कस्तूरबा बालिका विद्यालय, 16 शिवाजी मार्ग लखनऊ। — रु. 500/–
9. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक I प्रदत्त न्यायमूर्ति स्व पं. जयशंकर त्रिवेदी, कु. प्रतिमा बाजपेई पुत्री अनिरुद्ध — रु. 500/–

बाजपेई, कक्षा–11, कस्तूरबा बालिका विद्यालय, 16 शिवाजी मार्ग, लखनऊ।

10. ब्रिगेडियर स्व. छंगा लाल पाण्डेय पारितोषिक, कु. आकांक्षा तिवारी पुत्री पुनीत तिवारी, कक्षा–बी.काम, जयनारायण पी.जी. कालेज, लखनऊ। रु. 2100/–

11. स्व. श्री समीर मिश्र पारितोषिक प्रदत्त श्रीमती विमला मिश्रा, विवेक तिवारी पुत्र श्री पंकज कुमार, कक्षा–11, बी. एस.एन.बी. इंटर कॉलेज, लखनऊ। रु. 750/–

12. स्व. श्री संगम प्रकाश बाजपेई पारितोषिक प्रदत्त पत्नी श्रीमती मंजू बाजपेई, कु. निहारिका मिश्रा, पुत्री श्री वेदरत्न मिश्र, कक्षा–बी.ए., नारी शिक्षा निकेतन पी.जी. कॉलेज, कैसरबाग, लखनऊ रु. 500/–

13. स्व. श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त न्यायमूर्ति स्व. पं. जय शंकर त्रिवेदी, कुशाग्र मिश्र पुत्र श्री पंकज मिश्र कक्षा–12, संत जेवियर इंटर कॉलेज, बख्शी का तालाब, लखनऊ। रु. 500/–

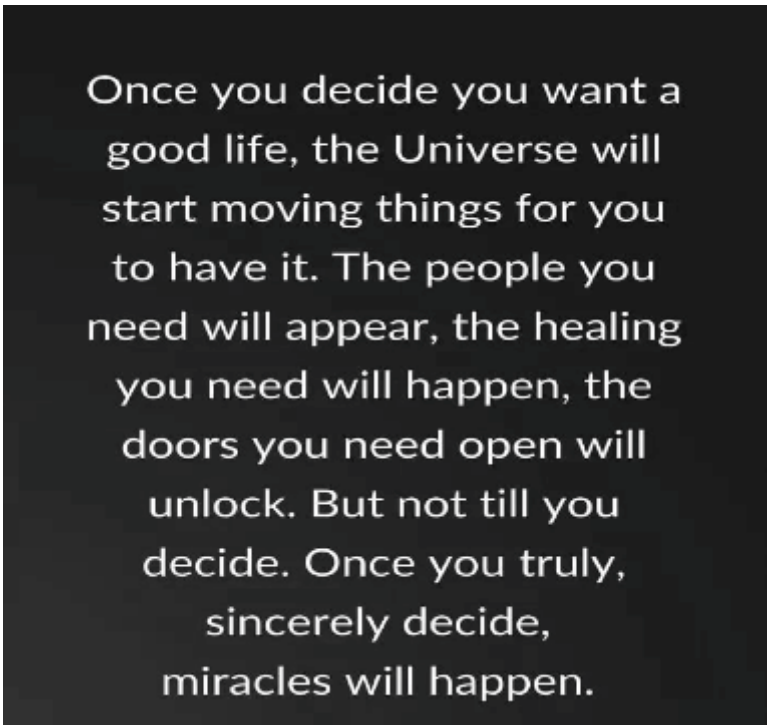

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

अध्यक्ष

न्यायमूर्ति डी0के0 त्रिवेदी

वरिष्ठतम सलाहकार

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

डा0 आर0 के मिश्रा
आर्थो सर्जन

उपाध्यक्ष

निषीथ द्विवेदी
चार्टर्ड एकाउंटेड

उपाध्यक्ष एवं सम्पादक

डा0 डी0 एस0 शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सचिव

आर. पी. अवस्थी
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए0 के0 त्रिपाठी
एडवोकेट

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

उप मंत्री

के0 एस0 दीक्षित
आडीटर

सदस्य

राकेश शुक्ला
जर्नलिस्ट

सदस्य

डा. वी.के. मिश्रा
आई सर्जन

सदस्य

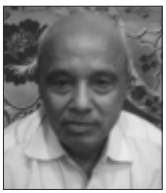

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सदस्य

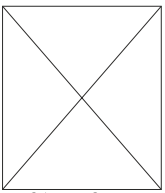

धीरेन्द्र दीक्षित

सह–सम्पादक

डा0 अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

संरक्षक **अनुदान–रु0 10000.00 मात्र**

1. न्यायमूर्ति श्री डी0के0 त्रिवेदी (अव.प्रा.) लखनऊ। 9415152086
2. श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस. 9810722663
3. डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस.
4. श्रीमती रोली तिवारी। 9839882742

वाणी पुत्र **अनुदान रु0 5000.00**

1. डॉ0 यू0डी0 शुक्ल (स्व0), लखनऊ
2. डॉ0 वी0के0 मिश्र, लखनऊ। 9415020426
3. इं0 एम0एन0 मिश्रा, लखनऊ। 9453945400
4. श्री ललित कुमार बाजपेयी, रायबरेली। 9415034368
5. श्री उदयन शर्मा
6. श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली। 9450558657

अति विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु0 3000.00**

1. श्री रामजी मिश्र, सीतापुर। 9450379054
2. इं0 देवेश शुक्ल, लखनऊ। 9450591538
3. आर्किटेक्ट अनुराग शुक्ल, लखनऊ। 9415580950
4. श्रीमती सुमन शुक्ला

विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु0 2000.00**

1. श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी। 9335159363
2. श्री उपेंद्र मिश्र, लखनऊ। 9415788855
3. डा0 आर0एस0 बाजपेयी 9532099838
4. डा0 आर0के0 मिश्र। 9415012333
5. पं0 विनोद बिहारी दीक्षित (स्व0)
6. पं0 विजय शंकर शुक्ल (स्व0) लखनऊ
7. डी0के0 बाजपेयी, लखनऊ। 9621479044
8. प्रो0 पी0पी0 त्रिपाठी, बलरामपुर। 9450551394

9. डा0 प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर। 9919879799
10. डा0 निधि त्रिपाठी, बलरामपुर
11. डा0 बी0एन0 तिवारी, आई0ए0एस0, लखनऊ
12. मीरा शिवेन्दु शुक्ल, कानपुर । 9721756269
13. इं. लक्ष्मी कान्त शुक्ल, लखनऊ। 9839646116
14. पी.के. दीक्षित, लखनऊ। 7905913042, 9838922347
15. विमल कुमार जेटली, लखनऊ– 9451246381

आजीवन सदस्य **अनुदान रु0 1000.00**

1. श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी,लखनऊ। 9307222027
2. पं0 भारतेन्दु त्रिवेदी,सीतापुर। 9451194337
3. श्री राधा रमण त्रिवेदी, सीतापुर
4. श्री के0के0 त्रिवेदी, लखनऊ। 9415020510
5. श्री आर0सी0 त्रिपाठी,लखनऊ। 9415012040
6. श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ। 950666731
7. श्रीमती मीनू द्विवेदी,कानपुर। 9336166380
8. इं0 बसंत राम दीक्षित, लखनऊ। 9335075482
9. श्री सुधीर कुमार पांडे, लखनऊ। 9415521031
10. श्रीमती अर्चना तिवारी, लखनऊ।
11. एडवो0 कु0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, लखनऊ। 9415026087
12. श्री अनिल कुमार त्रिपाठी,सीतापुर। 9415524848
13. ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, लखनऊ। 9454592411
14. श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ। 9455713711
15. डा0 अनुराग तिवारी, कानपुर। 9415735630
16. श्री आर0के0 शुक्ल, लखनऊ। 9919623121
17. डा0 आर0सी0 मिश्र, लखनऊ। 0522 6521353
18. श्री विनोद कुमार मिश्र, उन्नाव। 9919740633
19. श्री राजकिशोर अवस्थी, लखनऊ। 9956084970
20. डा0 पी0एन0 अवस्थी, लखनऊ। 9415308555
21. श्री कौशल किशोर शुक्ल, लखनऊ। 9335968454

22. श्री विनय कुमार शुक्ल,रमा बाई नगर। 9450350878
23. श्री मनी कान्त अवस्थी, लखनऊ । 7607479838
24. श्रीमती अनुराधा शुक्ला, रायबरेली
25. इं. के0बी0 शुक्ल, लखनऊ। 9415004466
26. श्रीमती हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ। 9721975102
27. श्री ब्रह्म शंकर दीक्षित, लखनऊ। 9415049660
28. श्री शंभु प्रसाद पांडे, लखनऊ। 9450717711
29. ई0 एस0एस0 शुक्ल, लखनऊ। 9450761403
30. श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी 9415115951
31. श्री ज्ञान सिंधु पांडे, लखनऊ। 8765531281
32. श्री डी0एन0 दुबे, आई0ए0एस0, लखनऊ। 9415408018
33. श्री श्रीकांत दीक्षित, लखनऊ। 9415766901
34. उमेश चंद्र मिश्र, लखनऊ। 9305245599
35. डा0 ओंकार नाथ मिश्रा, लखनऊ। 9415022957
36. श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर
37. श्री राघवेंद्र मिश्र, लखनऊ । 9918001628
38. प्रफुल्ल कुमार पाठक, रायबरेली । 7388192190
39. श्री आत्म प्रकाश मिश्र, लखनऊ । 9415018200
40. श्री समीर बाजपेयी, इलाहाबाद । 9415306363
41. श्री राकेश कुमार मिश्र, लखनऊ। 9335209896
42. डा0 एस0के0 त्रिपाठी, लखनऊ। 9335917261
43. श्री राजेश नाथ मिश्र, लखनऊ। 9454292354
44. मालती विजय शंकर मिश्रा, लखनऊ। 9336704017
45. राम कृपाल त्रिपाठी, लखनऊ
46. सुरेन्द्र नाथ त्रिवेदी, लखनऊ। 9335230767
47. राकेश कुमार शुक्ल, लखनऊ। 9005409001
48. श्री एस.के. मिश्रा लखनऊ
49. डॉ. परेश शुक्ल, लखनऊ। 9793346656
50. डॉ. एस.एन. शुक्ल, आई.ए.एस., लखनऊ। 9415464288

51. डॉ. राकेश शुक्ला, (न्यूरोफिजीशियन), लखनऊ। 0522 2235581
52. सर्वेश मिश्रा, लखनऊ। 9086761122
53. डॉ. अनुराग दीक्षित 7007904857
54. सुशील दीक्षित 9415025097
55. गंगा प्रसाद तिवारी 8318859466
56. शारदा प्रसाद तिवारी 9305421993

बाहरी प्रांतों के सदस्य

1. डा0 आर0के0 त्रिपाठी, देहरादून, उत्तराखण्ड। 9935478815
2. यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली। 9818434377
3. राम अवस्थी, ट्रांबे, मुंबई। 9820026914
4. नीरज त्रिवेदी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड 9837077546
5. अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर म0प्र0 9300104481
6. अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद। 9407290639
7. वैज्ञानिक अलका दीक्षित, दिल्ली
8. श्रीमती सविता दुबे, धारवाड, कर्नाटक
9. देवेन्द्र कुमार शुक्ला, जयपुर, राजस्थान। 9414075174
10. पं0 शिव शंकर तिवारी, सिकंदराबाद, आंध्र प्रदेश
11. शिशिर कुमार बाजपेई फरीदाबाद हरियाणा 9899041178
12. प्रदीप चंद्र तिवारी, जयपुर। 9414097679
13. डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेई, छतरपुर, मध्यप्रदेश।

विशिष्ठ सदस्य

1. अनामिका शर्मा, नई दिल्ली । 09990455986

दूरस्थ देश के सदस्य

अतिविशिष्ट सदस्य

1. जितेन्द्र पाण्डेय, अफ्रीका 9638145145

आजीवन सदस्य

2. विजय शुक्ला द्वारा गिरीश चन्द्र शुक्ला, सिडनी

साहित्य में समकालीनता और शाश्वतता

– प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

साहित्य में दिक्कालबोध, विशेषतः काल की अवधारणा के दो ध्रवान्त है – एक समकालीनता और दूसरा शाश्वतता। पिछले दो दशकों से समकालीनता का मुद्दा साहित्य–समीक्षा पर हावी रहा है। सर्वत्र प्रासंगिकता की चर्चा होती रही है – एक मुहावरे के तौर पर। किन्तु अब लगता है, प्रासंगिकता से मोहभंग हो रहा है और शाश्वतता की खोज की जाने लगी है। अभी कुछ वर्षों पहले इस शब्द में प्रगतिशील विचारकों को रहस्य–अध्यात्म–दर्शन की गंध आती थी, इसलिए उन्होंने शाश्वतता बोध को प्रतिक्रियावादियों का शब्द घोषित कर दिया था, किन्तु अब स्वयं वे इस शब्द का प्रयोग करने लगे हैं। शायद इसलिए कि समकालीन चिन्तन लेखन साहित्य को स्थायित्व नहीं प्रदान कर पा रहा है। वस्तुतः अपने समय की सीमा में जकड़ा हुआ साहित्य प्रायः अल्पायु रह जाता है क्योंकि समय–संदर्भ के बदलते हो वह कालातीत हो जाता है और सार्वभौम तथा सार्वकालिक चिंतन–संवेदन से वंचित रह जाने के कारण वह बहुत शीघ्र क्षरित हो जाता है। इधर रचनाकारों और समीक्षकों, दोनों ने अनुभव किया है कि कविता की पठनीयता दिनोंदिन कम होती जा रही है। साहित्य हाशिए पर आ गया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कारण अब अक्षर–जगत् संकट में है और इस विश्वविख्यात विभीषिका में साहित्य हमारी दिनचर्या में प्रयोजनीय नहीं रह गया है। इसीलिए साहित्य की अस्तित्व–रक्षा के उद्देश्य से यह आवश्यक हो गया है कि उसे वृहत्तर मानव मूल्यों अर्थात् युगयुगीन संवेदनाओं से समृद्ध किया जाये, ताकि वह उपभोक्तावादी जीवन–दर्शन के क्रूर आक्रमण से बच सके। अब तक हम प्रयोग कौतुक से लालायित रहे है और पश्चिम के कला–करतब को हिन्दी में उल्था करते रहे हैं। हमारी रचनाधर्मिता पर पश्चिमी मतवाद, वहाँ की व्यावसायिक वृत्ति और वहाँ की सनसनीखेज मनोवृत्ति इस तरह हावी हो गयी कि हम भारतीय साहित्य को अपनी भाषिक संस्कृति तथा अपनी धरती की गंध नहीं दे पाए। अस्तित्ववाद, मार्क्स माओवाद क्षणवाद, मृत्युबोध, ऐब्सर्डबोध, अजनबीपन उत्तर आधुनिक आदि–आदि न जाने कितने प्रयोगों की इस चहल–पहल के बावजूद वे भारतीय जनमानस को अपने से बाँध नहीं पा रहे हैं। अब तो पाठक यथार्थ से भी ऊब चला है। शब्दों द्वारा वर्णित यथार्थ एक तो टी.वी. या फिल्मों के दृश्यात्मक यथार्थ के मुकाबले हल्का होता है। दूसरे, वह हमारी संवेदना को

कुंठित करता हुआ प्रकारान्तर से विमानवीकरण कर रहा है। मात्र यथार्थ ही काम्य होता तो अखबार क्या बुरा है? साहित्य में कुछ 'और' चाहिए, मात्र अपराधों की खबर नहीं। साहित्य केवल समसामयिकता में जीवित नहीं रह सकता। उसके लिए वृहत्तर देशकाल अपेक्षित है। अब शाश्वतता की मांग का यही मूल हेतु है।

इस संदर्भ में प्रथम प्रश्न यह उभरता है कि 'शाश्वत' है क्या? अनादि–अनन्त? अजर–अमर? चिरंतन? या कुछ और। वस्तुतः जो एक मानवीय कृत्य है, वह क्या सचमुच शाश्वत हो सकता है? धर्मग्रन्थों की बात भिन्न है। भावोच्छ्वासों के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए उन्हें अपौरुषेय मान लिया गया है। वेद, बाइबिल, कुरान, गुरुवाणी आदि इसीलिए तर्क के परे हैं, किन्तु पराविद्या की स्थिति भिन्न है। शब्द ब्रह्म के बावजूद रचनाकर्म वहाँ एक जैविक क्रिया है, जिसका अपना समाज मनोविज्ञान है। वह शाश्वत नहीं है। हां, अपेक्षाकृत कोई रचना अधिक टिकाऊ हो जाती है। तथ्य यह है कि प्रत्येक कलाकृति की एक आयु होती है। धूमिल को अपने समकालीन कथ्य–शिल्प के कारण दो दशकों की आयु मिली और गोस्वामी तुलसीदास को पाँच सौ वर्षों की। अभी कई शताब्दियों का आयुष्यक्रम और है। भौतिकता का प्रथम उन्मेष उसने झेल लिया है। आगे आध्यात्मीकरण का विस्तार है। फिर भी कालकवलित तो होना ही है। अजर अमर इनमें कोई नहीं है। शाश्वत तो मात्र परमतत्व ही है। प्रसादजी ने ठीक कहा है– 'है परम्परा लग रही यहाँ, ठहरा जिसमें जिनता बल है' अर्थात् जिसमें जितनी धारयित्री शक्ति होती है वह इस प्रचण्ड भौतिक स्पर्धा में उतनी ही देर और दूर तक टिक पाता है। यह कोई लोकोत्तर विधान नहीं है, बल्कि महाकाल की अनुभवगम्य चेतना है। ऐसा देखा जाता है कि हर कृति का एक भाग्य होता है और भाग्योदय का कोई क्षण भी होता है, अन्यथा एक ही तरह के प्रयोग करने वाले दो रचनाकारों में एक प्रतिष्ठित और दूसरा उपेक्षित क्यों रह जाता? प्रचार–प्रसार ही इसका एकमात्र कारण नहीं है। वस्तुतः समय की मांग या वक्त की नब्ज को समझने की आवश्यकता होती है। रचनाकार कभी सप्रयास समय का अनुकूलन करता है और कभी ऐसा निरायास हो जाता है। निष्कर्ष यह है कि शाश्वतता का स्वरूप सदा–सर्वथा संदिग्ध रहा है और रहेगा।

दूसरा प्रश्न समकालीनता के स्वरूप को लेकर है। यह कोई बोध, कोई विचारधारा अथवा मूल्य है या कि कालवाची प्रत्यय है? पिछले दशकों में 'आधुनिकता' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया कि यह वर्तमान की ही तरह मात्र कालखण्ड नहीं है, बल्कि एक दृष्टिबोध है। इधर समकालीनता का आन्दोलन चलाते हुए कुछ समीक्षक इसे भी आधुनिकता का पूरक

युगबोध सिद्ध करने में जुटे हैं। हिन्दी ही नहीं, विभिन्न भाषाओं के सामने आधुनिकता के संदर्भ में एक संभ्रम छाया हुआ है। सर्वत्र उन्नीसवीं–बीसवीं शती के चिंतन, लेखन को आधुनिक काल में रख दिया गया, किन्तु दो सौ वर्षों से उसे दुहराते–दुहराते अब हम ऊब चले हैं। प्रश्न उठ रहा है कि अगले दो सौ वर्षों बाद के चिंतन–लेखन को भी आधुनिक कहा जायेगा अथवा कुछ और? हिन्दी में तो अब ''आधुनिक साहित्य का आदिकाल'' (श्री नारायण चतुर्वेदी) जैसे उपविभाजन भी होने लगे हैं। अंग्रेजी में मॉडर्न के अतिरिक्त कण्टेम्परेरी, अपटुडेट, लेटेस्ट आदि के साथ–साथ अब पोस्ट मार्डनिज्म (उत्तर आधुनिकता) की चर्चा होने लगी है। तात्पर्य यह है कि नए–नए अभिधानों के लिए छटपटा रहे हैं हम।

समकालीनता स्थूल रूप में शाश्वतता का विलोम शब्द है, लेकिन यह कोई वाद न होकर कालखण्ड रूप में ज्यादा प्रचलित है। भले ही छोटे–छोटे कालखण्डों की अपनी कोई निजी चिंतनधारा कभी–कभी उभर आती हो, जैसे साम्प्रदायिकता या 'फण्डोमेण्टलिज्म' को बेअसर करती हुई बहुजन तथा पिछड़े वर्ग की एक प्रतिक्रिया पिछले चुनावों के सवर्ण के विरुद्ध उभरकर आयी। यह दो तीन वर्षों की अर्थात् एक सीमित कालावधि की प्रतिक्रिया है, न कि कोई सुदीर्घ जीवन बोध। समकालीनता का विश्लेषण करने से पूर्व यह निश्चित करना होगा कि सामान्यतः उसकी आयु क्या होती है? या कितनी होनी चाहिए? क्या भारतेन्दु, प्रेमचन्द, निराला आदि को आधुनिक न कहकर अब समकालीन कहना अधिक उपयुक्त होगा? निश्चय ही दोनों शब्दों में अंतर है। मेरे मतानुसार 'समकालीन' के दो अर्थ हैं। एक तो रचनाकार का अपना समसामयिक रचनाकाल और दूसरे आज के पाठक का युगबोध अथवा सहवर्ती देशकाल, जिसका परिविस्तार अधिक से अधिक दस–पंद्रह वर्षों का होता है। यह भी संभव है कि समय की दृष्टि से समकालीन होता हुआ भी कोई लेखन चिंतन की दृष्टि से बहुत पुराना हो।

वस्तुतः कालक्रम मात्र समकालीन अथवा शाश्वत नहीं होता। ये दोनों तरंग की दो शिलाएं हैं। चेतना न ही तात्कालिकता है और न ही अमरता। इसके एक विचित्र आरोहावरोह होता रहता है। इसलिए अतिसामयिकता, अर्थात् दैनन्दिन घटनाओं से घिर जाने के कारण ही दो दशकों में नष्ट हो गया। आज की कविता की भी कुछ वैसी ही स्थिति है। पिछले पचास वर्षों में पचास कविताएं भी नहीं ढूँढी जा सकेंगी जो अगले और पचास वर्षों तक जीवित रहें, क्योंकि वे मात्र समसामयिक सरगर्मी से फूट निकली हैं न कि समय की आँच में धीरे–धीरे तपकर पककर प्रकट हुई हैं। इस सामयिकता से प्रतिक्रिया प्रेरित होकर शाश्वतता का जो वितान ताना

गया, वह भी नहीं ठहर पाया। सुमित्रानन्दन पंतजी का 'लोकायतन' इसीलिए निरादृत हो गया कि उसमें देश काल की अबूझ पहेली बुझायी गयी है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रासंगिकता साहित्य समीक्षा की एक महत्वपूर्ण कसौटी है। समकालीन जीवन बोध से जुड़कर चलना भले ही साहित्य की एकमात्र सार्थकता न हो, पर उसकी उपयोगिता का एक मानक अवश्य है, किन्तु प्रश्न यह है कि इस समय समाज की सही दशा–दिशा क्या है? इसके परखने का कोई निकष क्या हमारे पास है? यदि युगमानस की पूर्व पहचान हो जाती तो सत्तालोलुप राजनेताओं को आम चुनाव में पराजय का मुँह न देखना पड़ता। वे अवसरवादी समयानुकूल घोषणाएं (योजनाएं) छेड़ देते। जनमानस को परखने का एक ही उपक्रम है आम चुनाव। बशर्ते वह मूल्य केन्द्रित राजनीति और प्रत्याशियों के घोषणाओं पर लड़ा जाता। इसके अतिरिक्त भारत की सवासौ करोड़ जनता की गतिमति के सर्वेक्षण और विश्लेषण का कोई उपक्रम रचनाकारों के पास नहीं है। भारत जैसे देश का एक स्थिर चरित्र भी 'इदमित्थं' सिद्ध नहीं किया जा सकता। यह देश तीन शताब्दियों में समानान्तर विचरण कर रहा है। कलकत्ता जैसे महानगर में एक ओर हाथगाड़ी में सवारियां खींचते हुए मजदूर और दूसरी ओर धरती के नीचे तीव्र गति से दौड़ती हुई मेट्रो। भारत अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर गया है, किन्तु जब कृत्रिम उपग्रह छोड़ा जाता है तो नारियल भी फोड़ा जाता है। बड़ा अंतर्विरोध है इस वैविध्यपूर्ण देश में। इसलिए किस सत्य का संधान करना यथार्थ है? वास्तविक युगबोध क्या है? सही अर्थों में प्रासंगिक क्या है? यह सिद्ध करना सरल नहीं है। समकालीन कथा साहित्य को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि सेक्स ही इस विशाल राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या है। यदि इन कृतियों को काल पात्र में सुरक्षित रखकर कुछ शताब्दियों बाद इनके सहारे भारतीय समाज का इतिहास लिखा जाएगा तो निश्चय ही वह भारतीय लोकमानस का सही चित्र नहीं दे पाएगा। दाम्पत्य–विघटन, आत्मनिर्वासन, यौनक्रांति उस लेखक वर्ग के चोंचले हैं, जिनके पेट भरे हुए हैं और जो पश्चिमी प्रभाव में आकर अपने साहित्य को अधिकाधिक चटपटा बनाकर शोहरत और दौलत हासिल करने के लिए आकुल हैं। वे आतंकवाद वधूमेध, दहेज, आरक्षण, युवाआक्रोश और भ्रष्टाचार आदि समस्याओं पर लिखना युगधर्म नहीं मानते। आवश्यक है, इन समस्याओं को स्थायी संवेदना में परिणत कर देने की। घोटालों के पीछे कुछ व्यक्ति हैं, पर उनके कृत्य पर समूची वैश्विक व्यवस्था की उपज है, जिसका सरोकार हमारी इस भौतिक व्यवस्था के साथ दीर्घकाल तक रहेगा। समर्थ रचनाकार ऐसे काण्डों को स्थायी परिणति दे सकते हैं और इस तरह समकालीन तथा शाश्वत का एकीकरण कर सकते हैं।

काल की चक्राकार गति में शाश्वत बारम्बार समकालीन हो जाता है। कबीर में जो विद्रोह और विक्षोभ है, वही निराला तथा मुक्तिबोध में कई शताब्दियों बाद पुनः पुनः मुखरित हुआ है। तुलसीदास में समन्वय की जो विराट चेष्टा है, वह चार शताब्दी बाद प्रसाद के सामरस्य सिद्धान्त में फिर से फलीभूत हुई है। विद्यापति, सूर और जायसी की रागचेतना रीतिकाव्य के और आधुनिक युग के रोमांटिक कवियों में फूट–फूट पड़ी है। इनकी लोकचेतना नवगीत में गूँज रही है। मीरा, महादेवी एक बिन्दु पर समानुरूप है। हिन्दी रीतिकाव्य प्रयोगवाद के रूप में, भक्तिकाव्य जनकाव्य के रूप में, वीरकाव्य राष्ट्रीय काव्य के रूप में समय–समय पर प्रादुर्भूत हुआ है। एक बोध एक विधा अपनी अति पर पहुँचकर अस्वीकृत हो जाती है, इसलिए कि जनमानस अधिक आवृत्तियों को नहीं झेल पाता। इसमें दोषबोध या विधा का नहीं है, बल्कि अतिशयता का है। हिन्दी कविता आरंभ से तुकांत, छंदोबद्ध और गेय रही है। पिछले दशकों में उसके गेयत्व से चिढ़ हो गयी, फलतः अतुकांत मुक्त छंदों की रचनाएं की गयी। धीरे–धीरे गद्यात्मकता भर गयी और कविता खारिज होने लगी, तो फिर कविता की वापसी अर्थात् छंदोबद्धता की मांग की जाने लगी। इसकी आवश्यंभावी परिणति है नवगीत, गजल, दोहा, सवैया आदि। यही स्थिति भाषिक प्रयोगों की है। विगत सात शताब्दियों से गूढ़ और सहज भाषिक सर्जना का द्वंद्व चल रहा है। संतों ने सहज भाषा लिखी, साथ ही संधाभाषा तथा उलटवासी भी। सूर को द्रष्टकूट लिखना पड़ा। तुलसी ने ग्राम्य गिरा अवधी में तत्व मीमांसा की। भक्तिकाव्य में यों जनभाषा का स्वर सर्वाधिक प्रबल था। उसकी अति से ऊबकर रीतिकवियों ने अलंकृत भाषा अपनाई, फिर उस पच्चीकारी से त्रस्त होकर भारतेन्दु और द्विवेदी युग ने सपाटबयानी को प्रश्रय दिया। छायावाद युग में उस आत्यंतिक अमिधा को पुनः व्यंजनागर्भित बनाया गया। उसकी धूमायित काव्य और नई कविता की साफगोयी को पुनः चुनौती दी गई। निश्चय ही इसके पीछे युग आस्वाद के बदलते आयाम हैं। बोध की तीव्रता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। पिछले दस वर्षों में जितना परिवर्तन हुआ है, उतना उसके पहले पिछले सौ वर्षों में नहीं हुआ था और अगले दस वर्षों में इतना बदलाव आएगा जो विगत एक हजार वर्षों के समूचे परिवर्तन से अधिक दिखाई देगा। यही कारण है कि भक्तिकाव्य को पाँच सौ वर्षों की आयु मिली और प्रगतिवादी काव्य को केवल पाँच दस वर्षों की। जबकि दोनों जनसंस्कृति के दावेदार हैं। सत्य यह है कि काव्यव्यापी प्रवाह में महत्व मात्र 'पहल' का होता है, पुनरावृत्ति का नहीं। बशर्ते वह पहल युगमानस की परिवर्त्यमान प्रवृत्ति के साथ तालमेल बिठा ले जाये। युग प्रवर्तक रचनाकार अपनी अन्तर्दृष्टि द्वारा उस युगध्वनि का पूर्वाभास पा लेता है और श्रेय का भाजन बनता है। बाद में

उससे बेहतर रचनाएं आती हैं, किन्तु उन्हें उतनी प्रसिद्धि नहीं मिल पाती। हरिऔध के वर्णवृत्तों से बेहतर छंद अनूप शर्मा ने 'शर्वाणी' में लिखे, किन्तु श्रेय 'प्रियप्रवास' को ही मिला। यह पहल सायास भी होती है और अनचाहे–अनजाने भी। पता नहीं, कब कौन बोध विधा युगमानस में रच बस जाए। 'रागदरबारी' एक उपनगरीय अंचल के पिछले दशकों के त्रिकोणात्मक विकास (पंचायत, सहकारिता और शिक्षा) की पैरोडी रूप में रचा गया और वह पंचवर्षीय योजना से हताश होती हुई भारतीय जनता की व्यथाकथा बन गया। कालांतर में प्रयत्न करने पर श्रीलालजी इससे बेहतर नहीं लिख पाए। बच्चन की 'मधुशाला', सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' और लोकाख्यान 'आल्हा' में काव्य के उपादान बहुत कम हैं, लेकिन ये रचनाएं लोकप्रियता के शिखर पर पहुँची हैं। यह मात्र नियति का विधान नहीं है, बल्कि समय संवेदना की सहज परिणति है।

इस प्रकार श्रेष्ठता भी शाश्वतता (दीर्घायुष्य) का समानार्थी नहीं है। आवश्यकता दोनों में सहसम्बन्ध स्थापित करने की है। कभी सामयिक होना साहित्य का दुर्गण माना जाता था। आचार्य नंददुलारे बाजपेई ने प्रेमचंद पर प्रहार करते हुए कहा था कि उनका साहित्य समकालीन है। वह जीवनव्यापी समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं दे पाता। प्रेमचन्द ने प्रसादजी को गड़े मुर्दे उखाड़ने वाला घोषित किया था। ये दोनों अतिवादी निर्णय थे। सामयिक होते हुए भी प्रेमचन्द युग का साहित्य अपने युग का दस्तावेज है और अतीत से जुड़ा प्रसाद साहित्य मुख्यतः 'कामायनी' गत अनागत का शाश्वत सेतु है।

निष्कर्ष यह है कि शाश्वतता को चिरस्थायी (अधिकाधिक टिकाऊ) मूल्यों के रूप में परिभाषित करना होगा और समकालीनता को वर्तमान कालखंड के रूप में। संप्रति बौद्धिकता, तथ्यात्मकता नगरीकरण, यांत्रिकता, व्यक्तिवाद, कुण्ठाबोध और जिजीविषा का स्वर अधिक प्रचण्ड है। जबकि आस्था, सौंदर्य, समष्टिचेतना, रागतत्व आदि को शाश्वतता के घटक रूप में पहचाना जा सकता है। इस दोनों को एकाकार कर देने से ही साहित्य विवेक विकसित हो सकता है। तब ये दोनों परस्पर पूरक और प्रेरक हो जाएंगे। प्रसादजी ने ठीक ही लिखा है–

'देशचेतना काल परिधि में होती लय है,
काल खोजता महाचेतना में निज क्षय है'।

इस महाचेतना को पकड़ पाना ही व्यक्ति की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

– डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित

इसरो का महत्वपूर्ण मंगल ग्रह मिशन–'मार्स आर्बिटर मिशन' (मॉम)

मार्स आर्बिटर मिशन (मॉम) जिसे मंगलयान भी कहते हैं इसरो का प्रथम मंगल ग्रह मिशन है जिसका प्रमोचन 5 नवम्बर 2013 को पीएसएलवी राकेट की उडान पीएसएलवी–सी 2 की उड़ान के द्वारा सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र (एसडीएसटी) शार श्री हरिकोटा के प्रथम प्रमोचन पैड से किया गया। यह भारत का प्रथम अन्तर्ग्रहीय मिशन है जिसके द्वारा इसरो मंगल ग्रह में पहुँचने वाली विश्व की चौथी अन्तरिक्ष संस्था (रुसी अन्तरिक्ष संस्था रॉसकास्मोस, अमरीकी अन्तरिक्ष संस्था नासा तथा यूरोपीय अन्तरिक्ष संस्था के बाद) बन गई। इसने भारत को मंगल ग्रह में पहुँचने वाला प्रथम एशियाई देश तथा अपने प्रथम प्रयास में ही मंगल ग्रह की कक्षा में पहुँचने वाला विश्व का प्रथम राष्ट्र बना दिया।

मार्स आर्बिटर मिशन का प्रमोचन

5 नवम्बर, 2013 को सार्वत्रिक समय 09:08 बजे (भारतीय समय शाम 2:38 बजे) आन्ध्र प्रदेश के सतीश धवन अन्तरिक्ष केन्द्र के प्रथम प्रमोचन पैड से प्रमोचित किया गया। मिशन के लिए प्रमोचन विन्डो 20 दिन लम्बी थी तथा यह 20 अक्टूबर, 2013 को प्रारंभ हुई। पृथ्वी से प्रमोचन के बाद मंगलयान प्रोब ने एक महीने का समय पृथ्वी की कक्षा में बिताया तथा इस पर 7 अपोजी– उत्थापन कक्षीय मनूवर सम्पन्न किये गये। 30 नवम्बर, 2013 को इसे ट्रान्स मंगल ग्रह कक्षा में प्रविष्ट कराया गया। 298 दिन के बाद 24 सितम्बर 2014 को इसे मंगल ग्रह की कक्षा में प्रविष्ट कराया गया।

यह एक ''तकनीकी प्रदर्शक मिशन है जिसके अन्तर्गत एक अन्तर्ग्रहीय मिशन के लिए तकनीकों का विकास नियोजन और प्रचालन शामिल हैं। इस प्रोब में 5 उपकरण लगे हुए हैं। वर्तमान में मंगलयान का प्रेक्षण बेंगलरू स्थित इसरो दूरमिति, अनुवर्तन और कमान्ड नेटवर्क (आइस्टैक) केन्द्र से भारतीय डीप स्पेस नेटवर्क (आईएसडीएन) के सहयोग किया जा रहा है।

ऐतिहासिक परिपृष्ठ

23 नवम्बर, 2008 को तत्कालीन इसरो चेयरमैन श्री जी माधवन नायर ने एक मानव रहित मंगल ग्रह के लिए मिशन की सार्वजनिक घोषणा

की थी। वर्ष 2008 में चन्द्र मिशन चन्द्रयान–1 की लॉचिंग के बाद वर्ष 2010 में भारतीय अन्तरिक्ष तौर तकनीकी विज्ञान (आईआईएसएसटी) के द्वारा मॉम (मार्स आर्बिटर मिशन) संकल्पना के ऊपर सम्भावना अध्ययन प्रारंभ किया गया। 3 अगस्त, 2012 को तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन ने इस परियोजना को इसरो के वृहत अध्ययन के बाद मंजूरी दी। पहले इसरो ने इसे 28 अक्टूबर, 2013 को लांच करने की योजना बनाई थी लेकिन प्रशान्त महासागर में उस समय खराब मौसम के कारण इसे 5 नवम्बर, 2013 कर दिया गया।

5 अगस्त, 2013 को इसकी प्रमोचन वेहिकल पीएसएलवी जिसका तकनीकी नाम था 'पीएसएलवी–सी 25 एक्स एल' का असेम्बली कार्य प्रारंभ किया गया। बेंगलूर मे मंगलयान अंतरिक्ष यान 5 वैज्ञानिक उपकरण लगाये गये तथा पूरी–पूरी तरह से तैयार अन्तरिक्षयान को 2 अक्टूबर 2013 को प्रमोचन राकेट के साथ इन्टीग्रेशन के लिए श्री हरिकोटा ले जाया गया। मार्स आर्बिटर मिशन के अन्तरिक्षयान (उपग्रह) का विकास रिकार्ड 15 महीने में पूरा किया गया।

मार्स आर्बिटर मिशन के वैज्ञानिक

डॉ. के राधाकृष्णन मिशन को नेतृत्व प्रदान किया तथा मिशन के साथ उन्होंने इसरो की अन्य गति विधियों का भी संचालन किया। श्री एस रामाकृष्णन निदेशक थे जिन्होंने पीएसएलबी और द्रव नोदन तंत्र के विकास में योगदान प्रदान किया। श्री पी कन्हीकृष्णन पीएसएलबी कार्यक्रम के परियोजना निदेशक तथा पीएसएलवी–सी 25 / मार्स आरबिटर मिशन के मिशन निदेशक थे। श्री एमएस पैन्निरसेल्वम श्री हरिकोटा राकेट पोर्ट के चीफ जनरल मैनेजर तथा मंगलयान मिशन की प्रमोचन समय तालिका के लिए उत्तरदायी थे। इसके अलावा 13 अन्य वैज्ञानिकों ने इस मिशन में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई जिनमें 3 महिलाएं–मौमिता दत्ता (मिशन की प्रोजेक्ट मैनेजर), नन्दिनी हरिनाथ (नेविगेशन की उपनिदेशक) तथा रितु कारिढाल (नेविगेशन की उपनिदेशक) थीं।

मिशन का खर्च

मिशन का पूरा खर्च लगभग 450 करोड़ रुपये (73 मिलियन अमरीकी डालर) था और इतने कम खर्चे में यह आज तक का सबसे सस्ता मंगल ग्रह मिशन बन गया। मिशन के कम खर्च के विषय में तत्कालीन इसरो चेयरमैन ने बताया कि यह काफी गणकों पर निर्भर करती है जिसमें शामिल

गणक हैं मिशन के लिए माडुलर तरीका कुछ ग्राउण्ड टेस्ट तथा सम्बद्ध वैज्ञानिकों द्वारा मिशन में लम्बे अरसे (18 से 20 घं. प्रति दिन) तक काम करना। बीबीसी के विज्ञान पत्रकार जोनाथन एमोस के अनुसार मंगलयान मिशन के सस्ते होने का कारण कार्यकर्ताओं पर किया जाने वाला कम खर्च, स्वदेशी निर्मित तकनीक का प्रयोग साधारण डिजाइन और उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात है नासा के मैवेन जैसे मंगल ग्रह मिशन की तुलना में अत्यधिक कम जटिल नीतभार का प्रयोग।

मिशन के लक्ष्य

मिशन का प्राइमरी उद्देश्य अन्तराष्ट्रीय मिशन के लिए उन तकनीकों को विकसित करना था जो इसके डिजाइन, नियोजन, प्रबन्धन और प्रचालन में आवश्यक होती हैं। मिशन का गौण (सेकण्डरी) उद्देश्य मंगल ग्रह की सतह की विशेषताएं, आकारिकी (मार्फोलोजी), खनिज उपलब्धता, मंगलग्रह के वायुमंडल की जानकारी स्वदेशी निर्मित वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से लेना था।

प्रमुख उद्देश्यों में शामिल तकनीकी हैं–अन्तरिक्ष यान को भू–केन्द्रित कक्षा से सूर्य केन्द्रित परिपथ में स्थानान्तरण और अन्त में उसे मंगल ग्रह की कक्षा पहुँचाने का मनूवर, यान का सभी चरणों में नेविगेशन, अन्तरिक्ष यान को मिशन के सभी चरणों में कार्यशील बनाये रखना, अन्तरिक्ष यान की पावर संचार तथा तापीय एवं नीतभार प्रचालन आवश्यकताओं की पूर्ति करना था किसी आपात्कालीन परिस्थिति से निपटने की क्षमता को प्रविष्ट कराना है।

वैज्ञानिक उद्देश्यों में शामिल गणक हैं– मंगल ग्रह और इसकी सतह के विभिन्न लक्षणों का अध्ययन, मंगल ग्रह के वायुमंडल के विभिन्न गणकों मीथेन और कार्बन डाई आक्साईड शामिल हैं, का सुदूर संवेदन तकनीक से अध्ययन तथा मंगल ग्रह के उपरि वायुमंडल की गतिजता (डाइनामिक्स), सौर पवन और विकिरण के प्रभावों तथा बाह्य अन्तरिक्ष में वाष्पशील (बोलैटाइल) पदार्थों का पलायन जैसे विषयों का अध्ययन। यह मिशन मंगल ग्रह के चन्द्रमा फोबोस तथा क्षुद्र ग्रहों की कक्षाओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मंगल ग्रह ट्रान्सफर परिपथ के दौरान प्रदान करेगा।

अन्तरिक्ष यान 'मॉम' के विभिन्न गणक

मार्स आर्बिटर मिशन (मॉम) के विभिन्न गणक निम्न हैं जो सारणी–1 में दिये गये हैं।

सारणी–1

मार्स आर्बिटर मिशन के विभिन्न गणक

1. अन्तरिक्षयान उत्थापन भार	:	1337.2 कि.ग्रा. (852 कि.ग्रा. ईधन के साथ)
2. पावर	:	पावर जनन के लिए तीन सौर एरे
	:	पैनेल आकार 1.8 मी.x1.4 मी.
	:	840 वाट पावर जनन
	:	विद्युत संचयन–36 एम्पीयर–घं. लीथियम आयन बैटरी
3. ईंधन	:	द्रव ईंधन इंजन, प्रणोद–440 न्यूटन
4. एन्टेना	:	तीन एन्टेना–निम्न मध्य और उच्च लब्धि एन्टेना
5. अभिवृत्ति और कक्षीय नियंत्रण तंत्र	:	प्रोसेसर, दो स्टार संवदेक एक सौर पैनेल सूर्य संवदक, 4 प्रतिक्रिया चक्र, प्रमुख ईंधन तंत्र
6. बस	:	संवर्द्धित आई–1 के
7. तापीय तंत्र	:	निष्क्रिय (पैसिव) तापीय नियंत्रण तंत्र

मार्स आरबिटर मिशन के 5 वैज्ञानिक उपकरण

मिशन में लगे 15 कि.ग्रा. के 5 उपकरणों का विवरण निम्न प्रकार हैं :

1. मीथेन सेंसर : यह उपकरण मंगल ग्रह के वातावरण में मीथेन गैस की मात्रा का मापन करेगा तथा इसके स्रोतों का मानचित्र बनाएगा। मीथेन गैस की उपस्थिति से जीवन की सम्भावनाओं का अनुमान लगाया जाता है।

2. थर्मल इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोमीटर : यह मंगल ग्रह की सतह का तापमान तथा उत्सर्जकता का मापन करेगा जिससे मंगल ग्रह की सतह की संरचना तथा खनिजता (मिनरेलोजी) का मानचित्रण करने में मद्द मिलेगी।

3. मंगल ग्रह कलर कैमरा (एमसीसी) : यह ट्राईकलर कैमरा मंगल ग्रह की सतह की सतही विशेषताएं और सतह की संरचना के विषय में जानकारी देगा। यह मंगल ग्रह की गतिजतापूर्ण घटनाएं एवं मौसम की जानकारी,

तूफान एवं वायुमंडलीय उथलपुथल के विषय में जानकारी देगा। इस उपकरण के मंगल ग्रह के दो उपग्रहों–फोबोस और डीमोस का भी चित्रण किया जा सकेगा।

4. लाइमन अल्फा फोटोमीटर : यह उपकरण मंगल ग्रह के ऊपरी वातावरण में डयूटेरियम और हाइड्रोजन की सापेक्ष बहुतायत का पता लगायेगा। इन दोनों के अनुपात की जानकारी से बाह्य अन्तरिक्ष में जल क्षति के आँकलन में मद्द मिलेगी।

5. मंगल एक्सोस्फेरिक न्यूट्रल संरचना विश्लेषक (एमई एन सी ए) : यह वह चतुर्ध्रुवी द्रव्यमान विश्लेषक है जो बहिर्मंडल (एक्सोस्फीयर) में अनावेशित कण संरचना का विश्लेषण करने में सक्षम है।

दूरमिति और दूरादेश (टेलीमीट्री और टेलीकमाण्ड)

मंगलयान मिशन के लांच के लिए इसरो के दूरभिति, अनुवर्तन और कमाण्ड नेटवर्क ने श्री हरिकोटा, पोर्ट ब्लेयर, ब्रूनी एवं बियाक (इन्डोनेशिया) भू केन्द्रों से नेविगेशन और अनुवर्तन सपोर्ट प्रदान किया तथा यही सपोर्ट तब भी प्रदान किया जब लांच के बाद मंगलयान अन्तरिक्ष यान की अपोजी (मंगलयान अंतरिक्षयान की पृथ्वी से इष्टतम दूरी) 100,000 कि.मी. थी तथा इस काम के लिए भारतीय डीप स्पेस नेटवर्क के 18 मीटर, 32 मीटर एन्टेना का प्रयोग किया गया। नासा के डीप स्पेस नेटवर्क ने मिशन के लिए पोजीशन डाटा तीन स्टेशनों से – कैनबरा, मैड्रिड और गोल्डस्टोन से उस समय प्रदान कर सपोर्ट दिया जब मिशन को इसरो नेटवर्क नहीं मिल रहा था (इसरो नेटवर्क उस समय अदृष्टिगोचर अवधि में था)। मिशन को दक्षिण अफ्रीका की राष्ट्रीय अन्तरिक्ष संस्था–सान्सा ने भी उपग्रह अनुवर्तन, दूरमिति और कमाण्ड सेवाओं से मद्द की।

मिशन प्रोफाइल

मिशन का प्रमोचन 5 नवम्बर, 2013 को 09:08 बजे सार्वत्रिक समय पर किया गया तथा 15:35 मि. के प्रज्वलन से मंगलयान की अपोजी 23,550 कि.मी. पहुँच गई। प्रज्वलन का सिलसिला चलता रहा था 30 नवम्बर, 2013 को सार्वत्रिक समय 19:19 बजे सूर्य केन्द्रित कक्षा (ट्रान्स मंगल परिपथ) में प्रवेश हुआ। उसके पुनः बाद भी प्रज्वलन क्रम चलता रहा तथा 24 सितंबर, 2014 को मंगलयान मंगलयान की कक्षा में प्रवेश कर गया।

मंगलयान मिशन की वर्तमान स्थिति

पीएसएलबी राकेट ने मंगलयान अन्तरिक्षयान को मंगलग्रह के चारों ओर अत्यधिक दीर्घवृत्तीय कक्षा में स्थापित कर दिया जिसका कक्षीय काल 72 घं. 51 से. का था तथा पेरियाप्सिस (मंगलग्रह से निम्नतम दूरी) 421.7 मि. मी. तथा एपोयाप्सिस (मंगलग्रह से इष्टतम दूरी) 76,993.6 कि.मी. थी। उस समय मंगलयान में 40 कि.ग्रा. ईंधन था। 24 सितम्बर, 2018 को मंगलयान ने मंगलग्रह की कक्षा में कुल 4 वर्ष बिताए। 24 सितम्बर, 2019 को मंगलयान ने मंगल ग्रह की कक्षा में 5 वर्ष गुजारे तथा पृथ्वी को 2 टेराबाईट का प्रतिविम्बन डाटा भेजा तथा मंगलयान में अब भी इतना पर्याप्त ईंधन है कि यह एक वर्ष और भी काम करेगा।

मंगलयान मिशन को विदेशी मान्यताएं

वर्ष 2014 चीन ने भारत के सफल मंगल आर्बिटर मिशन को 'एशिया के गौरव' की संज्ञा दी। मार्स आरबिटर टीम ने अमरीका का नेशनल स्पेस पायनियर अवार्ड 2015 जीता जो विज्ञान और इंजीनियरिंग श्रेणी का अवार्ड है तथा यह अमरीका की राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्था के द्वारा दिया जाता है। संस्था ने कहा कि यह अवार्ड इसलिए दिया गया है क्योंकि भारतीय अन्तरिक्ष संस्था इसरों ने मंगलग्रह मिशन पहली बार अन्तरिक्ष में भेजा है जो पहले प्रयास में ही सफल हुआ है। पहले प्रयास में सफल होने वाला मंगलयान (मॉम) विश्व का प्रथम मंगल ग्रह मिशन है। भारत में दो हजार रुपये के नोट के पीछे की ओर पर भी मार्स आरबिटर मिशन अन्तरिक्ष यान का चित्र लगा होता है।

इसरो ने वर्ष 2024 में मार्स आरबिटर मिशन 2 (माम–2 या मंगलयान–2) की योजना बनाई है जिसमें अधिक वैज्ञानिक नीतभार लगाये जायेंगे। यह आर्बिटर एरोब्रेकिंग का प्रयोग करेगा जो प्रारंभिक कक्षा में अन्तरिक्ष यान की एपोअप्सिस (मंगलग्रह से मंगलयान की इष्टतम दूरी) उपयुक्त ऊँचाइयों पर काम करेगा जिससे अधिक बेहतर वैज्ञानिक प्रेक्षण किये जा सकें। भारत में वर्ष 2019 में बनी फिल्म 'मिशन मंगल' भारत के मंगल ग्रह मिशन पर आधारित है।

– काली शंकर
सेवा निवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक इसरो
के.–1050, आशियाना कालोनी कानपुर रोड
लखनऊ – 226012 (पू०पी०)
दूरभाष : 09935793961

क्षय रोग (टी.बी.), कारण और निवारण

- क्षय रोग या टी.बी. विश्व के सर्वाधिक घातक रोगों में एक है। विश्व की लगभग एक चौथाई जनता, इस रोग के कीटाणु से ग्रसित है।
- भारतवर्ष में शायद ही कोई ऐसा परिवार हो, जिसने इस रोग के दंश को न झेला हो।
- इस रोग का ज्ञान वैदिक काल से ही, भारत वर्ष के मनीषियों को था। तत्समय इसे 'यक्ष्मा' या क्षयरोग के नाम से जाना जाता था।
- हिप्पोक्रेटिस (ग्रीक चिकित्सक) ने इसे लगभग 400 वर्ष ईसा पूर्व में थायसिस (Pthiasis) नाम से पहचाना था, जिसका अर्थ भी decay या क्षय ही होता है।
- इस रोग के कीटाणु Mycobacterium tuberculosis की खोज 24 मार्च 1882 को प्रसिद्ध वैज्ञानिक रॉबर्ट कॉक (Robert Koch) ने की थी, जिस कारण इसे Koch's Disease के नाम से भी जाना जाता है, तथा 24 मार्च 'विश्व क्षयरोग दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

कुछ तथ्य–

- यह रोग विश्व के ऐसे 10 प्रमुख रोगों में एक है, जिनके कारण सर्वाधिक मृत्यु होती हैं।
- सन 2018 में विश्व में लगभग 12 लाख व्यक्तियों की मृत्यु क्षय–रोग के कारण हुई।
- भारत में विश्व के लगभग 27 प्रतिशत क्षय–रोग के रोगी हैं, अतः भारत के लिये यह एक बड़ी स्वास्थ समस्या हैं।

कैसे होता है यह रोग

क्षयरोग 'माइकोबैक्टीरियम–ट्यूबरक्युलोसिस' नामक रोगाणु से ग्रसित होने के कारण होता है, तथा एक रोगी से निरोग व्यक्ति में यह रोगाणु पहुँचते हैं।

जब एक क्षयरोग ग्रसित व्यक्ति–खाँसता, छींकता या साँस लेता है, तो थूक के सूक्ष्म कणों के साथ लाखों रोगाणु वातावरण में फैल जाते हैं, जो अत्यन्त हल्के होने के कारण कई घंटों तक वातावरण में रहते हैं, ऐसे में वहाँ

उपस्थित स्वस्थ व्यक्तियों में ये रोगाणु श्वास के माध्यम से प्रवेश कर जाते हैं।

जिन स्थानों में वायु प्रवाह अच्छा है तथा धूप है वहाँ ये रोगाणु, बहुत शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं, पर जहाँ ऐसा नहीं है, वहाँ से काफी समय एवं जीवित रहते हैं और वहाँ साँस लेने वालों को संक्रमित करते रहते है।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि हर वह व्यक्ति जिसके शरीर में ये रोगाणु साँस के माध्यम से प्रवेश करते हैं, ये रोग उत्पन्न नहीं कर पाते, पर यदि किसी भी कारण से शरीर की रोग–प्रतिरोधक क्षमता कम है जैसे छोटे बच्चों, बुजुर्गों में या डायबिटीज, एच.आई.बी. आदि के रोगियों में, शराब या अन्य नशा करने वालों में कुपोषित व्यक्तियों, तो ये रोगाणु आसानी से टी.बी. रोग उत्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं।

पर रोगाणु से संक्रमित होने वाले हर दस में से केवल एक व्यक्ति में ही यह क्षय–रोग के रूप में परिवर्तित हो पाता है। (पूरे जीवन में) रोगाणु के संक्रमण से एक लाभ भी होता है, वह यह कि, शरीर में हम रोगाणु के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता (Antibodies) उत्पन्न हो जाती है, जो भविष्य में होने वाले संक्रमण से, रक्षा करती है।

'किन अंगों को प्रभावित करता है–यह रोग'

मुख्य तौर पर यह रोग फेफड़ों को प्रभावित करता है, पर ये शरीर के किसी भी अंग में, जैसे,

- फेफड़ों की झिल्ली।
- लसिका ग्रंथियाँ
- मस्तिष्क
- हड्डियाँ
- पेट, Urinary System
- गुर्दे
- त्वचा, आदि

फेफड़ों की टी.बी. को – पल्मोनरी टी.बी. और अन्य अंगो की टी.बी. को – एक्स्ट्रा–पल्मोनरी टी.बी. के रूप में परिभाषित किया जाता है, एक्ट्रा–पल्मोनरी टी.बी. का निदान काफी कठिनाई से हो पाता है।

क्षय रोग का निदान (Diagnosis)

1. बलगम : सबसे महत्वपूर्ण जाँच, बलगम की होती है, इसके लिये WHO गाइडलाइन्स के अनुसार 2 सैंपल्स की आवश्यकता होती है। देश भर में 14,000 से अधिक सरकारी माइक्रोस्कोपिक केन्द्र हैं, जहाँ बलगम की जाँच निःशुल्क होती है, इसके अतिरिक्त प्राइवेट डायग्नोस्टिक केन्द्रों में भी बलगम की जाँच की जाती है।

आज कल स्मियर के साथ (B NAAT-C Cartidge based Nuclic Acid Aueplification Test) भी आवश्यक रूप से किया जा रहा है, जो कि न केवल अधिक प्रभावी है, वरन् ड्रग–रेजिस्टेंस का भी पता लगा लेता है।

2. एक्स–रे : यह भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण जाँच है पर यह केवल रोग की संभावना ही व्यक्त करती है।

3. स्किन टेस्ट (पी.पी.डी.)

4. अल्ट्रासाउण्ड व सी.टी. स्कैन

5. ब्रांको–एल्वियोलर लवाज (BAL)

6. Biopsy, FNAC

7. Pleural, Peritonial, CSF की जाँच, आदि।

इस सब जाँचों का उद्देश्य है, शीघ्रता से इस रोग का निदान जिससे, शीघ्र उपचार कर संक्रमण को समाज में फैलने से रोका जा सके।

क्या होते हैं, इस रोग के लक्षण

फेफड़ों की टी.बी. जो कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, के लक्षण निम्न हैं–

- खांसी – 3 सप्ताह या अधिक
- बुखार
- भूख कम होना, वजन घटना
- रात्रि में शरीर से पसीना आना
- सीने में दर्द होना
- साँस फूलना
- खाँसी में खून आना

इनके अतिरिक्त रोग ग्रसित अंगो के विशेष लक्षण होते हैं, जैसे –

- लसिका ग्रंथियों का सूज जाना
- पेट में दर्द, उल्टी, बारी–बारी से कमी दस्त, कभी कब्ज होना–आँतों / पेट की टी.बी.
- सरदर्द, उल्टी, बदली चेतना (Alter Conscious)
- मस्तिष्क या झिल्ली की टी.बी. (TBM)

आदि, आदि।

ऐसे लक्षणों के उत्पन्न होने पर, तुरन्त किसी विशेषज्ञ से परामर्श करना चाहिये–

उपचार

- 1882 में रोगाणु के पता चलने के बाद, से लगभग 60 वर्षों तक इस रोग की कोई प्रभावी दवा विकसित नहीं की जा सकी। उस समय तक केवल आराम, अच्छा भोजन, अच्छी हवा के सहारे ही उपचार किया जाता था, जिसके लिये सैनेटोरियम बनाये गये।
- 40 के दशक में पहली प्रभावी दवा 'स्ट्रेप्टोमाइसिन' के अविष्कार से क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ।
- आज 25 के लगभग दवाये इस रोग के उपचार के लिये उपलब्ध हैं।
- WHO द्वारा समय–समय पर इस रोग के उपचार के लिये गाइड–लाइन्स जारी की जाती हैं, जिनके अनुसार भारत सरकार भी रोग नियंत्रण कार्यक्रम चलाती रही है। जिनका विवरण निम्नवत है–
  1– राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम (1962–1993 तक)–ये कार्यक्रम पूरे देश में चलाया गया पर कई कमियों के कारण, अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सका।
  2– पुनरीक्षित राष्ट्रीय नियंत्रण कार्यक्रम (1995 से 2019 तक) 1993 में WHO ने TB को वैश्विक इमर्जेन्सी घोषित किया, भारत सरकार ने भी उसी वर्ष RNTCP, (पुनरीक्षित राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम) को स्वीकृति दे दी, पर अधिकाधिक तौर पर 1997 से यह कार्यक्रम लागू हुआ व 2005 तक पूर देश में इसे लागू किया गया, RNTCP के अन्तर्गत DOTS Strategy लागू की गई। जिसमें रोगी को

किसी प्रशिक्षित व्यक्ति की देखरेख में दवा खिलाई जाती है।

3. भारत सरकार ने टी.बी. को भारत से समाप्त करने हेतु नई रणनीति की घोषणा 31 दिसम्बर 2019 को की गई, इसके अन्तर्गत सन 2025 तक क्षय रोग के उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है। अतः RNTCP का नाम एवं NTEP (National TB Elimination Program या राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन रखा गया है।

- पुनरीक्षित व NTEP के अन्तर्गत, पहले जांचकर यह देखा है कि रोगाणु, मुख्य दवाओं से Senslive है या नहीं, फिर उसी के अनुसार दवायें दी जाती इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी टेस्ट व औषधियां निःशुल्क दी जाती है।
- रोगियों को प्रतिमास 500/– अच्छे खाने हेतु दिये जाते हैं जो उपचार की पूरी अवधि (जो 6 माह से 2 वर्ष तक हो सकती है) के लिये दिया जाता है।

समाज का दायित्व

- हमारे देश ने सन 2025 तक देश से क्षय–रोग मुक्त करने का जो संकल्प लिया है, उसमें हम सबको सहयोग करना चाहिये।
- अपने परिवार, परिचितों या आस–पास निवास करने वालों में यदि, क्षयरोग के पूर्व में बताये कोई भी लक्षण पाये जाने पर, उन्हें जाँच व उपचार हेतु सरकारी चिकित्सालय या विशेषज्ञ का परामर्श लेवे हेतु प्रेरित करें।
- खाँसी, छींक आदि आने पर मुँह को किसी कपड़े टिश्यू पेपर अथवा अपने कोहनी से अवश्य ढँक लें। इससे इस रोग को फैलने से काफी हद तक रोग जा सकता है।
- क्षय रोगी को डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही अपना उपचार करने को प्रेरित कर सकते हैं।
- ऐसा कर हम 2025 तक इस घातक रोग से देश को मुक्त करने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

– डॉ. विनय मिश्रा

C.V. NETRALAYA

CP 6A, Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow
Mob. : 80525 10018

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. **Name of Member: .....**
2. **Age: .....**
3. **Gotra: .....**
4. **Father's/Husband's Name :.....**
5. **Address : .....**

   .....
6. **landline/Mobile No.: .....**
7. **Email : .....**
8. **Name of spouse / Father'sName :.....**
9. **Education : .....**
10. **Occupation (Post/Designation) :.....**

Unmarried Children Name Age Education Job

a) **.....**

b) **.....**

c) **.....**

11. **Any other information :**

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubj Pratinidhi Sabha &/or Kanyakubj Vaani** and Willing to pay Rs.....in Cash/Cheque No. .....Name of Bank.....favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratindhi Sabha, Lucknow"Payable at Lucknow.*

12. **Name of person introducing : .....**

Date : **(Signature)**

Reciept

Received with thanks Rs. .....in Cash / Cheque No. .....Name of Bank ..... from .....who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinibhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani.**

(Signature)

1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha is Rs. 1000/- (A/c. No. 20036640960, IFSC Code- ALLA0210062 Allahabad Bank Main Branch, Hazratganj, Lucknow). Form With This Cheque To Be Sent To Shri R.P. Awasthi 647 F/United City Colony Sec-I, Jankipuram, Lucknow-226021**
2. Contribution for life membership of **Kanyakubja Vaani is Rs. 1100/- (A/c. No. 710601010023908, IFSC Code- VIJB0007106, Vijaya bank, Hazratganj branch Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi, Haider Mirza Lane, Golaganj Lucknow.**
3. Contribution forone issueof **Kanyakubja Vaani is Rs.40/-+ postage charges.**

बापू के बन्दर

– डॉ. सुशील अवस्थी

बापू राष्ट्रपिता कहलाते है। लोग बताते है कि उनके तीन बन्दर होते थे एक का मुँह बन्द, दूसरे के कान और तीसरे की आँखे मुदी थे बन्दर न तो कुछ बुरा बोलते हैं, न सुनते हैं और न देखते हैं इनके लेखे देश में चारों तरफ खुशहाली ही खुशहाली है। जहाँ बुराई होती देखते हैं आँखे बन्द कर लेते है, मुँह छुपा लेते लेते है किसी की किसी तरह की बुराई सुनना भी पसन्द नहीं करते मौके पर मुँह बन्द रखते है। कोई यह न कह दे कि बोल कर करोड़ों का कबाड़ा कर दिया।

भई वाह बन्दर हों तो बापू के। बापू की आत्मा तृप्त ही नहीं सन्तृप्त हो रही होगी, कारगुजारी देख कर। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होगा कि इतने ऊँचे निकलेंगे। इनके कारनामे जाहिर होते ही दुनिया भर में फैल जायेंगे। ये विश्व विख्यात हो जायेंगे। हर शहर में बापू के नाम का कुछ न कुछ होता जरूर है। बापू भवन, गाँधी भवन, गाँधी मार्ग, गाँधी ग्राम, गाँधी धाम। कुछ न हुआ तो गाँधी आश्रम जरूर होगा। जहाँ बापू भवन होता है, वहाँ बापू के बन्दर अवश्य ही पाये जायेंगे।

हमारे शहर में भी एक अदद बापू भवन है। वहाँ बन्दरों ने उत्पात मचा रखा है। बड़ी मेहनत मशक्कत के बाद उन पर शिकंजा कसा जा सका। लगभभ बारह तेरह बन्दर पकड़े भी गये। इन बन्दरों ने सारी सरकारी फाइले, सुविधा का सामान कब्जिया लिया था। कुछ तितर बितर किया। कुछ नष्ट कर दिया। रिपोर्ट हुई। इन्हें पुलिस ने ससम्मान गिरफ्तार किया। चूँकि ये माननीय है इसीलिये अन्य पुलिसिया कार्यवाहियाँ नहीं हुई। वे आदर पूर्वक चिड़ियाघर में एक साथ रखे गये। लोग इनके दर्शन कर सकें। जीवन कृतार्थ कर सके। स्वतंत्रता के गुण गा सके बाद में तो इन्हें छोड़ ही दिया जायेगा। बहुत दिनों तक बन्धन में रखा जाना सम्भव नहीं है। इधर श्रद्धा का दौर चल रहा है। बड़े मंगल पर लोग पूजते है इन्हें। पुए खिलाते है। खीर खिलाते हैं।

बापू के छवि को देखते हुए बापू के बन्दरों का अपमान ठीक नहीं है। उन्हें जल्द बन्धन से मुक्त किया जाय। मेरी यही गुजारिश है। बापू और बापू के बन्दर देश पर राज्य करें।

इति। आमीन।

2/232, विश्वास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

बजरंगी डरेबर

– डॉ. सुशील अवस्थी

अपना नाम जब भी बताते बजरंगी डरेबर ही बताते। मैंने कभी नहीं देखा उनको गाड़ी चलाते। कई चेयरमैन आये, चले गये। कोई उनसे गाड़ी नहीं चलवा पाया। कोई ज्यादा जिद करता, तो वे कहते 'साहेब! अब पहिया घुमावैं कै उमरौ नहीं रही अउर आप तौ जनतै हौ बहुत दिन ते रिआजौ छूटी है। आप ही मनतेव तो कहौ चली? बजरंग बली का नाँव लई के।'

अधिकारी इस वक्तव्य के बाद दबाव डालना बन्द कर देता। बजरंगी ने ड्राइवरी के अलावा सब काम किए। ड्राइवरी ही नहीं की। ड्राइवर संघ के महामंत्री, उपाध्यक्ष रहे। हनुमान भक्त तो नाम के अनुरूप थे। कोई मंगल/शनिवार नहीं जाता जब वे कार्यालय समय में तीन घंटा भजन कीर्तन न करते हों। कैम्पस में हनुमान जी की मूर्ति स्थापना में उनका बड़ा योगदान है। चन्दे की रसीदें अभी भी उनके पास हैं। चेयरमैन के कक्ष के बाहर बेंच पर बैठे मिलेंगे, बजरंगी। गप्पें ऐसी कि बुश और मुशर्रफ से नीचे बता ही नहीं। कभी रुतबा गालिब करना होता तो आफिस टाइम में पीकर आ जाते। 'पीने की आदत ससुरी पहिया पकरै के दिन ते परी, आज तक नहीं छूटी'–यह उनका प्रिय डायलाग है।

एक बार नए चेयरमैन ने आते ही पूछ लिया कि जब ड्राइवर हो तो गाड़ी क्यों नहीं चलाते? बजरंगी गाड़ी पर बैठ गए। गाड़ी हनुमान जी के सामने खड़ी की। दूसरे दिन चैयरमैन के हाथ में गाड़ी की खराबी की लिस्ट थीः–

1. इसटैरिंग ढीली है।
2. ब्रेक नहीं लगते।
3. सस्पेंशन खराब है।
4. हैडलाइट बाहर आ गई है।
5. गेअर बाक्स टूटा है।
6. दरवाजे आवाज करते हैं।
7. पहिये खड़खड़ा रहे हैं।
8. डेन्टिग–पेन्टिग होनी है।
9. वायरिंग खुली है।
10. डिफरेंशल आवाज करता है।
11. बेयरिंग सही नहीं है।
12. चेचिस गली है।

गाड़ी कहीं लड़ी है। ठीक से दिखवाना पड़ेगा।

तारीख आज की। – बजरंगी डेरबर

दिन : मंगलवार,

ड्राइवर बजरंगी ने यह नहीं कहा कि चेचिस और इन्जन गाड़ी में नहीं है। यही खैर है। आज तक कोई बजरंगी ड्राइवर से गाड़ी नहीं चलवा पाया। शुक्र है कि उन्हें समय से पहले रिटायर कर दिया गया।

2/232, विश्वास खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ उत्तर प्रदेश
दूरभाष (आवास) 2308038

भरोसेमंद दोस्त एंटी ऑक्सीडेट

हम सभी चाहते हैं स्वस्थ और चुस्ती से भरा–पूरा जीवन, जिसमें रोग और और बुढ़ापा न सताए। शरीर से विषैले तत्वों को हटाकर एंटी ऑक्सीडेंट हमारे इसी मिशन को पूरा करने में सहायक बनते हैं। एंटी ऑक्सीडेंट वह अणु होते हैं जो दूसरे अणुओं की ऑक्सीजन को रोकते हैं। सैकड़ों नहीं, हजारों पदार्थ एंटी ऑक्सीडेंट की तरह कार्य करते हैं। यह विटामिन, मिनरल्स और दूसरे कई पोषक तत्व होते हैं। बीटा कैरोटिन, ल्युटिन, लाइकोपीन, फ्लैवोनाइड, लिगनान जैसे एंटी ऑक्सीडेंट हमारे लिए बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण हैं। इनके अलावा मिनरल सेलेनियम भी एक एंटी ऑक्सीडेंट की तरह कार्य करता है। विटामिन ए, विटामिन सी और विटामिन ई की एक एंटी आक्सीडेंट के रूप में हमारे शरीर में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

क्या होते हैं फ्री रेडिकल्स

हमारे शरीर की खरबों कोशिकाओं को पोषण की कमी और संक्रमण का ही खतरा नहीं होता है, बल्कि फ्री रेडिकल्स भी कोशिकाओं को काफी नुकसान पहुँचाते हैं। यह दूसरे अणुओं से इलेक्ट्रान चुराने की कोशिश करते हैं, जिससे डीएनए और दूसरे अणुओं को नुकसान पहुँचता हैं। यह फ्री रेडिकल्स भोजन को ऊर्जा में बदलने की प्रक्रिया में उप–उत्पाद के रूप में निकलते हैं। इसके अलावा कुछ उस भोजन में होते हैं जो हम खाते हैं, कुछ उस हवा में तैरते रहते हैं जो हमारे आसपास मौजूद होते हैं। फ्री रेडिकल्स अलग–अलग आकार माप और रासायनिक संगठन के होते हैं। फ्री रेडिकल्स कोशिकाओं को नष्ट करके हृदय रोगों, कैंसर और दूसरी बीमारियों की आशंका बढ़ा सकते हैं। एंटी ऑक्सीडेंट फ्री रेडिकल के प्रभाव से कोशिकाओं को बचाते हैं।

शरीर की सफाई करते हैं एंटी ऑक्सीडेंट

शरीर में बहुत सारी गतिविधियाँ होती है। हम खाना खाते हैं, उनका पाचन और अवशोषण होता है। मेटाबॉलिज्म में यह तय होता है कि इन पदार्थों में से कितना इस्तेमाल होगा और कितना संग्रह होगा। इस पूरी प्रक्रिया में मुख्य उत्पाद के साथ कई उप–उत्पाद भी बनते हैं। यह उप–उत्पाद दरअसल व्यर्थ होते हैं, जिन्हें कई बार शरीर नहीं निकाल पाता। एंटी ऑक्सीडेंट उनके साथ क्रिया करके शरीर को उनके नकारात्मक प्रभाव से बचाते हैं। एंटी ऑक्सीडेंट वैसे तो कई भोज्य पदार्थों में पाए जाते हैं, लेकिन ताजे फल और सब्जियों में यह सबसे अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इन्हें स्कैवेंजर भी कहते हैं, क्योंकि यह फ्री रेडिकल्स को खाकर शरीर की सफाई करते हैं।

स्वस्थ रहने के लिए जरूरी एंटी ऑक्सीडेंट

- एंटी ऑक्सीडेंट हृदय रोगों, ब्लड प्रेशर, अल्जाइमर और दृष्टिहीनता के खतरे को कम करते हैं।
- एंटी ऑक्सीडेंट बुढ़ापे के लक्षणों को धीमा करते हैं।
- विटामिन सी, विटामिन ई, बीटा कैरोटिन और जिंक जैसे एंटी ऑक्सीडेंट

एज रिलेटेड मैक्युलर डिजनरेशन से सुरक्षा करते हैं।

- ल्युटिन हमारी आंखों की रोशनी बनाए रखने के लिए जरूरी है।
- सेलेनियम त्वचा, बड़ी आंत और फेफड़ों के कैंसर से सुरक्षा करता है।
- एंटी ऑक्सीडेंट रोग गतिरोधक तंत्र को मज़बूत बनाकर संक्रमणों से बचाते हैं।
- कोशिकाओं में टॉक्सिन इकट्ठे होने से उसका डिजेनरेशन शुरू हो जाता है। यह टॉक्सीन को नष्ट कर कोशिकाओं को मृत होने से भी बचाते हैं।

इनमें है भरपूर एंटी ऑक्सीडेंट

गाजर

गाजर शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट बीटा–कैरोटिन से भरपूर होती है, जो स्वास्थ्यवर्धक कैरोटिनाइड परिवार का एक सदस्य है। यह शकरकंद, शलजम और पीली एवं नारंगी रंग की सब्जियों में होता है। यह कैंसर और हृदय रोगों से बचाता है। आर्थराइटिस के खतरे को 70 प्रतिशत तक कम करता है।

टमाटर

टमाटर में लाइकोपीन होता है। यह फेफड़ों, बड़ी आँत तथा स्तन कैंसर से बचाता है और मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को दुरस्त रखता है। यह मोतियाबिंद और मैक्युलर डिजनरेशन से आँखों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टमाटर में मौजूद ग्लुटाथियोन एंटी ऑक्सीडेंट इम्यून तंत्र को मजबूत करता है।

ब्रोकली

ब्रोकली, पत्तागोभी और फूल गोभी आदि सब्जियों में इंडोल कार्बोनेल पाया जाता है, जो ब्रेस्ट कैंसर के खतरे को कम करता है और एस्ट्रोजन के प्रति संवेदनशील कैंसर जैसे गर्भाशय तथा सरविक्स कैंसर से भी बचाव करता है।

चाय

चाय हमें कैंसर, हृदय रोगों, स्ट्रोक और दूसरी बीमारियों से बचाती है। हरी और काली, दोनों चाय काफी लाभदायक होती हैं। हरी चाय में जो कैटेचिन्स पाया जाता है, वह काली चाय बनाने में ऑक्सीडाइज्ड होकर थियाफ्लेविन बनाता है। यह भी फ्री रेडिकल्स से लड़ता है।

लहसुन

लहसुन एंटी ऑक्सीडेंट से भरपूर होता है जो कैंसर और हृदय रोगों से लड़ने में मददगार होता है और बढ़ती उम्र के प्रभावों को कम करता है। लहसुन में जो तीखी गंध होती है वह सल्फर के कारण होती है। यही उसके स्वास्थ्यवर्धक गुण का प्रमुख कारण है। लहसुन रक्तचाप और कोलेस्ट्राल के स्तर को कम करता है। यह फ्री रेडिकल से मुकाबला करता है और रक्त का थक्का बनने से रोककर दिल की हिफाजन करता है।

गीत

मेरे प्रभु विशाल, दयाल कृपाल,
कंचन कुण्डल तिलक भाल
पूरित कर दे इस घट को
चेतना की स्मृति से

ज्योतिपुंज प्रकाश में
सराबोर कर दें, धवल दुग्ध से
क्षीर सागर में विराजित
विवेक पयस्विनी में

स्नात कर दे
अनन्त जन्मों से
कितनी देहों देहान्तरों
देश देशान्तरों से

क्षुभित परिभ्रमित
संकीर्ण सीमित
हो रहा हूँ,
आ सकूँ दौड़ता हुआ

गोद में तुम्हारे
निहारुँ जी भर प्यारे!
ऐसा मार्ग तो सुझा दें
अमृतमयी वाणी सुना दे

जाग्रत हो जाय जीवनी शक्ति
परिवर्द्धित हो तुम्हारी भक्ति
न बिछडूँ कहीं कभी भी रहकर
अन्तः बाह्य श्वांस लेकर

अव्यक्त को व्यक्त में
संपृक्त असंपृक्त में
तुम्हें ही देखूँ
ऐसा दर्शन तो करा दे।

डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी
एम.ए., एम.फिल, पी.एचडी, एल.एल.बी.
नर्सिंहपुर, मध्य प्रदेश

श्रद्धांजली

ज्योतिर्मय शुक्ला

25 दिसंबर 1972–1 अक्टूबर 1988

माँ के आँसू

ये आँसू मत बहा,
ये आँसू तेरे अमृत हैं,
मेरी सुन्दर भोली सी माँ,
ये आँसू तेरे अमृत हैं।

तूने गम की कीमत दी चुका,
ये आँसू तेरे अमृत हैं,
एक दिन कर दूँगा मैं तेरे पूरे अरमाँ,
ये आँसू तेरे अमृत हैं।।

ये आँसू मत बहा,
ये आँसू तेरे अमृत है,
मेरी सुन्दर भोली सी माँ,
ये आँसू तेरे अमृत है,

बस यही चाहत है,
तू खुश है,
मैं खुश हूँ वहाँ,
ये आँसू तेरे अमृत है।

ये आँसू मत बहा
ये आँसू तेरे अमृत है,
मेरी सुंदर भोली सी माँ,
ये आँसू तेरे अमृत है।।

इन मार्मिक पंक्तियों का रचयिता ज्योतिर्मय मात्र 15 की अल्पायु में ही दुनिया को छोड़ चला। ज्योतिर्मय रायबरेली के शुक्ल परिवार का अपनी पीढ़ी का सबसे पहला रत्न था। इसके पितामह स्व. पं प्रेम शंकर जी शुक्ल कानपुर में न्यायाधीश रहे और इनके पिता स्व पं गोकरण नाथ जी सप्लाई विभाग के उच्चाधिकारी थे। यह बाल्यकाल से ही बहुत मेधावी और विनयशील था। पीढ़ी का सबसे पहला बेटा होने के कारण सभी को बहुत प्यारा था। कानपुर के प्रसिद्ध बी एन एस डी कालेज से यह हाईस्कूल की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। इसके टीचर्स मानते थे कि ज्योतिर्मय यू पी बोर्ड की मेरिट में आने की योग्यता रखता था। इसलिए इसके अध्यापकों ने नियमित कक्षाओं के अलावा इसको स्पेशल कोचिंग ग्रुप में रखा था। स्कूल की वादविवाद प्रतियोगिता और कविता लेखन में यह कक्षा 8 से ही पुरस्कृत हुआ। किन्तु विधि की विडम्बना है कि अति मेधावी छात्र अधिकतर अल्पायु ही होते हैं। विनयशील ज्योतिर्मय प्रभु के इस विधान से अलग रह सका। शहर में फैला वाइरल प्रकोप से ज्योतिर्मय बच न सका। अध्ययन को समर्पित ज्योतिर्मय को क्लासेज छोड़ चारपाई पर लेटना बिलकुल नहीं भाया। और अपने पिता के साथ स्कूल जाने के रास्ते में ही एकाएक हालत बिगड़ गई। और मांत्र कुछ ही घंटों में अच्छे से अच्छे इलाज के बावजूद जो स्वयं ज्योतिर्मय था बुझ गया। और माता पिता व सारे परिवार के लिए शोक दे गया। ऐसे कुलदीपक बुझने के बाद भी कुल का नाम रोशन कर जाते हैं।

ज्योतिर्मय की रचित कविताओं को पुस्तक रूप देकर छपाने का प्रयास किया जा रहा है।

समस्त शोकाकुल शुक्ल परिवार

स्व पं प्रेम शंकर जी
पितामह

स्व पं गोकरण नाथ जी
पिता

मुझे जाने–मैं आपका कान

मैं कान हूँ–

कान पाँच ज्ञानेन्द्रियों में एक है। इससे हमें सुनने की शक्ति मिलती मिलती है। सुनने के अलावा कान, संतुलन और शरीर के स्थिति बोध में सहायक होता है।

कान के सहारे हम सुन सकते हैं अतः इसे 'श्रोत्रम्' कहते हैं। प्राचीन काल में जब 'लिपि' का आविष्कार नहीं हुआ था उस समय मानव कानों से सुनकर वेदों का अध्ययन और मनन करता था। अतः कानो (श्रोत्र) द्वारा ग्रहण किए गए वेद, श्रुति कहलाए। कान को हम तीन भागों में विभाजित करते हैं।

बाह्य कान या External Ear की रचना

1– बाह्य कान या External Ear-

यह चेहरे के दोनों ओर स्थित एक कीप आकृति की संरचना है। इसको तीन भागों में बांटा जाता है–

अ– बाहर की ओर कीप के चौड़े भाग सी उपास्थि की संरचना जिसे 'कर्ण' अथवा अंग्रेजी में 'Pinna' कहा जाता है। यह कीप की भांति वातावरण से ध्वनि तरंगो को संग्रहित कर कान के पर्दे की ओर भेजने का कार्य करता है। पिन्ना के अंदरूनी हिस्से में उतार चढ़ाव दिखाई पड़ेगा। यह विशिष्ट संरचना ध्वनि तरंगे हमारे कान में विभिन्न कोण से प्रवेश करा कर हमे ध्वनि आने की दिशा का भान कराती हैं।

आ– कीप के आकार के पिन्ना से अंदर की ओर एक नली के भांति की रचना जो ध्वनि तरंगो को कान के पर्दे तक ले जाती है। इसकी खाल की ग्रंथियों से एक मोम जैसा स्राव होता है। यह चिपचिपा पदार्थ धूल और बैक्टीरिया को अपने में चिपका कर कान में प्रवेश करने से रोकता है। इस नली आकार की रचना को "बाह्य श्रवण नलिका' या 'External Auditory Canal' कहते हैं। यह श्रवण नालिका करोटि (skull) के अंदर जा कर कान के पर्दे पर समाप्त होती है। इसका बाहरी हिस्सा उपास्थि और अंदरूनी हिस्सा skull की हड्डी का बना होता।

इ– Tympanic membrane या कान का परदा :–यह बाह्य कान और बाह्य श्रवण नलिका की अंतिम सीमा है। बाह्य कान द्वारा ध्वनि तरंगे संग्रहीत

हो कर कान के परदे पर टकरा कर कंपन पैदा करती हैं। यह कंपन मिडिल इयर के माध्यम से आंतरिक कान को पहुँचाए जाते हैं। कान के परदे के बाद मिडिल इयर अथवा मध्य कर्ण गुहा प्रारम्भ होती है।

ई– मध्य कर्ण गुहा या Middle Ear

मध्य कर्ण गुहा करोटि या स्कल (skull) की टेम्पोरल हड्डी के भीतर स्थित होता है। यह कान के पर्दे और आंतरिक कान के बीच में सिर की टेम्पोरल हड्डी के अंदर हवा से भरी एक कैविटी या गुहा होती है। इस कैविटी को टिंपैनिक गुहा भी कहते हैं। इसके नीचे के हिस्से से पतली नली गले तक जाती है, जिसे आडिटरी ट्यूब कहते हैं।

आडिटरी ट्यूब– यह मिडिल ईयर को गले से जोड़ती है, जिससे मिडिल ईयर में एकत्रित द्रव गले में ड्रेन हो जाए। इसके साथ ही यह मिडिल ईयर और बाहरी वातावरण के दबाव को संतुलित करने में सहायक होती है।

मिडिल इअर में तीन बहुत छोटी छोटी हड्डियाँ एक क्रम से व्यवस्थित होती हैं। यह एक ओर कान के पर्दे या टिंपैनिक मेम्ब्रेन और दूसरी ओर आंतरिक कान से जुड़ी होती है। यह तीनों हड्डियाँ एक संयोजक या कप्लिंग की तरह कान के पर्दे पर पड़ती ध्वनि तरंगो को मैग्निफाई या परिवर्धित कर आंतरिक कान में भरे द्रव को आंदोलित कर देतीं हैं।

यह हड्डियाँ क्रमशः मैलियस, इंकस और स्टेपीज कहलाती हैं। यह तीनों हड्डियाँ मानव शरीर की सूक्ष्मतम हड्डियाँ हैं।

आंतरिक कान में–

ओवल विंडो– (अंडाकार खिड़की) होती जिससे आंतरिक कान मिडिल ईयर के संपर्क में रहता है

सेमीसर्कुलर नलिकायें– विशेष प्रकार के द्रव से भरी अर्धवृत्ताकार नलिकाएं (सेमी– सर्कुलर कैनाल)। यह नलिकाएं काक्लिया और आडिटरी नर्व तक ध्वनि संकेत पहुँचाती हैं। आडिटरी नर्व से ध्वनि संकेत मस्तिष्क तक पहुँचते है, जिससे हम ध्वनि सुन और समझ पाते हैं।

काक्लिया– यह एक घुमावदार कुंडलीनुमा भाग होता है जो ध्वनि तरंगों को संकेत रूप में आडिटरी नर्व के द्वारा मस्तिष्क को प्रेषित करती है।

आडिटरी नर्व– यह काक्लिया से ध्वनि संकेतों को मस्तिष्क तक पहुँचाती है, जिससे हम ध्वनि सुन और समझ सकें।

कानों द्वारा सुनने की प्रक्रिया– वातावरण की ध्वनि तरंगे कीप या कर्णपाली से आवाज की तरंगें इकट्ठी करके कान के पर्दे तक पहुँचाती है। इससे कान के पर्दे में कम्पन होता है। कान के पर्दे का यह कंपन मिडिल इयर की तीन छोटी छोटी हड्डियाँ जो इस क्रम से संयोजित होती है, कि ध्वनि तरंगें जैसी की तैसी आंतरिक इयर तक पहुँच जाती हैं। आंतरिक इयर की सेमीसर्कुलर कैनाल में द्रव भरा रहता है। यह द्रव आवाज के कम्पनों को तंत्रिकाओं के संकेतों (नर्व–इंपल्स) में बदल देती है। ये संकेत आठवीं मस्तिष्क तंत्रिका द्वारा दिमाग तक पहुँचाती है। आन्तरकर्ण अंदरूनी केशनुमा संरचनाएँ आवाज की तरंगों की आवृति के अनुसार कम्पित होती हैं।

आवाज सुनने की प्रक्रिया– आवाज की तरंगों को किस तरह अलग–अलग किया जाता है यह समझना बहुत ही मजेदार है। आन्तर कर्ण (लैबरिंथ) में स्थित पट्टियों का संरचना हारमोनियम जैसे अलग–अलग तरह से कम्पित होती हैं।

यानि आवाज की तरंगों की किसी एक आवृत्ति से कोई एक पट्टी कम्पित होगी। और दिमाग इसे एक खास स्वर की तरह समझ लेता है।

जन्म से बहरे बच्चों में आंतरिक कान का काक्लीय हिस्सा नहीं होता है। आवाज न सुन पाने के कारण यह बच्चे बोल भी नहीं पाते। अब कृत्रिम काक्लीया सर्जरी के माध्यम से सीधे मस्तिष्क के सुनने वाले भाग में आरोपित कर दिया जाता है, जिससे बच्चा सुन और बोल भी सकते हैं

संतुलन– कान की सेमीसर्कुलर कैनाल और काक्लिया के बीच वेस्टिब्यूलर हिस्से में यूट्रकिल और सैक्यूला नाम के दो सूक्ष्म अंग होते हैं। यह अंग शरीर की क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर (हारीजैंटल, और वरटिकल) गति की जानकारी देते हैं। इन अंगों के संक्रमण से मनुष्य जो चक्कर आने लगते है। इस बीमारी को वर्टाइगो कहते हैं।

कान की संरचना

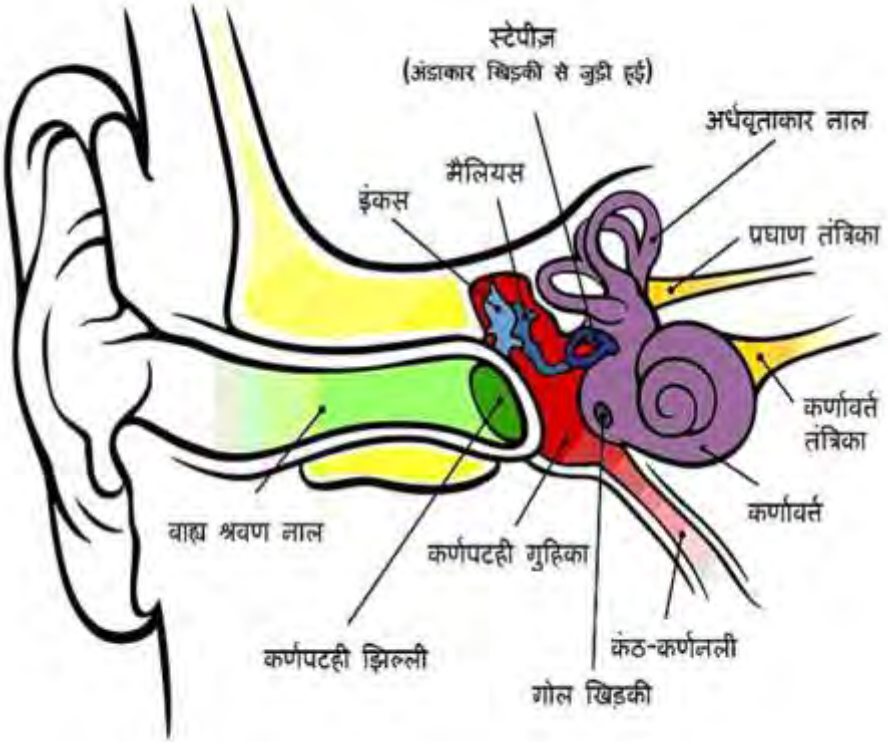
स्टेपीज़
(अंडाकार खिड़की से जुड़ी हुई)
अर्धवृत्ताकार नाल
मैलियस
इंकस
प्रघाण तंत्रिका
कर्णावर्त तंत्रिका
कर्णावर्त
बाह्य श्रवण नाल
कर्णपटही गुहिका
कर्णपटही झिल्ली
कंठ-कर्णनली
गोल खिड़की

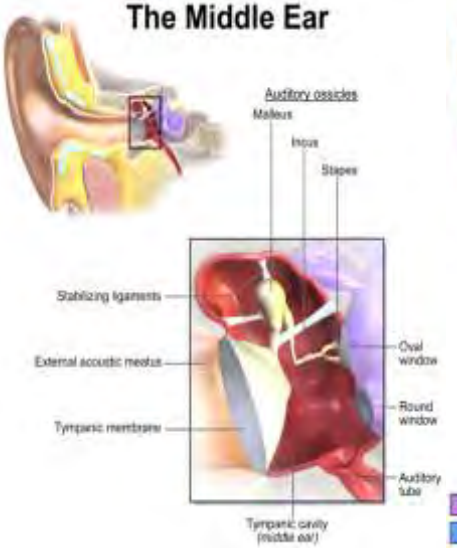
The Middle Ear
Auditory ossicles
Malleus
Incus
Stapes
Stabilizing ligaments
External acoustic meatus
Tympanic membrane
Oval window
Round window
Auditory tube
Tympanic cavity (middle ear)

The Internal Ear
Cristae within ampullae
Semicircular ducts
Anterior
Lateral
Posterior
Utricle
Saccule
Vestibulocochlear nerve
Vestibular duct
Cochlear duct
Tympanic duct
Cochlea
Bony labyrinth
Membranous labyrinth

मेघदूत

बालों से हो जाये प्यार

Shine & Silky

सत्रीठा व हर्बल पाउडर

रूसी-खुश्की, बालों का झड़ना, टटना, गिरना और दोमुहे बालों की समस्याओं में विशेष गुणकारी औषधि।

AVAILABLE ON: amazon Flipkart Paytm mall 1mg

Helpline: 9235623142 I www.meghdootherbal.com I email: info@meghdootherbal.com